॥ श्रीः ॥

भजनसागरकी विषयानुक्रमणिका.

विषयानुक्रमणिका.

इति अनुक्रमणिका समाप्त.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

'लक्ष्मीवेंकटेश्वर' छापाखाना ;

कल्याण--मुंबई.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

पुष्करदासकृत-

भजनसागर.

प्रभाती—रामकली—दरसन मोहिं देहु प्रात। रामकृष्ण प्यारे ॥ टेक ॥ होत प्रात उदित भान। सुर नर मुनि धरत ध्यान ॥ नारद मुनि करत गान। वेद ब्रह्माने पुकारे ॥ १ ॥ भक्तन हित करत हेत। धरत रूप हे अनेक ॥ दुष्टन दलि मलि विदार। संतन हितकारे ॥ २ ॥ स्याम रूप हय सरूप। देखत भे छकृत भूप ॥ महिमा त्रिभुअन अपार। याको नहि पारे ॥ ३ ॥ भूपन सब अंग धार। अवध भुंम वृज औतार ॥ पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारे ॥ ४ ॥

जागो श्रीअवधराज। राखो लाज मेरी ॥ टेक ॥ उदित भान भे प्रकास। सुर नर मुनि लाय आस ॥ राखत चरननकी वास। पावत पद ढेरी ॥ १ ॥ राखो प्रभू दीन जान। जग वडाई हीन मान ॥ पुस्करदास मागत वर। चरनन पदकेरी ॥ २ ॥

जागो त्रिभुअन किसोर। वनसोर करत पच्छी ॥ टेक ॥ होत भोर बोलत मोर। दद्दुर अति करत सोर ॥ चकई चकवा चकोर। गुनत ज्ञान अच्छी ॥ १ ॥ होत भोर जगमें सोर। कृष्णनाम नंदकिसोर ॥ सुर नर मुनि पिअत घोर। हृदे कमल अच्छी ॥ २ ॥ होत भोर वृजमें सोर। गोपी ग्वाल नंदकिसोर ॥ चरनकमल हृदे मोर। मोहत मन अच्छी ॥ ३ ॥ होत

भोर उठि किसोर। जात हे कालिंदी वोर॥ पुस्करदास चरन आस। मुक्त देत अच्छी॥ ४॥

दरसन मोहिं देहु प्रात। नंदके दुलारे॥ टेक॥ देवकी गर्भ जन्म लिवो। जसोदासुत प्यारे॥ पूतना पिसाचिनीको। छीर पिअत मारे॥ १॥ मारो सुर बकाअसुर। जीभ चोच फारे॥ कुव्यापी लपटकि भुंमि। दंतको उखारे॥ २॥ मालन संघ जुद्ध किवो। सबनको पछारे॥ कंसको विधंस किवो। झटकि केस मारे॥ ३॥ कृष्णऔतार लिवो। दुष्ट मारि छार किवो॥ पुस्करदास कहे पुकार। चरनन बलिहारे॥ ४॥

जागो औधेस कुअर। बोलत वन पच्छी॥टेक॥ होत प्रात उदित भान। सुर नर मुनि धरत ध्यान॥ संत जन करत गान। गावत गुन अच्छी॥१॥ जागे चारो सुजान। शंकर उर हृदे ध्यान॥ भक्तनको राखे मान। दीजे वर अच्छी॥२॥ सरजूजल नृमल नीर। जुगल चार गये तीर॥ मंजन करि विमल अंग। इष्ट देव साच्छी॥३॥ पुस्करदास अति आनंद। निरखि रूप मगन संत॥ चित्त हे चरनारविंद। मुक्त देत अच्छी॥४॥

वरनो छवि अंग अंग। संकर वं भोला॥ टेक॥ अति अनूप सीस जटा। व्यालो सब लपटि लटी॥ श्रीगंगाजी भूलि जटा। द्वादस त्रप डोला॥१॥ छवि ललाट चंद्र भाल। सोभित छवि खौर लाल॥ कानन कुंडल फनन व्याल। लटकि लटकि डोला॥ २॥ मुंडनकी कंठ माल। भुजनपर कराल व्याल॥ येके करमें धरि त्रिसूल। दूजे डमरू बोला॥ ३॥ अंगहूमें

भस्म लाय। व्यालको कोपीन जाय॥ बैठे वाघंमर सिउ। वोढे मृगछोला॥ ४ ॥ पुस्करदास अति अनंद। गौरी अरधंग संघ॥ नंदी सुर वाहन। कैलास सिखर डोला ॥ ५ ॥

वरनो छवि अंग अंग। श्रीपति रघुराई ॥ टेक ॥ क्रीट मुकट सीस धार। सोभित छवि अति उदार॥ कानन कुंडल जगमगात। भानचंद्र मॉहीं ॥ १॥ छवि ललाट तिलक भाल। मानो रवि प्रातकाल ॥ नयननकी निरखि कोर। चितवत चित जाई ॥ २ ॥ वेसर लटकत अनंद। निरखिके मुखारविंद ॥ येक मुखको महिमा सेस। सहसमुखन गाई ॥ ३ ॥ मुक्तन गले कंठ माल। जणे चुंनी हीरा लाल॥ मोतिनको गुंजहार। हिआसो लटकाई ॥ ४॥ जोसन भुजडंड डार। कनिककणा करमें धार॥ करमें धरे धनुष वान। जेहि लागत जिअ जाई ॥ ५ ॥ कछनी काछे गॅभीर। वोढे हे वसंती चीर॥ नूपुरकी मंद ताल। सरजूतीर जाई ॥ ६ ॥ सोभित छवि अति अनूप। भक्त संत निरखि रूप॥ सोभा सुखसागर गुन। आगर कहि जाई॥७॥ पुस्करदास अति अधीन। कीनो चित चरन लीन॥ दसरथके नंदन सुत। चारही सोहाई ॥८॥

भजि ले मन रामनाम। छूटे दुखदाई ॥ टेक ॥ काया तुम नृमल पाय। भूलो क्या भाई॥ कोटि कोटि जतन करिके। मानुखतन पाई ॥ १ ॥ वादा तुम करिके आय। चरननगुन गावों जाय ॥ जगमें आय भूलि गये। माया लपटाई ॥ २ ॥ झूटी जग माया हे। झूटी जग काया हे ॥ जैसे जलवुल्ला पल-

दे। देखतमें जाई ॥ ३॥ पुष्करदास कहे पुकार। सुनि ले मन वारवार॥ जीती वाजी काहे हार। फिरि फिरि पछिताई॥४॥

प्रभाती–काहे ना मन राम तू भजि ले। जगमें यह सुख ढेरी॥ टेक॥ क्या भटको पटको सिर अपना। करो चाकरी चेरी॥ राम धनीके क्याह कमी हे। जो चहो सो लेरी ॥ १ ॥ हो चाकर चित राखु राम पर। चार पदारथ लेरी॥ पुरकरदास आस मति छायो। रहो चरनकी चेरी॥ २॥

प्रभाती–रामकली–जागो जिआ जानकीरमण। भवन भोर प्यारे ॥ टेक॥वाटके वटोही चलत। पच्छी उडि जारी॥ तोरत त्रिन गउअन। वन जाय जाय न्यारे॥ १ ॥ उदित भान भे प्रकास। सुर नर मुनि लाये आस ॥ नृमल नीर सरजूजी। वहत वेग धारे ॥ २ ॥ उठिके करुनानिधान। सरजू जल कर असनान॥नित कृपा पूजा ध्यान। करत राम रावरो॥ ३ ॥ पुस्करदास अति आनंद। निरखि रूप मगन संत॥ चित्त हे चरनारविंद। तन मन धनवारे॥ ४ ॥

भोर भवन सोर होत। जागे रघुराई॥ टेक॥ होत प्रात उदित भान। सुर नर मुनि धरत ध्यान॥नारदमुनि करत गान। वीनको वजाई॥ १ ॥ लछिमन कर चवर लिये। झरी भरथ भाई॥ सत्रवुन सव अंग झर। गोद लेत माई ॥२॥नृमल नीर सरजूजल। धोवन मुख जाई॥चोवा चंदन अरगजा। सव अंगमें लगाई ॥ ३॥ करि असनान विमल अंग। निरखि रूप मगन संत॥ पुरकरदास चरन अधीन। सुंदर सुखदाई॥४॥

हे रे मन मान कहा। रटहु राम नाम॥ टेक॥ रामनाम रटो रटो। जमपुर नहि काम॥ पावो पद अमर लोक। सुरपुर निज धाम॥ १॥ भक्तन भौ हरे भीर। मेटे वो तनकी पीर॥ पुस्करदास आस राम। तजि दे सब काम॥ २॥

प्रभाती—हे मन जानकीजीवन भजि ले। महिमा अगम अपारा॥ टेक॥ सुर नर मुनि थको ध्यान धरत हय। ब्रह्मा वेद पुकारा॥ याकी महिमा चौदा भुअनमें। चहु दिस जोत अपारा॥ १॥ दुष्टदलन संतनहितकारी। दसो रूप औतारा॥ नाम अनंत अंत नहि याको। पुस्करदास पुकारा॥२॥

भोर होत उठि सोर करो मन। रामहि कृष्ण पुकारो॥ टेक॥ लख चौरासी भरमि भरमिके। मानुखतन औतारो॥ यह काया माया मति भूलो। जीती बाजी हारो॥ १॥ यह भौसाग अगम नीर भरो। टूटी नैआ सँभारो॥ वे गुन नाव पार नहि लागे। नही बूडे मझे धारो॥ २॥ याको जपे सुर सेस महेसहि। ब्रह्मा वेद पुकारो॥ योगी जती मौन संन्यासी। भक्तनको भे टारो॥ ३॥ दिना चारकी रही चांदनी। फिर पीछे अँधिआरो॥ पुस्करदास आस रघुवरके। ध्यान चरनपर डारो॥ ४॥

प्रभाती—रामकली—जागो उठि प्रातसमे। रामकृष्ण प्यारे॥ टेक॥ उदित भान भोर जान। सुर नर मुनि धरत ध्यान॥ शंकर उठि करत गान। नामको तेहरे॥ १॥ शेष जपत सहसफनन। सहस नाम न्यारे॥ ब्रह्मा कहि महिमा

मुख । वेदको पुकारे ॥ २ ॥ चौदा भुअननमें प्रकास । जोत हे उजारे ॥ दुष्टनको दलि मलिभे । भक्तन हितकारे ॥ ३ ॥ नाम रूप हय अनंत । वार नहीं पारे ॥ पुस्करदास चरन अधीन । तन मन धन वारे ॥ ४ ॥

सुनिये करुनानिधान । स्रवन सुनो मेरी ॥ टेक ॥ तजिके त्रिआ मात पिता । माया बहु तेरी ॥ लागी आस चरननकी । करि हो नहि देरी ॥ १ ॥ कोट पतित तारे जान । सुर नर मुनि धरत ध्यान ॥ वेद ब्रह्मा करि बखान । गावत गुण तेरी ॥ २ ॥ महिमा चहु दिस अपार । सूझे नहि वार पार ॥ वार वार सुनु पुकार । पुस्करदास केरी ॥ ३ ॥

भजि ले रघुवंशवीर । हरे पीर तेरी ॥ टेक ॥ सागर करुना-निधान । जानत सबही जहान ॥ सुर नर मुनि धरत ध्यान । वेद ब्रह्मा टेरी ॥ १ ॥ महिमा जगमें अपार । याको नहीं वार पार ॥ दुष्टन दलि मलि विदार । लावत नहि देरी ॥ २ ॥ भक्तन हित करत हेत । धरत रूप हे अनेक ॥ याको जो भावे सो । पावे बहुतेरी ॥ ३ ॥ नाम रूप हय अनंत । शेष नहीं पावे अंत ॥ पुस्करदास कहे पुकार । ध्यान चरन देरी ॥ ४ ॥

जागो भोर नंदकिसोर । राधेरवन स्वामी ॥ टेक ॥ सुर नर मुनि धरत ध्यान । ब्रम्हा वेद करि बखान ॥ भक्त जनन करत गान । जोगी जुगजामी ॥ १ ॥ महिमा त्रिभुअ पार । याको नहिं वार पार ॥ शेष सहसफनन रटत । लेत सहस नामी ॥ २ ॥ संतन हित करत हेत । रूप धरत हे अ-

नेक ॥ दुष्टन पलमें विदार। पतित परम धामी ॥ ३ ॥ पुस्करदास अति आनंद। निरखि रूप मगन संत ॥ चित्त हे चरणारवृंद। दरस देहु रामी ॥ ४ ॥

दरसन मोहि देहु प्रात। अवध प्राण प्यारे ॥ टेक ॥ जनकजज्ञ कठिन कीन। धनुसको प्रचारे ॥ भूपरूप भे मलीन। सिआ जे माल डारे ॥ १ ॥ कीनो वेर वाल भाल। हरिदासने पुकारे ॥ त्रिन धरिके वोट चोट। वानन हतिडारे ॥ २ ॥ कीनो गर्भ सागर जल। खारा करि डारे ॥ सेत वांधि सेना उतरि। लंकामें हंक मारे ॥३॥ मारो जाइ रावनको। निसचर संघारे ॥ पुस्करदास दरस आस। चरनन वलिहारे ॥ ४ ॥

जागो वृजनंदकिसोर। भोर होत प्यारे ॥ टेक ॥ जमुनाजल झारी भरे। जसोदा लिये ठाढे॥ उठहु लाल प्रानप्यार। ग्वाल सव पुकारे ॥ १ ॥ नयननसे नींद गई उठिके हहकारे॥धाय मात गोद लेत। अंगसो दुलारे ॥२॥ माखन मिसरी वोकंद। धरे भोग न्यारे ॥ रुचि रुचि प्रभु चाखि चाखि। अचमन करि डारे॥३॥ ग्वाल वाल हो निहाल। गउअनसँघ धारे॥पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारे॥४

जागो रघुवंस वीर। हरो पीर मेरी ॥ टेक ॥ होत प्रात उदित भान। सुर नर मुनि धरत ध्यान॥ वेद ब्रह्मा करी वखान। गावत गुन तेरी ॥ १ ॥ दुरजन दलि मलि विदार। भक्तन सुख दिवो अपार ॥ पुस्करदास कहे पुकार। चरनन गुनकेरी ॥ २ ॥

कृष्णचंदकमापति। जदुपति हित कारी ॥ टेक ॥ ब्रजमें प्रभू प्रगटे आय । गोपी ग्वाल संघ जाय ॥ वासवंसी सुख बजाय । गउअन संघ धारी ॥ १ ॥ अकावकाअसुर मारि। गजको पटकि भुंमि डारि ॥ मालनको दलि मलिके । कंसको पछारी ॥ २ ॥ ब्रजमें कोप करी इंद्र । कीनो जल भारी ॥ ग्वाल बाल सरन जाय । नखपर गिर धारी ॥३॥ महिमा कवि कहि न जाय । ब्रह्मा वेद मुखसो गाय ॥ पुस्करदास चरन अधीन । तन मन धन वारी ॥ ४ ॥

प्रभाती–भजु मन सियावरको सुख साँचो। भजु मन सिआवरको रे ॥ टेक ॥ याको भजे लगे नहि आचो। कोटिन विघन टरो रे ॥ याको भंजहि सदासिउ ब्रह्मा । नारद वीन बजो रे॥१॥याको जपे सुर नर मुनि गंधर्व ।सेस सहसफनको रे॥पुस्करदास आस करो हरीसे। चरनन ध्यान करो रे॥२॥

प्रातसमे उठिके त्रिभुअनधनी। सोवत जक्त जगावे॥ टेक ॥ सुर नर मुनि याको ध्यान धरत हे । ब्रह्मा वेद जस गावे॥ याको जब नअहार महाप्रभू। ताको तव न पठावे॥१॥ लख चौरासी जीव जंत सब । विमल सुजस गुन गावे ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे । ध्यान चरनपर लावे ॥ २ ॥

प्रभाती–रामकली–दरसन मोहि देहु प्रात । श्रीमाधो राजधानी ॥ टेक ॥ श्रीप्रागराज आस पास । सुर नर मुनि करत वास ॥ निकट संत करि निवास । प्रगट गुप्त ध्यानी॥ ॥ १ ॥ श्रीगंगजमुनाकी धार। सरस्वती महिमा अपार॥

तीन लोक छवि तरंग । वेदहू वखानी ॥ २ ॥ पुस्करदास प्रागवास । दरसनके हेत काज ॥ चित्त हय चरणारविंद । मुक्तकी निसानी ॥ ३ ॥

दरसन दे प्रातसमें । श्रीगंगा महरानी ॥ टेक ॥ विष्णु चरण निकरी धार । शंकरने सीस धार ॥ गांडीरिष जांघ फार । अयसे वलवानी ॥१॥ भागीरथी भक्त जान । कीनो तप धरो ध्यान ॥ अधमन करने उधार । मृत्युलोक आनी ॥ २ ॥ गौमुखसे वहत धार । हरकी पैरी हरद्वार॥तीरथमें प्रागराज । वेदहू वखानी ॥ ३ ॥ पुस्करदास प्रागराज । दरसनके हेत काज ॥ चित्त हे चरणारविंद । मुक्तकी निसानी ॥ ४ ॥

दरसन मोहि देहु प्रात । श्रीजमुना महरानी॥ टेक ॥होत प्रात उदित भान । सुर नर मुनि धरत ध्यान ॥ नंदके कुमार कृष्ण । याको पटरानी ॥ १ ॥ लीजो वर मुक्तकाज । दीजो जमलोकराज ॥ कार्तिक प्रात करि असनान । जमपुर नहिं जानी ॥ २ ॥ गोपिनसो अधिक प्रीत । पूजन करि वेद रीत ॥ छवि तरंग निरमल रूप । गुन गावत हरखानी ॥३॥ पुस्करदास अतिआनंद । निर्मल चित्त धोय अंग ॥ चित्त हय चरणारविंद । मुक्तकी निसानी ॥ ४ ॥

जागो भे भोर भवन । दशरथके नंदन ॥ टेक ॥ होत प्रात उदित भान । सुर नर मुनि धरत ध्यान ॥ संत जनन करत गान । आनंद मन कंदन ॥१॥ भक्तनहित हेत करत । काटत जमफंदन.॥ पुस्करदास राम आस । चरनन रजवंदन ॥ २ ॥

राधेपति कृष्णचंद्र। जदुपति जदुराई ॥ टेक ॥ देवकी गर्भ जन्म लीन। जसोमति सुख पाई ॥ नंदके दुलार प्यार। गउअन संग धाई॥१॥ घर घर दधि माखन।मुख चाखनको जाई ॥ लेत दान गलिनमान। सुंदर सुख दाई ॥२॥ इंद्र कोप कीन वृजमें। दीन जल वहाई ॥ ग्वाल बाल सरन गये। गिरवर नख छाई ॥ ३ ॥ कंस झटकि पटकि भुंमि। गरदमें मिलाई ॥ पुस्करदास चरन अधीन। देखत दुख जाई ॥ ४ ॥

दरसन मोहि देहु प्रात। भक्तन हितकारी ॥ टेक ॥ अवधभुंम जन्म लीन। दसरथके प्यारे ॥ सुर नर मुनि धरत ध्यान। ब्रम्हा विधि का रे ॥ १ ॥ स्राप सिला नार भई। चरनन रज तारे ॥ मेटि सोक सिआ हिआ। धनुस तोरि डारे ॥ ॥ २ ॥ देवनको वंद काटि। निसचर संघारे ॥ पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारे ॥ ३ ॥

सुमिरो सिआ रामचरन। ध्यान हृदे लाई ॥ टेक ॥ सुंदर तन पाय रूप। भूलो मति भाई॥ काम क्रोध लोभ मोह। तजि दे सव जाई॥१॥ याको सुर नर मुनि सब। ध्यानको लगाई॥ शेष सहसफनन रटे। ब्रह्मा वेद गाई ॥ २ ॥ रटत नाम धू प्रहलाद। अचल राज पाई ॥ सूखो कवीरदास। तुलसी जस छाई ॥ ३ ॥ भे अनेक भक्त जान। कहाँलो में करो वखान ॥ पुस्करदास कहे पुकार। गोविंदगुन गाई ॥ ४ ॥

प्रभाती—मात जसोदा कृष्ण जगावे। जागो लाल हमारे ॥ टेक ॥ पसु पंछी पग चलत बटोही। लागत लोही प्यारे ॥

ग्वाल वाल सव द्वार पुकारे। ले ले नाम तेहारे ॥ १ ॥ चौंकि उठे ठाकुर कमलापति। जसोदा अंचल मुख झारे ॥ निर्मल नीर भरे झारीमें। बलदाउ लिये ठाढे ॥ २ ॥ कलाकंद वोकंद जलेवी। माखन मिसिरी न्यारे ॥ रुचिरुचिके हरी वालभोग करि। गउअन वन संघ सिधारे ॥ ३॥ धंन धंन वृज ग्वाल बाल सब। धंन गउअन वन जारे ॥ पुस्करदास आस जदुवरके ध्यान चरनपर डारे ॥ ४ ॥

प्राननाथ रघुनाथ हमारे। चरनकमल वलिहारे ॥ टेक ॥ धनुस कटिन प्रन कीवो जनकजू। धनुस खंड करि डारे ॥ वैठे भूप भे रूप मलीनाहिं। सिआ जयमाल गले डारे ॥ १ ॥ वेर किहो हरिजनसे वालहि। त्रिन धरि वोटहि मारे ॥ रतनागर सागर गर्भ कीनो। जल खारा करि डारे ॥ २ ॥ कीनो वैर दसानन हरीसे। सिआ हरि लीनो वारे ॥ सेत वांधि प्रभु कटक उतारे। निशिचरकुल संघारे ॥३॥ देवन वंद छोडावन कारन। रामरूप औतारे ॥ पुस्करदास आस रघुवरके। जीवनप्रान हमारे ॥ ४ ॥

प्रभाती—रामकली—सुंदर सुख रामकृष्ण। अवध वृज विहारी ॥ टेक ॥ राम सीस क्रीट मुकट। कुंडल छवि न्यारी ॥ स्याम सीस मोर मुकुट। मुरली अधर धारी ॥ १ ॥ राम गले माल मनिन। मोतिन लर न्यारी ॥ लागत पुआ स्याम सुंदर। गले वनमाल डारी ॥२॥ रामकरमें धनुस वान। वैरीमुख फारी ॥ स्यामकरमें संख चक्र। गदा पदुम धारी ॥ ३ ॥ पुस्कर-

दास रामचरन। हरत ताप सारी ॥ कमलापति कृष्णचंद। चरनन बलिहारी ॥ ४ ॥

सुमिरो श्रीरामकृष्ण। हरत ताप तेरी ॥ टेक ॥ सुमिरत प्रह्लाद जान। रटत राम राम नाम ॥ पूरन सब होत काम। पाये पद ढेरी ॥ १ ॥ सुमिरत द्रोपती सभा। चीर हेर घेरी ॥ खैचत भुज थाके बल। बैठे सभा मेरी ॥ २ ॥ पंच्छी जब टेरी नाम। सुनिके करुना निधान ॥ घंट तोरि महिमें डार। सँभर जुरी भेरी ॥ ३ ॥ याको चरननकी आस। वाके प्रभु रहत पास ॥ पुस्करदास राम आस। दूजो नहीं केरी ॥ ४ ॥

रामनाम जपो रे मन। जीवन जग थोरी ॥ टेक ॥ खडो काल अतिकराल। सीस छत्र फेरी॥झपटि लपटि तोहि धरे। सुनत नाहिं तोरी ॥ १ ॥ करत न सहाय जाय। मात पित जोरी ॥ करत हाय हाय हाय। सुनु रे सुत मोरी ॥ २ ॥ जीवन जग वृथ खोय। पेट भरिके गये सोय॥अंतसमें जात रोय। छूटत सब मोरी ॥ ३ ॥ सुमिरन बिन खोये जात। कछु न तेरे लगे हाथ ॥ पुस्करदास कहे पुकार। ऐसे हाल होरी ॥ ४ ॥

राजा रनछोडराय। रानी श्रीराधा ॥ टेक ॥ सुर नर मुनि धरत ध्यान। वेद ब्रह्मा करि बखान॥ नारद मुनि करत गान। हरत तनकी बाधा ॥१॥ योगीजन करत जाप। तनकी जात त्रिविध ताप ॥ रटत शेस सहसफनन। मन महेस साधा॥ ॥ २ ॥ भक्तन हित करत हेत। धरत रूप हे अनेक ॥ दुष्टन दलि मलि विदार। फारो मुख आधा ॥ ३ ॥ श्रीद्वारिकामें

राज करत। जोत जग विराजा ॥ पुस्करदास चरन अधीन नाम कृष्णराधा ॥ ४ ॥

श्रीबद्री विसाल लाल। खबर ले हमारी ॥ टेक ॥ ब्रह्मा शिव ध्यान धरत। करत आस भारी ॥ शेश वो महेस रटत। सारदा पुकारी ॥ १ ॥ योगीजन जाप करत। स्वास सीर्स डारी ॥ नारद् गुन गाइ गाइ। बीन करमें धारी ॥२॥ सुर नर मुनि चरन सेइ। लेत भक्त भारी ॥ किंनर गंधर्व आदि। निर-तत छबि वारी ॥ ३ ॥ उत्रा खंड वन विसाल। गिर अनेक हय रसाल॥ पुस्करदास दरस आस। ध्यान चरन डारी॥४॥

सुनु री सखी स्याम सुंदर। अजहू नहिं आये ॥ टेक ॥ आये रितु पावस घन। बादर गहराये ॥ बोलत मोर करत सोर। जिआको डर पाये ॥१॥ दामिन दमकत हे जोर। पवन चलत हे झकोर ॥ तलफ तपी विनजी मोर। विजुली चमकि जाये ॥ २ ॥ वे रन कुबजा हे मोर। याके वस भे किसोर ॥ कवन जनत करूं री सखी। द्वारिकामें जाये ॥ ३ ॥ तलफत दिन रेन चेन। ना सोहाय काहू वेन ॥ पुस्करदास दरस आस। चरनन चित लाये ॥ ४ ॥

देखो री सखी स्याम सीस। मोर मुकुट राजे ॥ टेक ॥ कान्नन कुंडल जगम गात। कोटि भान लाजे ॥ मुरली धरि अधर स्याम। गले वनमाल छाजे ॥ १ ॥ करमें सोहे संख चक्र। गदा पदम साजे ॥ वैरी बल विघन करत। देखत जम भाजे ॥२॥ कछनी काछे गंभीर। वोढे हय वसंतीचीर ॥

जामा जरकसी लसे। कोटि काम लाजे ॥ ३ ॥ पुस्करदास अतिआनंद। निरखि रूप मगन संत॥ घूघरघन घोर सोर। चरन कवल वाजे ॥ ४ ॥

चढिवे वान रामचंद्र। अवध देस आवत॥ टेक॥ रावनकुल वधन कीन। देवन सुख पावत ॥ भक्तराज दिवो जाय। संतन मनभावत॥ १ ॥ अनुजसंघ सिआसहित। सकलको सोहावत॥हनुमत कर चवर ढुरत। हरखित गुण गावत॥२॥ सुनिके अवधेस देस। देखनको धावत ॥ जय जय दसरथके लाल। सुमन दृष्टि लावत॥ ३ ॥ हरखित सब मात मुदित। कंठमें लगावत ॥ पुस्करदास आये शरण। ध्यान चरन लावत ॥ ४ ॥

जीवन जगप्राणअधार। जागो राम प्यारे ॥ टेक॥ होत प्रात उदित भान। सुर नर मुनि धरत ध्यान ॥ वेद ब्रम्हा करत गान। नामको तेहारे॥ १ ॥ लख चोरासी जीव जंत। घट घट वास तेरो अंस॥ पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारे ॥ २॥

प्रभाती—प्रातसमे उठि मात जसोदा। कृष्णहि कृष्ण पुकारो ॥ टेक॥ उठहु लाल भय भोर सोर जग। ले ले नाम तेहारो ॥ पसु पंच्छी वन चरन जात हे। गउअनके रखवारो ॥ १ ॥ उठ नाथ मम प्राननाथ पति। जसोदा मुख अंचल झारो॥ पुस्करदास आस जदुवरके। ग्वालसखा सब ठारो ॥ २ ॥

जसोदानंदन आनंदकंदन। संतनके हितकारो॥ टेक॥ सिउ ब्रम्हा नित ध्यान धरतु हे। वेद पढत उच्चारो॥ शेप सहसफन रटत निरंतर। अंतन पावत हारो॥१॥ योगी जती मौन संन्यासी। जप तप करि मन डारो॥ गान करत गंधर्व अपसरा। साज सजो सब न्यारो॥ २॥ दुरजन दलि मल गरद मिलाये। भुमिको भार उतारो॥ पुस्करदास आस जदुवरके। तन मन धन किनो वारो॥ ३॥

प्रभाती रामकली—खेलत दोऊ आंगनमें। नंदके दुलारे॥ टेक॥ येके कर स्याम पकणि। दूजो बलवारे॥ ठुमुकि ठुमुकि चलत चाल। लागत अति प्यारे॥ १॥ मोर मुकुट सीस धार। मुरली मुखपर सवार॥ लीनो हर मूसल। वलदाउ खडे न्यारे॥ २॥ कछनी काछे गंभीर। वोढे हय वसंती चीर॥ पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारे॥३॥

खेलत झुकि आंगनमें। जुगल चारो भाई॥ टेक॥ राम लखन भरथ सत्रघुन। दशरथ सुत पाई॥ मात मुदित करको पकणि। ठुमुकि ठुमुकि जाई॥ १॥ अतिआनंद निरखि संत। शोभा सुख छाई॥ पुरकरदास हे निहाल। चरनन चित लाई॥ २॥

जागो श्रीअवधराज। काजको सँभारो॥ टेक॥ होत प्रात उदित भान। सुर नर मुनि धरत ध्यान॥ वेद ब्रह्मा करि बखान। नामको तेहारो॥ १॥ लख चौरासी जीव जंत। जपत नाम न्यारो॥ दुरजन दलि मलि विदार। भार भुंम

उतारो ॥ २ ॥ भक्तन हित करि औतार। दशरथसुत प्यान प्यार ॥ प्यारी प्रुआ जानकी हे। जक्तमें उजारो ॥ ३ ॥ नाम रूप गुन अनंत। सेश नहीं पावे अंत ॥ पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारो ॥ ४ ॥

सुंदर श्रीराम स्याम। सोभा गुन भारी ॥ टेक ॥ अवध भुंम प्रगट राम। संतन सुखधाम काम ॥ नृमल नीर सरजू वहे। घाट वनो न्यारी॥१॥व्रजमें स्याम धरि औतार। नंदजूके भे दुलार ॥ नृमल नीर जमुना वहे। झुकी कदम डारी॥२॥ राम धनुस कठिन तोर। सोर होत भारी ॥ बालको त्रिन वोट मार। रावण मुख फारी॥३॥स्याम कुदि कालीदह। फनन फूल भारी ॥ दास पुस्कर आस चरन। कंसको पछारी ॥४॥

प्रभाती—भजि ले रे मन राम सिआकी। कोउ नहिं रोकनहारा ॥ टेक ॥ जो चाहो जो करो जिआसे। जह देखो उजिआरा ॥ कर जोरे जमराज खडो हे। विनती करे तुमारा ॥ १ ॥ सिउ ब्रह्मा सुर नर मुनि गंधर्व। लावत हहे पिआरा ॥ पुस्करदास चूकि मति औसर। करि ले नाम अधारा ॥ २ ॥

प्रभाती—रामकली—जागे जग जानकी रवण। गवन कीनो वनको ॥ टेक ॥ भक्तन संतनके हेत। जटा सीस कीनो भेस ॥ रजको सव अंग लाय। धनुस वान करको ॥ १ ॥ कोमल चरनन उदार। राम लखन सिआ प्यार ॥ तरवर पात करि कोपीन। आसन कारी घनको ॥ २ ॥ सेना कपि रिच्छ भाल। सागर उतारि सेत डाल ॥ हसत गाल

होइ निहाल। निसचर दलि हनको ॥ ३ ॥ डोलत वन वन वेहार। देवनको वंदने वार ॥ पुस्करदास चरन अधीन। दरस देत जनको ॥ ४ ॥

पवन तने हनुमन्त वीर। हे परताप भारी ॥टेक॥ करिके वल गये पताल। धरनी फारि डारी ॥ राम लखन भुजन लाये। असुर मारि डारी ॥ १ ॥ जो जन सौंहे मरजाद। सागर अगम भारी ॥ कूदि गये जाय वीर। लंक फूकि डारी ॥ २ ॥ धवलगिर कर उठाय। आये कटक सारी ॥ सत्ती वनको नेवार। लछिमन हर खारी ॥ ३ ॥ निसचरको मारि डार। देवन सुखकारी ॥ पुस्करदास हनुमतको। राम हृदे लारी ॥ ४ ॥

दरसन दे दसो औतार। भोर होत प्यारे ॥ टेक ॥ मच्छ-रूप धरि औतार। संखासुर वधन कार ॥ कच्छरूप धारिके। रतनागर मथि डारे ॥ १ ॥ धरिके वाराहरूप। हरन्याछ फारे ॥ नरसिंघ औतार धार। हरनाकुस मारे ॥ २ ॥ वामन होई वलिको छले। भोर दरस हारे॥ करी औतार परसराम। छत्री निछत्र कारे ॥३॥ अवध धामरूप राम। रावण संघारे॥ वृजमें औतार कृष्ण। कंसको पछारे ॥ ४ ॥ श्रीजगरनाथ जगके पति। वौध रूप धारे॥ कलजुग औतार कलंकी। भुंम भार उतारे ॥ ५ ॥ नाम रूप गुन अनंत। याको नहीं पारे ॥ सेस सहस फनन रटत। नामको तेहारे ॥ ६ ॥ सुर नर मुनि ध्यान धरत। संकर मुख गान करत ॥ ब्रह्मादिक

वेद पढत । नामको उच्चारे ॥७॥ पुस्करदास अति अधीन। राखो प्रभू चरन लीन॥ जल विन तलफत हे मीन। जयसे रहत न्यारे ॥ ८ ॥

दरसन दे प्रातसमें । श्रीराम लखन जानकी ॥ टेक॥ अवध भुंम धरि औतार । दशरथके प्रानप्यार॥ दुष्टन दलि मलि विदार। अहो वंस भानकी॥१॥पुस्करदास कहे पुकार। सुनि ले प्रभु वार वार॥ संतनके प्रान अधार । राखो लाज प्रानकी ॥ २ ॥

प्रभाती—उठहु लाल वन जाहु ग्वालसंघ । गउअनके रखवारे ॥ टेक॥ संघ सखा सव द्वार पुकारे। ले ले नाम तेहारे ॥ माखन मिसिरी कंद छोहारे। मात लिये कर थारे॥१॥ सुनिके वचन कृष्ण जसोदाके। नयनन पल्क उघारे॥ झारी भरे खडे बलदाउ। अचमन करि मुख डारे ॥ २ ॥ धवरी कवरी कली लालीं। करमें लकुट प्रचारे ॥ चले लाल वन धेन चरावन। बलदा संघमें जारे॥३॥ अति आनंद करे जदुनंदन। जीवन वृजप्रान अधारे॥ पुस्करदास आस चरननकी। तन मन धन किवो वारे॥ ४ ॥

प्रातसमें वंशी धुनि बाजे। सुनि सब व्याकुल धाये॥टेक॥ वंशीवटतट श्रीजमुनाके। वृच्छ कदंम सोहाये ॥ छाये हरे लतानन वन घन। मोरन कुहक सुनाये॥१॥ सुनी सवन वंसीकी धुनि सुनि । सेस महेस हीयाये ॥ ब्रह्मा वेद मुखनसो भूले। नारद वीन वजाये ॥२॥ जपत नेम गये जोगी जनको।

ध्यान सुरत विसराये ॥ चलत न खग मृग पसु । त्रिन तोरत । हेरत हरीको आये ॥ ३ ॥ धंन धंन ब्रज ग्वाल ग्वालिनी । स्याम संघ सुख पाये ॥ पुस्करदास आस जलुवरके । ध्यान चरन पर लाये ॥ ४ ॥

प्रभाती–रामकली–राखो सरन जान दीन । भक्तन हितकारी ॥ टेक ॥ गये सरन ध्रू प्रहलाद । कोटिन भय टारी ॥ अचल राज कीनो जाय । चरनन चित डारी ॥ १ ॥ भभीषन जन सरन आय । नाथ हो पुकारी ॥ प्रभू निसचर संघार डार । राज दिवो भारी ॥ २ ॥ सभाबीच टेरत हय । द्रोपती गिरधारी ॥ करी ढेर अंमरको । खैंचत भुज हारी ॥ ३ ॥ भक्तन हित करी औतार । दुष्ट मार कीनो छार ॥ पुस्करदास चरन आस । तन मन धन वारी ॥ ४ ॥

मेरे तो यक प्रान अधार । नंदके दुलारे ॥ टेक ॥ कोप कीन ब्रजमें इंद्र । प्रले काल डारे ॥ ग्वाल बाल सरन जाय । गिरवर नख धारे ॥ १ ॥ कालीदह कूदि परो । नाग नाथ कारो ॥ लादि लाये कवलन दल । कंसको पछारे ॥ २ ॥ अघा बका असुर मार । गजको पकड दंत उखार ॥ मालन दलि मलि विदार । कंसको पछारे ॥ ३ ॥ भक्तन हित करत हेत । धरत रूप है अनेक ॥ पुस्करदास चरन अधीन । तन मन धन वारे ॥ ४ ॥

जागे नींद नंदकुमार । प्यार करत माई ॥ टेक ॥ अंचल मुख झारि झारि । धोवत प्रान प्यार ॥ अति दुलार मोद डार ।

दूध पिअत जाई ॥ १ ॥ गोपी ग्वाल अति निहाल । निरखत मुख लाल लाल ॥ पुस्करदास चरन अधीन । कुँअरवो कधाई ॥ २ ॥

जीवन जगप्रान अधार । सुंदर सिआराम ॥ टेक ॥ सेस वो महेस जपत । वेद ब्रह्मा हाम ॥ योगीजन जपत तपत । पूरन सब काम ॥ १ ॥ भक्तन गुन ज्ञान गय । पाये पद अमर जाय ॥ पुस्करदास चरन आस । जनकसुता वाम ॥ २ ॥

भोर भवन कीन गवन । नंदके दुलारे ॥ टेक ॥ धवरी कवरी काली लाली । संघ सखा चले हाली ॥ कानन झलकत हे वाली । गउअन ललकारे ॥ १ ॥ मुरली सोर धुनि बजाय । गउअन सब घेर लाय ॥ जाय तीर जमुनाके । छाह कदम ठारे ॥२॥ अघा बका असुर धार । ग्वाल बाल करि पुकार ॥ दौड झपट चोच फार । असुरको संघारे ॥ ३ ॥ भक्तन हित करत हेत । धरत रूप हय अनेक ॥ पुस्करदास चरन अधीन । तन मन धन वारे ॥ ४ ॥

मान कहा मेरो मन । नीद नयन खोलो ॥ टेक ॥ खडो काल अति कराल । सीस उपर डोलो ॥ मारत हय वान तान । मुखसो नहीं बोलो ॥ १ ॥ काम क्रोध लोभ मोह । भरि भरि सब झोलो ॥ वृथा जन्म खोये जात । नाम हय अमोलो ॥ २ ॥ भजहु नाम तजहु काम । मार जमको गोलो ॥ पुस्करदास कहे पुकार । चित चरनकमल डोलो ॥ ३ ॥

जीवन वृज अवध भुंम । राम कृष्ण प्यारे ॥ टेक ॥ होत

प्रात उदित भान । सुर नर मुनि धरत ध्यान ॥ दसरथसुत रामकृष्ण । नंदके दुलारे ॥ १ ॥ महिमा त्रिभुअन अपार । याको नहीं वार पार ॥ ब्रह्मा वेद करि पुकार । नामको तेहारे ॥ २ ॥ दुरजन दलि मलि विदार । भक्त हेत धरि औतार ॥ पुस्करदास चरन आस । तन मन धन वारे ॥ ३ ॥

अव तो प्रभू दरस देहू । खवर लेहु मेरी ॥ टेक ॥ दरस दिवो धू प्रहलाद । अचल राज फेरी ॥ निरभय पद चरननको । गावत वहु तेरी ॥ १ ॥ भक्तन भय नृभे किवो । चारो पद ढेरी ॥ पुस्करदास चरन आस । प्रभु कृपा दिष्ट तेरी ॥ २ ॥

प्रभाती—सुंदर स्याम सलोना सजनी । चितवनमें वस कीना ॥ टेक ॥ मय जल जमुना भरन जात रहीं । मारग मिल परवीना ॥ दौड झपट झट गागर फोरे । मुख मेरो चुंमि लीना ॥ १ ॥ ढीठ लँगरवा नंदरायको । ऊंच नीच नहीं चीना ॥ पुस्करदास आस नंदनंदन । ध्यान चरनपर कीना ॥ २ ॥

हे मन काहे न भजु श्रीरामहि । उतर जाउं भौपारा ॥ टेक ॥ नृमल काया पए चेत करू । मति भूलो संसारा ॥ यह संसार सार हरिनामहि । भान विन दिवस अँधारा ॥ १ ॥ दीपक ग्यान हृदे विच जारो । चहुं दिस जोत उँजारा ॥ पुस्करदासके आस हरीपद । नहीं दूजो रखवारा ॥ २ ॥

प्रभाती—रामकली—भजि ले मन राम सिआ । जन्म सफल होई ॥ टेक ॥ मात पिता त्रिआ पुत्र । भाई नहीं कोई ॥ माया वस करत प्रीत । पूछे नहीं कोई ॥ १ ॥ क्या भुलान

माया वस। काया यह खोई॥ विना भजे तजे भ्रम। भक्त नहीं होई॥ २॥ औसरके चूकि चूकि। समुझ पाछे रोई॥ पुस्करदास आस राम। दूसरा न कोई॥ ३॥

प्रभाती–हरी हरे भौपीर तेहारो। सुमिरो नाम सकारे॥ टेक॥ सुर नर मुनि याको गुन गावे। ब्रह्मा वेद पुकारे॥ सेस सहसमुख करत वंदना। ध्यान चरनपर डारे॥ १॥ धू प्रहलाद भभीषनको भे। पल छिनमें प्रभू टारे॥ पुस्करदास कर जोरे प्रभू। दीन पतितको तारे॥ २॥

मन आनंद नंदसुत भजि ले। तजि दे सब भौजारा॥ टेक॥ निस दिन ध्यान धरो चरननमें। तन मन धन किवो वारा॥ काल वलीको डंडन मारो। उतारि जउ भौपारा॥१॥ कोप किवो व्रजमें राजा इंद्रही। प्रलेकाल करि डारा॥ ग्वाल वाल श्रीकृष्ण पुकारे। नखपर गिरवर धारा॥ २॥ सभावीच करुना करे द्रोपती। राखो लाज हमारा॥ टेर सुनी हरी अंमर घेरे। खैचत भुज वल हारा॥ ३॥ सुर नर मुनि याको गुन गावे। ब्रह्मा वेद पुकारा॥ पुस्करदास आस जदुवरके। ध्यान चरनपर डारा॥ ४॥

प्रभाती–रामकली–राजा रनछोडराय। सरन हौं तेहारो॥ टेक॥ सव तजिके आस वास। सदा रहौं तेरे पास॥ लागी आसचरननकी। हया करि निहारो॥१॥ भक्तजनन करत गान। याको तुम राखु मान॥ पुस्करदास कहे पुकार। दीन पतित तारो॥ २॥

अब तो करो दया द्रिष्ट। दीनन हितकारी ॥ टेक ॥ परी भीर हरी पीर। धू प्रहलाद भारी ॥ नरसिंघ औतार धार। हरणाकुस फारी ॥१॥ परी भीर द्रोपतिपर। सभामें पुकारी॥ अंमर चहु फेर घेर। खैचत भुज हारी ॥२॥ हरो पीर भारी भीर। वृज वूडत उवारी ॥ ग्वाल बाल सरन जाय। गिरवर नख धारी ॥ ३ ॥ भय अनेक भक्त जान। कहा ले मय करो वखान ॥ पुस्करदास चरन अधीन। दीन पतित तारी ॥ ४॥

प्रभाती—भजु मन नंदकुमार प्यार करू। हरे वृपम भोभारी ॥ टेक ॥ वूडतही वृजराज उवारे। नखपर गिरवर धारी ॥ असुरन मारी संघारि महाप्रभू। ग्वाल बाल सुखकारी ॥ १ ॥ करे टेर करुना कारि द्रोपति। सभावीच पुकारी ॥ सुनी टेर करुनानिधि स्वामी। अंमर ढेर सँभारी ॥२॥ राना करी कोप मीरापर। विष वाको दई डारी ॥ श्रीगिरधर गोपाल हित याके। विष अमृत सुख डारी ॥ ३ ॥ भक्तनके हित हरी चहु धावे। चार भुज कर धारी ॥ पुस्करदास आस मति छाडो। चरनकमल वलिहारी ॥ ४ ॥

प्रभाती—रामकली—जागे भवन राधे रवन। दरसन चलो कीजे ॥ टेक ॥ जपत सेस वो महेस। विद्यावल औ गणेस ॥ नारद सारद पुकार। ध्यान चरण कीजे ॥ १ ॥ वृजमें औतार धार। गोपी ग्वाल सुख अपार ॥ पुस्करदास चरन अधीन। जन्म सुफल लीजे ॥ २ ॥

प्रभाती—प्रातसमे सुमिरन करो संतो। रामहि कृष्ण

पुकारो ॥ टेक ॥ सेवत सेस महेस गणेसहि । ब्रम्हा वेद उच्चारो ॥ नारद सारद गुन गति नाचो । वाजे बीन चिकारो ॥ १ ॥ संतनके हित चहु दिस धावे । दुष्टन रूप विदारो ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे । तन मन धन किवो वारो ॥ २ ॥

रघुनंदन कौसिल्यानंदन । संतनको भय टारी ॥ टेक ॥ गौतमरिसकी नार अहेल्या । सिलस्राप भै भारी ॥ लागी अंगमें चरननकी रज । सुरपुर धाम सिधारी ॥ १ ॥ वेर किवो हरि, जनसेवा लहि । त्रिन धरे वोटहि मारी ॥ बांदर भाल कटक दल साजे । सागर पार उतारी ॥ २ ॥ भक्त भभीषनको वडो संकट । दसकंधर भेकारी ॥ दसमुख छेदि वेधि भुज वीसो । निसचर कुल संघारी ॥ ३ ॥ ऐसे दीन दयानिधि स्वामी । सवधि पूरनकारी ॥ पुस्करदास आस चरननकी । प्रभु दीन पतितको तारी ॥ ४ ॥

प्रभाती—रामकली—दरसन मोहि देहु प्रात । श्रीगुरु पुस्कर स्वामी ॥ टेक ॥ ब्रह्मा विष्णु वो महेस । जग्य किवो आय देस ॥ तीरथ गुरु मानि जानि वेद भरत हामी ॥ १ ॥ होत प्रात उदित भान । सुर नर मुनि धरत ध्यान ॥ तीरथ सव करि असनान । जपत हय जुगजामी ॥ २ ॥ वडे वडे गिर पहार । जाके विच मध्य धार ॥ हरत पाप दरसन सो । जाय वसत धामी ॥ ३ ॥ पुस्करदास सरन जाय । नृमल चित भे नहाय ॥ गोविंद गुन हरषि गाय । लागत नही दामी ॥ ४ ॥

प्रभाती—चतुर चेत चाहो सुख जिआको । हरिको नाम

उच्चारो ॥ टेक ॥ निस दिन ध्यान सेस सिउ लाये । ब्रह्मा वेद पुकारो ॥ नारद सारद बुद्धवल गणपति । चरन हृदेमें धारो॥ ॥ १ ॥ धू प्रहलाद भभीषनको भे । पल छिनमें प्रभू टारो॥ पुस्करदास कहे कर जोरे । जीती वाजी हारो ॥ २ ॥

प्रभाती–रामकली–त्रिभुअनके नाथ साथ । संतनहित धावे ॥ टेक ॥ ब्रह्मा सिउ ध्यान धरत । नारद मुनि गान करत ॥ सेस वो गणेस यादि। चरनन चित लावे ॥ १ ॥ दुष्टन दलि मलि विदार । चार भुजा हरी धार ॥ पुस्करदास आस राम । दूजो नही भावे ॥ २ ॥

संतन हित धरो हरी । विकटरूप भारी ॥ टेक ॥ मच्छरूप धरो हरि । संखासुर मारी ॥ सागर मथि डार वार । कच्छ रूप धारी ॥१॥ वारहको रूप धरो । हरन्याच्छ हतन करो ॥ नरसिंघ औतार धार । हरनाकुस फारी॥२॥ वामन औतार धरे । वलिको छल द्वार खडे ॥ परसराम नृभे काम । छत्रीको मारी॥३॥अवध धाम प्रगट राम । रावणको मारी ॥ कृष्णरूप कमलापति । कंसको पछारी ॥ ४ ॥ वौधरूप करी औतार । श्रीजगरनाथ जग रखवार ॥ पुस्करदास कलजुगमें । कलंकी रूप धारी ॥ ५ ॥

ध्याहो सुख राम सिआ । हिअसे हित लावे ॥ टेक ॥ काम क्रोध लोभ मोह । नींद नयन जावे ॥ पावे पद अमरलोक । कीरत जग छावे ॥ १ ॥ याको जपत ब्रम्हा सिउ । ध्यानको लगावे ॥ सेस वो गणेस यादि । नारद गुण गावे

॥ २ ॥ भक्तनके हेत हरी । दुष्ट मारि रूप धरी ॥ करी विजे भक्त जान । सो कस बनेवारे ॥ ३ ॥ महिमा त्रिभुअन अपार । सारद नहिं पावे पार ॥ पुस्करदास कहे पुकार । गोविंद गुण गावे ॥ ४ ॥

भोर भवन उमारवन । नयन नींद खोले ॥ टेक ॥ जटन गंग करित रंग । व्याल काल डोले ॥ छबि ललाट चंद्र भाल । त्रिनेत्र लाल लोले ॥ १ ॥ हसत गाल करि निहाल । मुंडमाल गरे डाल ॥ अंगहूमें भस्म लाय । बोंढे सिंगछोले ॥ २ ॥ कछनी काछे वो काल । गाँजा भांग घोटि डाल ॥ येके करमें धरि त्रिसूल । दूजे डमरु बोले ॥ ३ ॥ परवत कैलासवास । सति-सहित करि नेवास ॥ पुस्करदास चरन अधीन । अचल करे चोले ॥ ४ ॥

करि ले मन प्रेम प्रीत । सुंदर रघुराई ॥ टेक ॥ रटत रटत कटे कोटि । व्याधा सब जाई ॥ लावो हृदये हरीनाम । कोटि-न सुख पाई ॥ १ ॥ ब्रह्मा सिउ सेस जपत । सहस फनन भाई ॥ वालमीक धू प्रहलाद । कीरत जग छाई ॥ २ ॥ जुग जुग जन योगी जपत । कंद मूल खाई ॥ पुस्करदास चाहो सुख । गोविंद गुन गाई ॥ ३ ॥

प्रभाती—भोरे भवन गवन किवो मोहन । सखिअनके ग्रह जाये ॥ टेक ॥ ढोठा ढीठ नंदको रसिआ । मानत नहिं समुझाये ॥ दधि माखन चाखनको चातुर । मटुकी फोर वहाये ॥ १ ॥ अब क्या करूं धरूं कह मटुकी । पटाकि

पटकि सब जाये ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे । ध्यान चरन पर लाये ॥ २ ॥

प्रभाती रामकली—रोके री मग मेरो लँगड। भरन जात गागरी ॥ टेक ॥ ग्वाल बाल संघ लाय। वीन वंसी सुख वजाय ॥ गाय गाय मन लोभाय। प्रेम विवस नागरी ॥ १ ॥ जीवन बृजनंद कुमार । तन मन धन डारो वार ॥ पुस्करदास चरन अधीन। सखिन वडो भाग री ॥ २ ॥

प्रभाती—भोर होत सुनि सोर स्त्रवनमें। दसरथनंदन जागे ॥ टेक ॥ मात कौसिला लाय गोदमें। लछिमन भरि झारी आगे ॥ भरत शत्रुघन चौर ढुरावे। हनुमत चौकी लागे॥ १॥ दुष्ट दलन संतन हितकारी। भक्तन मन अनुरागे॥ पुस्करदास आस रघुवरके। कोटिन भ्रम भे भागे ॥ २ ॥

प्रातसमे जागे जदुनंदन। आनंदकंदन प्यारे ॥ टेक॥ सुर नर मुनि याको ध्यान धरत हय। ब्रह्मा वेद पुकारे ॥ सेस सहस मुख सहसनाम रटि। गावत गुन सब न्यारे॥ १॥ भक्तनको भौ भीर पीर हरी। दुष्टन वोद्र विदारे ॥ पुस्करदास आस चरननकी प्रभू। दीन पतितको तारे ॥ २ ॥

मूढमना तन रहे न तेरो । करि ले हरीकी आसा ॥ टेक॥ यह जगवासा रेनको सोपना। याको नही विस्वासा ॥ सब तजि आस वसो हरीके हिआ। जगसे होहु निरासा ॥ १ ॥ सदा काल दे ताल सीसपर । निस दिन करे नेवासा॥ पुस्करदास चहो सुख जिआको। चरनकमल मन फासा ॥२॥

प्रभाती रामकली—दरसन दे प्रातसमे। मुरलीधर प्यारे ॥ टेक ॥ देवकीगर्भ जन्म लिवो। नंदके दुलारे ॥ पूतना पिसाचिनीको। छीर पिअत मारे ॥ १ ॥ सखा संघ ग्वाल बाल। करि आनंद होई निहाल ॥ विचरत वन वन वेहार। गउअन रखवारे ॥ २ ॥ अघा बका असुर मारि। गजको पटकि दंत उखारि ॥ मालन दलि मलि विदार। कंसको पछारे ॥३॥ गोपिन सुख देनहार। वृजमें धरे कृष्ण औतार॥ पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारे ॥ ४ ॥

भजि ले मन सिआ राम। काम सुफल होई॥ टेक ॥छाणो जगं जाल माल। खणो काल अति कराल॥ सुमिरन करू हरी चरन। पूछे नहीं कोई ॥१॥ पुस्करदास कहे पुकार।सुनि ले मन वार वार॥मात पिता त्रिआ पुत्र। नहीं संघ कोई॥२

समुझि ले मन येक वार। चरन आस कीजे ॥ टेक ॥ चरननकी आस करो। कालडंड मारि धरो॥ पावो पद अमर लोक। चारों पद लीजे॥१॥चेतन तन पाय पाय। भजि ले गुन गोविंद जाय ॥ पुस्करदास कहे पुकार। ध्यान चरन दीजे ॥ २ ॥

प्रभाती—रेन गई भे भोर भावनमें। यागे कृष्ण मुरारी॥ टेक ॥ चलत वटोही पंथ निहारे। पंछी वन उणि जारी ॥ गवन किवो वन गउअन वछरन। तोरत त्रिन सब न्यारी॥१ याको सुर नर मुनि सब सेवे। ब्रह्मा वेद पुकारी ॥ पुस्करदास स्याम वृजजीवन। तन मन धन किवो वारी ॥ २ ॥

चलो सखी वृजराज जगावे। मन भावे सो लेरी ॥ टेक ॥ उठि उठि सखी गई नंद गृहको। चहु दिस आंगन मेरी ॥ सुनि सोर स्रवनन जदुनंदन। नयनन पलक उघेरी ॥ १ ॥ मात जसोदा अति हिआ हरखे। उठि उठि गोदमें लेरी ॥ पुस्करदास सखिन सुख जदुवर। दूजो आस न हेरी ॥ २ ॥

प्रभाती रामकली—अरूझे सखी मेरो। नंदकुअर प्यारे ॥ टेक ॥ जमुनाजल भरन गई। सिरपर घट धारे ॥ औचक मोहि मिले डगर। लॅगण ढीठवारे॥ १॥ मोर मुकुट सीस धार। मुरली अधरपर सॅभार ॥ अंजन भरि दिये कपोलाघूघर वार कारे ॥ २ ॥ केसरको तिलक भाल। गलमें वैजंती माल॥ वोढे हय वसंती चीर। कछनीको धारे ॥३॥ स्याम रूप हय सरूप। देखत भय चकृत भूप ॥ पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारे ॥ ४ ॥

देखो छबि आजु सखी। सुंदरी वो सॅवरो ॥ टेक ॥ सोहत सीस मोर मुकुट। मोतिनको झालरो॥ पृआ सीस सोभा लगे। चंद्रिकामें नागरो ॥१॥ गलेमाल लालनके। गुंज गोफ डालरो ॥ हार हृदे प्यारी पृआ। पुष्पनके गाजरो ॥२॥ पीत वसन स्यांम जाम। देखत मन मोहे काम ॥सूहा सारीकसे प्यारी। फिरत दोउ भॉवरो ॥ ३ ॥ पुस्करदास अति आनंद। निरखि रूप मगन संत ॥ चित्त हयचरनारविंद। तन मन धन धावरो ॥ ४ ॥

यागो नीद गोपीनाथ। गिरवर गिरधारी ॥ टेक ॥ अंचल मुख झारि झारि। हदे मात करत प्यार ॥ आगे बलदेउ खडे। करमें लीनो झारी ॥ १ ॥ नंदभे आनंद देखि। गोदमें बेठारे ॥ पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारी ॥ २ ॥

वरनो छवि अंग अंग। संकर बं भोला॥ टेक ॥ अति अनूप सीस जटा। व्यालो सब लपटि लटा ॥ श्रीगंगजी भूलि जटा। द्वादस वर्ष डोला ॥ १ ॥ छवि ललाट चंद्र भाल। सोभित छवि खौर लाल ॥ कानन कुंडल फनन व्याल। लटकि लटकि डोला ॥ २ ॥ मुंडनकी कंठ माल। भुजनपर कराल व्याल ॥ येके करमें धरि त्रिसूल। दूजे डमरू बोला ॥ ३ ॥ अंगहूमें भस्म लाय। व्यालको कोपीन लाय ॥ वोढे वाघंमर सिउ। बैठे मृगछोला ॥ ४ ॥ पुस्करदास अति आनंद। गौरी अरधंग संघ ॥ नंदी सुखवाहन। कैलास सिखर डोला ॥ ५ ॥

जागे औधेस कुअर बोलत वनपच्छी ॥ टेक ॥ होत प्रात उदित भान। सुर नर मुनि धरत ध्यान ॥ संत जनन करत गान। गावत गुन अच्छी ॥ १ ॥ जागे चारों सुजान। संकर मम हदे ध्यान ॥ भक्तनको राखि मान। दीजो वर अच्छी ॥२॥ सरजूजल नृमल नीर। जुगल चारों गये तीर ॥ मंजन करि विमल अंग। इष्टदेव साच्छी ॥ ३॥ पुस्करदास अति आनंद। निरखि रूप मगन संत ॥ चित्त हयचरनारविंद। मुक्त देत अच्छी ॥ ४ ॥

दरसन मोहि देहु प्रात। गंगा महरानी॥ टेक॥ विष्णुचरन निकसी धार। संकरने सीस डार॥ गंडीरिष जांघ फारि। ऐसी वलवनी॥ १॥ भागीरथी भक्त जान। कीनो तप धरो ध्यान॥ अधमन करने उद्धार। मृतलोक आनी॥२॥ हरिकी पैरी हरद्वार। महिमा याको अपार॥ तीरथ किवो प्रागराज। वेदहू बखानी॥ ३॥ पुस्करदास अति अनंद। निरखि रूप मगन संत॥ चित्त हयचरनारविंद। मुक्तकी निसानी॥ ४॥

दरसन दे प्रातसमें। जमुना महरानी॥ टेक॥ होत प्रात उदित भान। सुर नर मुनि धरत ध्यान॥नंदके कुमार कृष्ण। याको पटरानी॥१॥लीजे वर मुक्तकाजादीजो जमलोक राज॥ कार्तिक प्रात करे असनान। जमपुर नहि जानी॥२॥ गोपिनसो अधिक प्रीतापूजन करे वेदरीत॥छवि तरंग नृपल रूप। गुन गावत हरखानी॥ ३॥ पुस्करदास अति आनंद। नृमल चित्त धोय अंग॥चित्त हयचरनारविंद। मुक्तकी निसानी॥४

मन भजि ले सुखसागर। गुन आगर गिरधारी॥ टेक॥ होत प्रात उदित भान। सुर नर मुनि धरत ध्यान॥ वेद ब्रह्मा करी बखान। नामको उच्चारी॥१॥ भक्तनहित करी औतार। दुष्टन दलि मलि विदार॥ संतन सुख सदा कार। विचरत वनवारी॥२॥ नंद जसोदाके वार। गोपिन सुख किवो प्यार॥ पुस्करदास चरन अधीन। तन मन धन वारी॥ ३॥

प्रभाती—ये मन भजि ले दसरथनंदन। वो भक्तन हितकारी॥ टेक॥ जेहि सुमिरे सुख होत चहूं दिस। ब्रह्मा वेद

पुकारी ॥ नारद सारद सुर मुनि गंधर्व । सिउ त्रिसूल कर धारी॥१॥देवनवंद छोडावन कारन । रामरूप कर धारी ॥ कठिन धनुस सिउको किवो खंडन । माल सिया जयडारी ॥२॥ तारी गौतम नार अहेल्या । सिलास्त्राप भे भारी ॥ वाल मारि सुग्रीव सखा किवो । अंगद दास अधिकारी ॥ ३ ॥ सागर सेत नामसे वांधे । निसचरकुल संघारी ॥ पुस्करदास आस मति छाडो । करो भरोसा भारी ॥ ४ ॥

प्रभाती संपूर्ण.

मंगल—मंगल सुमिरन गणपति देवा गणपति देवा । याको पिता महदेवा ॥ टेक ॥ मंगलकरन हरन भौमोचन॥ याहि करत सुर सेवा ॥ १ ॥ येकदंत याके मुखकी सोभा ॥ भोग लगावत मेवा ॥२॥ रिद्धि सिद्ध दोउ अंग विराजे ॥ वाहन मूसा लेवा ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख सुमिरे ॥ ध्यान चरनमें भेवा ॥ ४ ॥

मंगल गुरू चरन चित धारो चरन चित धारो । पतित तन तारो ॥ टेक ॥ विन गुरू सरन तरो नहीं ॥ यह तन ना कोउ देत सहारो ॥ १ ॥ नृभे नाम हरीगुन गायो ॥ उतरि जाउ भौपारो ॥२॥ निस दिन संत समागम कीजे ॥ प्रेमविवस रस सारो ॥ ३ ॥ मंगलमूरत करो आरती ॥ तन मन धन करि वारो ॥ ४ ॥ पुस्करदास भजो गुरू गोविंद ॥ कहना मान हमारो ॥ ५ ॥

सुख मन मंगल राम सोहाये राम सोहाये ॥ सिया-राम सोहाये ॥ टेक ॥ अवध सोहावन प्रभु मन भावन ॥ सरजु निकट वहि आये ॥ १ ॥ संत समाज रघुवर जहाँ राजे॥ संकर ध्यान लगाये॥२॥सेस सहस फन करत वंदना॥ ब्रह्मा वेद वनाये ॥ ३ ॥ मंगल मूरत करो आरती ॥ पुस्क-रदास मन भाये ॥ ४ ॥

मंगल आरति हरि जस गावो हरी जस गावो ॥ सबे सुख पावो ॥ टेक ॥ याको जस सिउ ब्रह्मा गावे ॥ नारद वीन वजावो ॥ १ ॥ याको जस गुन सेस वखाने ॥ सहसफनन जेहि छावो ॥ २ ॥ जाको जस गुन योगी जाने ॥ मनमाने फल पावो ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ तनकी ताप नसावो ॥ ४ ॥

मंगलमूरत सूरत सोभा सूरत सोभा ॥ रामको सूरत सोभा ॥ टेक ॥ जेहि सूरत सुर सेस सोहाये ॥ सिउ ब्रह्मा मन लोभा ॥ १ ॥ जेहि सूरत भक्तन जन मोहे ॥ तन मन धन चित गोभा ॥ २ ॥ जेहि सूरत योगी जन मोहे ॥ मन माने सो वोभा ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ प्रभु पतितनको छोभा ॥ ४ ॥

सुन्दर स्याम मनोहर जोडी मनोहर जोडी ॥ दुष्टन मुख तोडी ॥ टेक ॥ मंगलमूरत सूरत सोभा ॥ श्रीवृषभान किसोरी ॥ १ ॥ येहि सूरत सुर नर मुनि सुमिरे ॥ ब्रह्मा वेद रचो री ॥ २ ॥ मोर मुकट मुख मुरली वजावे ॥ गोपी

ग्वाल सुखवो री ॥ ३ ॥ पुस्करदास प्रभू मंगल आरती ॥ चरनन ध्यान धरो री ॥ ४ ॥

ये मन सदा रघुवर गुन गावो रघुवर गुन गावो ॥ चारो फल पावो ॥ टेक ॥ सदा गुन गावे वो ब्रह्मा वेद सो॥ संकर ध्यान लगावो ॥ १ ॥ सदा गुन गावे येहि सेस सहसफन ॥ नारद बीन बजावो ॥ २ ॥ सदा गुन गावे योगी जाको ॥ ताको प्रभु धाम पठावो ॥ ३ ॥ सदा गुन गावे भक्तन जन याको ॥ प्रभू रूप अनेक बनावो ॥ ४ ॥ पुस्करदास समुझ मन मेरो ॥ चित्त चरननमें लावो ॥ ५ ॥

मंगल मूरत सूरत सियाके सूरत सियाके ॥ प्यारी पियाके ॥ टेक ॥ जेहि मूरत मुनिवर जन जाने ॥ हर्पित भजे वोहि याके ॥ १ ॥ जेहि मूरत मन राखि सदासिउ ॥ युग युग जपत वो जियाके ॥ २ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ चरनन ध्यान लियाके ॥ ३ ॥

मंगल मूरत मदन गोपाल मदन गोपाल ॥ भक्तन उर माल ॥ टेक ॥ गर्भ देवकी प्रगटे नरहरी ॥ भय जसोदाके लाल ॥ १ ॥ माखन मिसिरी भोग लगावे ॥ संघ सखा गोपी ग्वाल ॥ २ ॥ क्षीर पियत पूतना पछारे ॥ बका असुर फारे गाल ॥ ३ ॥ कुव्यापील गज पटकि भुंममें ॥ सवे पछारे माल ॥ ४ ॥ कुअर कंधैया कालीदह कूदे ॥ नाथे नाग वो काल ॥ ५ ॥ झटकि केस धरि कंस पछारे ॥ देव सुमन झारि डाल ॥ ६ ॥ वन वन धेन चरावत गावत ॥

सुख सुख मुरली बजत रसाल ॥ ७ ॥ मंगल मूरत करो आरती ॥ ध्यान चरनमें डाल ॥ ८ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ नयनन निरखि निहाल ॥ ९ ॥

करू मन अंजनीके लालको आसा लालको आसा ॥ छूटे जम फासा ॥ टेक ॥ प्रथम आस कीनो सुर सबही ॥ जब रविके रथको ग्रासा ॥ १ ॥ करि आसा सुग्रीव रामहित ॥ प्रभु जाय मिले वनवासा ॥ २ ॥ करि आसा, रघुवर हित जाये ॥ निसचर कुल किवो नासा ॥ ३ ॥ करि आसा तुलसीके प्रभु मिले ॥ छूटे जमको फासा ॥ ४ ॥ पुस्करदास धंन अंजनीनंदन ॥ सदा रामके पासा ॥ ५ ॥

मंगल मूरत अवधविहारी अवधविहारी ॥ श्रीजनकदुलारी ॥ टेक ॥ जेहि मूरत मोहे मुनिवर जन ॥ मोहे ब्रह्मा त्रिपुरारी ॥ १ ॥ जेहि मूरत जज्ञ मोहे जनकपुर ॥ हरषित गात निहारी ॥ २ ॥ क्रीट मुकट मकराकृत कुंडल ॥ धनुस बान कर धारी ॥ ३ ॥ मंगलरूप सब भूप भुलाने ॥ प्रभु धनुष खंड करि डारी ॥४॥ मंगलमूरत करो आरती ॥ चरनकमल बलिहारी ॥ ५ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ तन मन धन बलिहारी ॥ ६ ॥

मंगल मदन गोपाल सोहाये गोपाल सोहाये ॥ नंदलाल सोहाये ॥ टेक ॥ मंगल मोर मुकट सिर राजे ॥ मुरली अधर बजाये ॥ १ ॥ मंगल गरे वनमाल विराजे ॥ पीतांबर छबि छाये ॥ २ ॥ स्यावली सूरत मोहनी मूरत

॥ कोटिन भान लजाये ॥ ३ ॥ मंगलमूरत हरि जस कीजे ॥ चरनन ध्यान लगाये ॥ ४ ॥ मंगल संत सदा सुख लीजे ॥ जेहि सारद अंत न पाये ॥ ५ ॥ पुस्करदास आनंद नंदसुत ॥ वेदविदित जस गाये ॥ ६ ॥

मंगलमूरत श्रीरघुनंदन श्रीरघुनंदन ॥ दसरथके नंदन ॥ टेक ॥ येहि सुमिरे सिउ सेस ब्रह्मादिक ॥ करत वेद मुख वंदन ॥ १ ॥ भक्तनके हित चहु दिस धावे ॥ काटत जमको फंदन ॥ २ ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल ॥ तिलक भाल दिये चंदन ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ प्रभु दुष्टनको सुख दंदन ॥ ४ ॥

मंगल भोर भजो हनुमान भजो हनुमान ॥ सकल गुनज्ञान ॥ टेक ॥ भूषन अंग सेंदूर चढाये ॥ खाये लाडू जलेबी पान ॥ १ ॥ भक्तनके हित चहू दिस धावे ॥ करत राम गुन ग्राम ॥ २ ॥ अंजनीके लाला संतन प्रतीपाला ॥ तोरत दुष्टन मान ॥ ३ ॥ पुस्करदास हनुमानजीकी महिमा ॥ प्रभु मुख करत बखान ॥ ४ ॥

मंगल संत समाज सोहाये समाज सोहाये ॥ महराज सोहाये ॥ टेक ॥ मंगलमूरत सियारामकी ॥ सिंघासन बैठाये ॥ १ ॥ गंगाजल असनान करावत ॥ तुलसीदल पुष्प चढाये ॥ २ ॥ धूप दीप नेवेद आरती ॥ घंटा संख बजाये ॥ ३ ॥ अस्तुति करत परत पदचरनन ॥ वार वार बलि जाये ॥ ४ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ अंत न सेसजी पाये ॥ ५ ॥

मंगल अवध पुरी सुख राजे पुरी सुख राजे ॥ जहँ राम विराजे ॥ टेक ॥ नृप दसरथके कुंअर सवरो ॥ यामें राम सिरताजे ॥ १ ॥ संतसमाज सदा सुख मंगल ॥ गोविंद गुन धुनि गाजे ॥ २ ॥ सुंदर वदन मनोहर मूरत ॥ कोटि काम सुख लाजे ॥ ३ ॥ नृमल नीर निकट वहे सरजू ॥ दरस पतित तन ताजे ॥ ४ ॥ पुस्करदास मन वसहु अवधपुर ॥ करो छावनी छाजे ॥ ५ ॥

मंगलरूप निरपू मनमोहन निरपू मनमोहन ॥ वो जगके मोहन ॥ टेक ॥ मंगलभवन गवन कियो नंदजूके ॥ गउअन जायके दोहन ॥ १ ॥ मोर मुकुटकी लटकि सीसपर ॥ मुरली मुखपर सोहन ॥ २ ॥ वन वन धेन चरावत गावत ॥ गोपी ग्वाल संघ जोहन ॥ ३ ॥ दुष्टदलन संतन हितकारी ॥ मारी असुरन लोहन ॥ ४ ॥ पुस्करदास प्रभु मंगलमूरत ॥ आरति करू मनवोहन ॥ ५ ॥

मंगल रकार मकार माया मकार माया ॥ त्रिभुवन याको छाया ॥ टेक ॥ रकार मकार ब्रह्मादिक भावे ॥ वेद विदित जस गाया ॥ १ ॥ रकार मकार सिउ सदा सोहाये ॥ निसु दिन ध्यान लगाया ॥ २ ॥ रकार मकार नित रटत निरंतर ॥ सेस सहसफन छाया ॥ ३ ॥ रकार मकार भजे नित नारद ॥ वीन वजाय गुन गाया ॥ ४ ॥ रकार मकार जाने योगीजन ॥ मनमाने फल खाया ॥ ५ ॥ रकार मकार भक्तन भय टारे ॥ तनकी ताप नसाया ॥ ६ ॥ रकार मकार म-

खे दिन रेन चेन नहि। नाहक जिआ तरसे हो ॥ तन मन धन अरपन कीनो तुमपर। नेह न लगी छोडे हो ॥ २ ॥ जल विन मीन मरत हे जैसे। तैसे नाहि करे हो ॥ पुस्करदास द-रस विनु देखे। हिआसे जाने न पैहो ॥ ३ ॥

ये मन मूढ कहा मेरो मानो ॥ टेक ॥ सव तजि कुटुम करो हित हरीसो ॥ जग रेनको सोपना जानो ॥ १ ॥ जो नहि चित हित हरीसो करि हो। फिर पाछे पछितानो ॥ विन हरी हेत नहीं हित कोई। सत्तवचन करि जानो ॥ २ ॥ जेहि सुमिरत सुर नर मुनि संकर। ब्रह्मा वेद बखानो ॥ पुस्करदा-स कहे कर जोरे। घरी पल छिन हय हानो ॥ ३ ॥

हरी विन कौन हरे भौ भारी ॥ टेक ॥ यह भौसागर अगम नीर भरो ॥ टूटी नैआ हमारी ॥ १ ॥ नाम गुन रखा गाडो नाउ विच ॥ तव उतरो भौपारी ॥ २ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह वस ॥ विपरस यह संसारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास च-हो सुख जिआको ॥ ध्यान चरनपर डारी ॥ ४ ॥

हरी विन कौन लगावे वेणा पार ॥ टेक ॥ गहिरी नदियां अगम नीर भरो ॥ सूझत वार न पार ॥ १ ॥ झिलमिट झाझर नैआ वनो हय ॥ वे गुन वूडे मझे धार ॥ २ ॥ चतुर से-आनों गाणो नाम गुन ॥ वोझा उतारो भौजार ॥ ३ ॥ पुस्कर-दास कहे कर जोरे ॥ मन धरू नाम अधार ॥ ४ ॥

उमारवन सुनु स्रवन हमारी ॥ टेक ॥ नही विद्या नहीं वाहवल मेरे। नहीं गाठिण दाम सँभारी ॥ तजिके आस वास

मिता तजि ॥ भजु मन प्रभु पतितन तन लाया ॥७॥ पुस्करदास त्यागि जग झगणो ॥ रगणो राम लगाया ॥८ ॥

मंगल सम्पूर्ण.

भैरवी प्रारंभ—राखो पति भक्तन हितकारी॥टेक॥ गज अरु ग्राह लडे जलभीतर। वूणतही गजराज उवारी॥नरसिंघ रूप प्रहलाद हेत धरे। हरनाकुसको वोद्र विदारी॥१॥ इंद्रहि कोप किवो व्रजऊपर। प्रलेकार किवो जल भारी॥ ग्वाल वाल श्रीकृष्ण पुकारे। नखपर गिरवर धरे गिरधारी ॥ २ ॥ समावीच द्रोपति पति राखे। खैचत चीर दुसासन हारी॥ राना रीसाय विष दीनो मीराको। विष अमृत हो मुखमें डारी ॥ ३ ॥ जब जब कष्ट परो भक्तनपर। तब तब आये मिले भुज चारी ॥ पुस्करदास कहत कर जोरे। मोहि अस पतित अनेकन तारी ॥ ४ ॥

श्रीरघुवीरमे सो आस तेहारो ॥ टेक ॥ सब तजि आस वास चरननकी ॥ चाहो जब नाथ उवारो ॥१॥ नहि विद्यावल नहि सुखसंपत। नहि सुख यह संसारो ॥ चाहो सुख चरनन पद तेरो। सुनिये नाथ हमारो ॥ २ ॥ कोटिन पतित सरन गये तेरो। यै गुन नाहि विचारो ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे। सुनु दसरथ प्रानपिआरो ॥ ३ ॥

श्रीरघुवर यारे दरस कव दैहो ॥ टेक ॥ अवकी गये कव ऐहो जनकपुर॥ सरहजकी सुधि लैहो ॥ १ ॥ विन दे-

खे दिन रेन चेन नहि। नाहक जिआ तरसे हो॥ तन मन धन अरपन कीनो तुमपर। नेह न लगी छोडे हो॥ २॥ जल विन मीन मरत है जेसे। तैसे नाहि करै हो॥ पुस्करदास द्-रस विनु देखे। हिआसे जाने न पैहो॥ ३॥

ये मन मूढ कहा मेरो मानो॥ टेक॥ सव तजि कुटुम करो हित हरीसो॥ जग रेनको सोपना जानो॥ १॥ जो नहि चित हित हरीसो करि हो। फिर पाछे पछितानो॥ विन हरी हेत नहीं हित कोई। सत्तवचन करि जानो॥ २॥ जेहि सुमिरत सुर नर मुनि संकर। ब्रह्मा वेद वखानो॥ पुस्करदा-स कहे कर जोरे। घरी पल छिन हय हानो॥ ३॥

हरी विन कौन हरे भौ भारी॥ टेक॥ यह भौसागर अगम नीर भरो॥ टूटी नैआ हमारी॥ १॥ नाम गुन रखा गाडो नाउ विच॥ तव उतरो भौपारी॥ २॥ काम क्रोध मद लोभ मोह वस॥ विपरस यह संसारी॥ ३॥ पुस्करदास च-हो सुख जिआको॥ ध्यान चरनपर डारी॥ ४॥

हरी विन कौन लगावे वेणा पार॥ टेक॥ गहिरी नदियां अगम नीर भरो॥ सूझत वार न पार॥ १॥ झिलमिट झाझर नैआ वनो हय॥ वे गुन वूडे मझे धार॥ २॥ चतुर से-आनों गाणो नाम गुन॥ वोझा उतारो भौजार॥ ३॥ पुस्कर-दास कहे कर जोरे॥ मन धरू नाम अधार॥ ४॥

उमारवन सुनु स्रवन हमारी॥ टेक॥ नही विद्या नहीं वाहवल मेरे। नहीं गाठिण दाम सँभारी॥ तजिके आस वास

यह जगको । लागी आस तुमारी ॥ १ ॥ मागू वर कर जोरे तुमसो । सुनहूं सदा त्रिपुरारी ॥ पुस्करदास आस चरननकी । तन मन धन किवो वारी ॥ २ ॥

श्रीहनुमत वीर हरो तनपीरा ॥ टेक ॥ येक पीर मेरे हिआ बिच कसके ॥ कब मिलि हें रघुवीरा ॥ १ ॥ तुम विन वीर पीरको मेटे ॥ हरो सकल भौभीरा॥२॥भक्तनके हित हरी संघ धावो ॥ गुन गावो गंभीरा ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ दरस विना आधीरा ॥ ४ ॥

ये मन राम नाम नहीं भूलो ॥ टेक ॥ जो तुम राम नाम नहीं भजिये ॥ मारेगा जम हूलो ॥ १ ॥ लागे हूलो कभी नहीं भूलो॥होइ हो अंधा लूलो ॥ २ ॥ तन मन हीन मलीन सदा तुम ॥ परे खाटपर झूलो ॥ ३ ॥ पुस्करदास चहो सुख जिआको ॥ प्रभूके चरन नित फूलो ॥ ४ ॥

रहो मन सुंदर स्याम हजूरी ॥ टेक ॥ जो तुम रहत हजूरी हरीके ॥ होत सकल दूरी ॥१॥ तन मन धनसे सेवो चरन पद ॥ ले चर पदारथ पूरी ॥ २ ॥ तजिके चरन सरन गये औरहि ॥ पैहो मुखभरि धूरी ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस करो हरीसे ॥ सब तजि दे भ्रम झूरी ॥ ४ ॥

हरी जन रामहि नाम पुकारे ॥ टेक ॥ वो जन जिअसे डरे नही काहू ॥ कालफासको फारे ॥ १ ॥ वो जन डरे मरे नही मारे ॥ वैरीको दंत उखारे ॥ २ ॥ वो जन जिआसे जाय सुरपुरमें ॥ चौरासी नही आरे ॥ ३ ॥ पुस्करदास चहे सुख जिआको ॥ ध्यान चरनपर डारे ॥ ४ ॥

हरीगुन गावो पावो सुख सवहीं ॥ टेक ॥ जो जन ह-रीको नाम न भूले ॥ ना पावत दुख कवहीं ॥ १ ॥ आठ पहर चौसठ घणीमें ॥ नृभे मन करो जवहीं ॥ २ ॥ जो ज-न पाये लाये नाम मन ॥ दूर होत दुख तवहीं ॥ ३ ॥ पु-स्करदास प्रभूके चरनन चित ॥ गोविंद गुन गावो अव-हीं ॥ ४ ॥

सखी मोहि प्रान वो प्यारे विसारे ॥ टेक ॥ जव सो प्यारे जिआसो विसारे ॥ विरहा अधिक तन जारे ॥ १ ॥ निसु दिन दरद हिआ विच हूले ॥ भूले नही साझ सकारे॥२ ॥ लाख जतन करूं मन नही माने ॥ वहत नयन जल धारे ॥ ३ ॥ पुस्करदासको वेग मिलो प्रभू ॥ ध्यान चरन चित डारे ॥ ४ ॥

नरतन पाय रामगुन गावो ॥ टेक ॥ वादा करिके आये जक्तमें ॥ माया जन देखि भुलावो ॥ १ ॥ वालापन तन खे-लि गवाये ॥ ज्वानी मद भरे छावो ॥ २ ॥ वृध भये सव ग-ये जोवन मद ॥ खाट परो पछितावो ॥ ३ ॥ पुस्करदास अ-जहूं ना चेते ॥ मूरुख जन्म गॅवावो ॥ ४ ॥

रघुवर प्यारे जनकपुर ऐहो ॥ टेक ॥ जवसे दरस दि-हो नेनन भरी ॥ अव ना सुरत विसरै हो ॥ १ ॥ विन देखे दिन रेन चेन नही ॥ वेगहि खवर पठै हो ॥२ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ सिआवर हो सुख दे हो ॥ ३ ॥

माइ मोहि रामसिआ सुधि आई ॥ टेक ॥ रिमि झिमि रिमि झिमि बूंदन वरसे। पवन चले पुरवाई ॥ ठाढे विक्षतर भीजत होइ हें। राम लखन दोउ भाई ॥१॥ कुस आसन फल फूल अहारे। वन वन विचरत जाई॥कोमल चरन चलत प्रभू पावन। यह दुख सही आन जाई ॥२॥ जटाजूट करी भेस मुनिनके। अंगमें भस्म रमाई॥ यह विधना कर मन लिखि दीनो। कोइ ना होत सहाई॥३॥पापी प्रान तजत नही तनसे। राम तजे मोहि जाई ॥ पुस्करदास आस रघुवरके। ध्यान चरन पर लाई ॥ ४ ॥

अंजनीके लाल लाल तन वाके॥ टेक ॥ प्रगट भये वो लाल फल देखे ॥ रविरथ रोको फाके ॥१॥ लाल लगुर गदा लिवो करमें॥ महि रावन वधि बाके ॥ २ ॥ किवो वल पलमें कूदि गये सागर ॥ लंकापर दिवो हे हाके॥ ३ ॥ धवलागिर लाये लखन जिआये ॥ पुस्करदास सुख पाके ॥ ४ ॥

पिआपर देस वेल भर हे प्यारे॥ टेक॥ अये रितु। स्रावनहीं सोहावन ॥ कवन हिंडोला डार डारे ॥ १ ॥ आये घटा झुकी। झमकि वदरीआ ॥ सूनी हय सेज हमारे॥ २ ॥ यह दुख दारुन। सहि ना जात सखी॥ जिआ न होत यह न्यारे ॥ ३ ॥ पुस्करदासकी आस दरसकी ॥ मिलि हो कव नंद दुलारे ॥ ४ ॥

धंन धंन राम अवध सुत चारी ॥ टेक ॥ कठिन धनुस प्रन। कीनो जनक जग्य॥ भंजन कीनो चाप भा-

री ॥ १ ॥ सिला श्राप भई । नार अहेल्या ॥ प्रभू चरननकी रज तारी ॥ २ ॥ वालि वधे । रावन कुल नासे ॥ राज भभीपनकारी ॥ ३ ॥ पुस्करदासको आस चरनकी ॥ संतनको भय टारी ॥ ४ ॥

आली मग ठाढो री । मोहन मन रसिआ ॥ टेक ॥ मोर मुकुटकी । लटक सीसपर ॥ अधर धरे वो वसिआ ॥ १ ॥ गले माल । वनमाल सोहावन ॥ पीतांबर प्रभू कसिआ ॥ २ ॥ करमें लकुट । प्रचारे प्यारे ॥ संघ सखा सव हसिया ॥ ३ ॥ पुस्करदास । स्याम व्रज जीवन ॥ ध्यान चरनपर धसिय॥४

भजु मन राम । कृष्ण भुज चारी ॥ टेक ॥ याको जपे । सेस मुख सहसो ॥ ब्रह्मा मुख वेद पुकारी ॥ १ ॥ याको ध्यान । प्रानविच राखे ॥ सिउ त्रिसूल कर धारी ॥ २ ॥ जुग जुग योगी । जन सेवे चरनपद ॥ लाये ध्यान सँभारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास । आस चरननकी ॥ दीन पतित प्रभू तारी ॥ ४ ॥

मनूआ । राम रटो मन लाई ॥ टेक ॥ याके रटे । कटे जम फंदन ॥ चौरासी नहीं पाई ॥ १ ॥ सुमिरत नाम । उतरि भौ सागर ॥ अगम नीर भरो जाई ॥ २ ॥ सेस महेस । गणेस सारदा ॥ निस दिन ध्यान लगाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास समुझ मन भजि ले ॥ नहीं पाछे पछिनाई ॥ ४ ॥

आली वनमाली । मेरे द्रीस्ट पणोरी ॥ टेक ॥ जमुनातीर कदमकी छाहन ॥ सखन संघ खणोरी ॥ १ ॥ मोर मुकुट मकरा कृत कुंडल ॥ वंसी अधर धरोरी ॥ २ ॥ गले माल वै-

जंती सोहावन॥ पटुका पीत कसो री॥३॥पुस्करदास स्याम-की सोभा ॥ चरनन प्रान वसो री ॥ ४ ॥

आनंद नंद ग्रह। बाजत बधाई ॥ टेक ॥ भादो वदी गोकुल अष्टमी । रोहनी नक्षत्र सुभ लगन सोहाई ॥ प्र-गटे दीन दयाल दयानिधी। दुष्ट दलन संतन सुखदाई ॥ १ ॥ पहिरे अभूपन गोपग्वालिनी । गुन गावत गोकुल गली जाई ॥ बाजे ताल मुरचंग पखावज । सुंदर सब्द वजे सह नाई ॥ २ ॥ भये आनंद नंदके द्वारे। सुमन दृष्ट झारि देवन लाई ॥ आये सदासिउ दरसनके हित । सिंगी नाद वणो फूकि बजाई ॥ ३ ॥ धंन धंन वृजनंद जसोमति । धंन सखा सुंदर समुदाई ॥ पुस्करदास आस जदुवरके । तन मन धन अरपन सब जाई ॥ ४ ॥

नंदजीके छैला। मग कहे तुम ठारो ॥ टेक ॥ कवन दे-सके। रंक कहावत ॥ क्या हय नाम तुमारो ॥ १ ॥ तुम नही जानत। अनोखी नई सखीआ ॥ कृष्णहय नाम हमारो ॥ २ ॥ हम जानत। तुमरो छल बल ढग ॥ गउअनके रख-वारो ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस जदुवरके ॥ तन मन धन कीनो वारो ॥ ४ ॥

सखी जल जमुना। मे केसे भरूं जाई ॥ टेक ॥ ठाढो मग-में चपला नंदके ॥ वो वणो ढीठ कधाई ॥ १ ॥ वरजोरी फोरत सिर गागर॥ चोली वंद हाथ लगाई ॥ २ ॥ लाख कहे

कोई येक न मानत ॥ जानत सबे ढिठाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम वृजजीवन ॥ ध्यान चरनपर लाई ॥ ४ ॥

सरजू तीर । विहरत चारो भाई ॥ टेक ॥ राम लछिमन । भरथ सत्रुहन ॥ चढे तुरंग कुदाई ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट । मकराकृत कुंडल ॥ करमें धनुस चढाई ॥ २ ॥ गले मणिमानिक । माल विराजे ॥ पिताम्वर लपटाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास । आस चरननकी ॥ सुख संतन दरसाई ॥ ४ ॥

जसोमत अव ना । वसो तेरी नगरी॥ टेक ॥तुमरो ढोठा । ठग ठाकुर हय॥फोरत सवकी गगरी ॥ १ ॥ वरजोरी मानत नही काहू ॥ सखिन पुकारत सगरी ॥ २ ॥ उच नीच । जनत नही काहू ॥ अवसे ढीठ वडो रगरी ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ प्रेमविवस रस झगरी ॥ ४ ॥

अति आनंद । नंदसुतके रे ॥ टेक ॥ स्यावली सूरत । मोहनी मूरत ॥ वाके सिरपेच मरोरे ॥ १ ॥ जगमगात । काननकी कुंडल ॥ पन्ना नग हरे जडे रे ॥ २ ॥ शंख चक्र । गदा पदुम विराजे ॥ गले मोतिनमाल पडे रे ॥ ३ ॥ पुस्करदास । आस जदुनंदन ॥ चरनन ध्यान लगे रे ॥ ४ ॥

मन हरी लीनो । मोहन मनरसिआ ॥ टेक ॥ नीर भरन गई । जमुना तीरमें ॥ वंसीवट वाजी वॅसिआ ॥ १ ॥ सुनी स्रवनन । वंसीकी धुनि सुनि ॥ होइ व्याकुल जमुना धसीआ ॥ २ ॥ तन मन सुधि वुधि । रही नही कछु ॥ निरखि

स्याम मन हसीआ ॥ ३ ॥ पुस्करदासको । आस स्यामसुख॥ चरनकवल मन फसीआ ॥ ४ ॥

समुझ समुझ मन भजु रघुवीरा ॥ टेक॥ जो मन श्री-रघुवीर न भजिये ॥ पै हो अति दुख पीरा ॥ १ ॥ कोटि जतनसे । नरतन पाये ॥ भूले जग भौभीरा ॥ २ ॥ मात पिता त्रिआ । पुत्र तुमारो ॥ कोउ नां जात सभीर ॥ ३ ॥ पुस्करदास । आस चरननकी ॥ कटे सकल तन पीर ॥ ४ ॥

येक सुंदर स्याम नाम बहु तेरो ॥ टेक ॥ सिउ ब्रह्मा । याको पार न पावे ॥ सेस सहसमुख हेरो ॥ १॥ नारद सारद । विद्या बल गनपती ॥ सुमिरत नाम सवेरो ॥२॥ युग युग योगी जन । जपत तपत हे ॥ ध्यान लगाय घनेरो॥३॥पुस्करदास। आस चरननकी ॥ कवी पार न पावत हेरो ॥ ४ ॥

वीर हनुमान । अतुल वलवान ॥ टेक ॥ करी वीरताई बल । गये पताले ॥ महिरावन मारे मान ॥ १ ॥ करी वीर वल । कूदि गये सागर ॥ लंका जैसे फूके मसान ॥ २ ॥ लाये सजीवन । सहित धवलागिर ॥ लछिमन प्रान वचान॥ ३ ॥ पुस्करदास । आस रघुवरके ॥ कीनो हरीगुन गान ॥ ४ ॥

हे मन राम । कृष्ण गुन गावो ॥ टेक ॥ गावो पावो । सुरपुर जावो ॥ जोतिमे जोति समावो ॥ १ ॥ वाल्मीक वो धू । प्रहलादे ॥ नाम सुमिरि जस छावो ॥ २ ॥ सूर कवीर । दास तुलसी जन ॥ मीराके मन भावो ॥३ ॥ पुस्करदासके । रामकृष्ण सुख ॥ दूजो नहीं मन आवो ॥ ४ ॥

जीवन जगमें। नाम अधारा॥ टेक॥ हे मन जीवन। जन्म सुफल करू॥ उतरि जाव भौपारा॥ १॥ जो जन तरि गये। नाम सुमिरके॥ नहीं बूडे मझे धारा॥ २॥ यह तनको। अभिमान न कीजे॥ पलमे होत हय न्यारा॥ ॥ ३॥ पुस्करदास। आस करो हरीको॥ ध्यान चरनपर डारा॥ ४॥

करो भरोसा। मन रामको भारी॥ टेक॥ कीनो भरोसा। मनसे प्रहलादे। हरी हरनाकुस फारी॥ १॥ कीनो भरोसा समरविच पंछी। घंटा टूटि महि डारी॥ २॥ हरीको राखी। भरोसा द्रोपती। प्रभू अंमर ढेर संभारी॥ ३॥ भारी भरोसा॥ राखे व्रजवासी। गिरवर हरी नखपर धारी॥ ४॥ मीरा मनसे। सुमिरे गिरधरको। विप अमृत सुख डारी॥५॥ भारी भरोसा। धरो ध्रू वालक। प्रभू सुरपुरराज संभारी॥ ६॥ जो जन राखी। भरोसा हरीको। भये भक्त अधिकारी॥७॥ पुस्करदासकहे करजोरे। ध्यान चरनपर डारी॥ ८॥

सुख मन। सरन रामके जाये॥ टेक॥ जो जन सरन। गये ताकि हरिके॥ कोटिन विघन नसाये॥ १॥ जाय सरन जो। हरे दुख वाको॥ अमरलोकपद पाये॥२॥ वेद पुरान। मुदित मन गावत॥ सेस अंत नही पाये॥३॥ पुस्करदास आस करो हरीसे॥ नही पाछे पछिताये॥ ४॥

श्रीहनुमत वीर। पायक यक रामको॥ टेक॥ करी अतुलित वल। पैठि पताले। लाये भुजनपर दोउ वलवानको॥ १॥

सिआसुधि लेन। कूदि गये सागर। लंका फूकी जयसे जरत मसानको॥ २॥ लछिमन प्रान। उबारन कारन। साहित सजीवन। धवलागिर आनको ॥ ३ ॥ पुस्करदास । आस रघुवरके। ध्यानचरनपर लाये प्रानको ॥ ४ ॥

कहे मन राम । विसारे तू अंधे॥ टेक॥ कोटि जतनसे दुर्लभ तन पाये। भूलि गये जग धंधे ॥१॥ रामनाममें। दाम न लागे। जपत कटे जमफंदे ॥ २ ॥ औसर चूकि। चहो फिर नाही। पछिते हो तू वंदे ॥३॥ पुस्करदास आस चरननकी। विन गुन गने सव गंदे ॥ ४ ॥

मूढ मन रामको सुरत विसारे॥ टेक ॥ याको जपत। सुर नर मुनि गंधर्व। ब्रह्मा वेद पुकारे ॥१॥ स्यामली सूरत। मोहनी मूरत। कोटिन काम लजारे ॥२॥ दुष्टदलन। भक्तन हितकारी। चार भुजा कर धारे॥३॥ पुस्करदास। कहे कर जोरे। जीती वाजी हारे॥ ४॥

हरी विन कौन। हरे पीर तेरो॥ टेक॥ सुनु मन स्रवनन वो धू प्रहलादे। अचलराज छत्र फेरो॥ १ ॥ बूडत व्रज गिर नखपर धारे। ग्वाल कृष्णको टेरो॥ २ ॥ सभावीच द्रोपदि पति राखे। प्रभु अंमर ढेर चहु फेरो ॥ ३॥ पुस्करदास। आस करो हरीसो। दूजो आस न हेरो॥ ४ ॥

भजु मन राघे। रवन हितकारी॥ टेक ॥याके भजेसे। जावो नही जंपुर। कोटिन भ्रम भय टारी॥ १ ॥ बूडतही व्रज। आपु वचाये। नखपर गिरवर धारी॥ २॥ कंस पछारे। असुर

सब मारे । देव सुमन झरि डारी॥३॥ पुस्करदास । आस नंद-नंदन । तन मन धन किवो वारी ॥ ४ ॥

श्रीअवधराज । मेटे भौभारी ॥ टेक ॥ राखो लाज।सिआ-जीको जग्यमें । प्रभू धनुष खंड करि डारी ॥१॥ सरन आय । सुग्रीव पुकारे । प्रभू वाल वधन करि डारी ॥ २ ॥ नृभे किवो जन भक्त भभीषन । दससुखमस्तक फारी ॥३॥ पुस्करदास । प्रभू संतन सुख धावे । चार भुजा कर धारी॥ ४ ॥

अवधपति । दसरथ सुत चारी ॥ टेक ॥ राम लछिमन । भरत सत्रहुन ॥ अस्त्र सस्त्र कर धारी ॥ १ ॥ विहरत सरजू । तीर वीर वो ॥ क्रीट मुकुट छवि वारी ॥ २ ॥ चढे तुरंग । सव अंग अभूषन ॥मुख कोटिन भान लजारी ॥ ३ ॥ पुस्क-रदास । सदा सुख संतन ॥ भक्तनके हितकारी ॥ ४ ॥

हित करो हरीसे । ये मन वावरो ॥ टेक ॥ जो तुम हरीसे। हित ना करि हो ॥ फिरो विकल वन धावरो ॥ १ ॥ हरीके सरन । हरन भौभंजन ॥ सव सुख फल छिन पावरो ॥ २ ॥ पुस्करदास । आस मति छाडो ॥ भूलि भटको मति जावरो ॥ ३ ॥

जल कैसे भरो । ठाढो नंदके लाल ॥ टेक ॥ मधुरी वेन । चतुर चित वाको॥सखा संघ ग्वाल वाल ॥१॥मोर मुकुटकी। सोभा सीसपर ॥ गले वैजंती माल ॥ २ ॥ स्यावली सूरत । मोहनी मूरत ॥ पान भरे दोउ गाल ॥ ३ ॥ पुस्करदास । सखिन सुख मोहन ॥ ध्यान चरनपर डाल ॥ ४ ॥

भजु मन जानकी। जीवन राम ॥टेक ॥ याके जपे सुख। होत चहूं दिस ॥ पूरन करे सब काम ॥ १ ॥ ध्रू प्रह्लाद। भभीपन भावे ॥ पाये पद निरवान ॥ २ ॥ सुमिरत सेस। महेस ब्रह्मादिक ॥ वेद पढे सुख हाम ॥ ३ ॥ पुस्करदास। चहो सुख जिआको ॥ चरनकमल सो काम ॥ ४ ॥

आली वनमाली। हरो मन मेरो ॥ टेक ॥ मे जल जसुना। भरन जात री॥ आय अचानक घेरो॥१॥गागर पटक झटक पट पकडो ॥ झगडो प्रेकको हेरो ॥ २ ॥ पुस्करदास। स्याम सुख सबही ॥ ढोठा ढीठ नंदकेरो ॥ ३ ॥

करो मन। हरीसे हेत सवेरो ॥ टेक ॥ जौ तुम हरीसे। हेत न करि हो ॥ फिर चौरासी फेरो ॥ १ ॥ दुर्लभ तन। पाये क्या भूलो ॥ खडो काल तोहि घेरो ॥ २ ॥ पुस्करदास। आस मति छाडो। सब सुख होत घनेरो॥ ३ ॥

विहरत। दसरथसुत सरजू तीर ॥ टेक ॥ राम लच्छिमन। भरत सत्रुहुन ॥संघ सखनकी भीर ॥ १ ॥ करी असनान। कृआ नित्य ध्यान करी॥सरजू सोहावन नीर॥२॥चारो वीर। रनधीर वॅकुडे ॥ लसे मणि मानिक हीर ॥ ३ ॥ पुस्करदास। निरखि सुख संतन ॥ ध्यान चरन गंभीर ॥ ४ ॥

श्रीरघुवर प्यारे। सुरत ले हमारी ॥ टेक ॥ जबसे सुरत तेहारो देखी ॥ नही भावे घरवारी ॥ १ ॥ दिन नही चेन रात नहीं निद्रा ॥ तुमपर तन मनवारी ॥२॥ पुस्करदास वस प्रेम जनकपुर ॥ सब सुख सुरतमें हारी ॥ ३ ॥

श्रीहनुमत वीर। हरो भौभीर ॥ टेक ॥ करी वीरताई वल फारी धरनीको ॥ ल्याये भुजन दोउ वीर ॥ १ ॥ सोक नेवारे सिआ माताको ॥ कूदे सागरनीर ॥ २ ॥ वाग उजारी असुर संघारी ॥ लंका जारी रनधीर ॥ ३ ॥ सक्तीवान नेवारन कारन ॥ ल्याये धवलागीर ॥ ४ ॥ पुस्करदास आस रघुवरके ॥ गुन गावत गंभीर ॥ ५ ॥

भोर भये गये। श्रीजमुनातीर ॥ टेक ॥ सुंदर स्याम सलोनेसे ढोठा ॥ वलदाउ वणो वीर ॥ १ ॥ रोटी मोटी माखन मिसिरी ॥ पिये सोहावन नीर ॥ २ ॥ गउअन वन डोलत वोलत ॥ ठाढे धीर संभीर ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस जदुवरके ॥ प्रभू हरत सकल भौ भीर ॥ ४ ॥

श्रीगुरुचरन । हरे भौ भारी ॥ टेक ॥ गुरुचरननको राखो चित चातुर ॥ यह भौ पार उतारी ॥ १ ॥ सुमिरत सुख सव छाये जक्तमे ॥ काल फासको फारी ॥ २ ॥ जेहिं चितवो जेहि अभे करो तुम ॥ सुरपुर धाम सिधारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ तन मन धन करो वारी ॥ ४ ॥

अमर हो जगसे। हरीगुन गावो ॥ टेक ॥ गाय गाय गोविंद रिझावो ॥ हरी अपने हित लावो ॥ १ ॥ मन माने जाने सो लेतू ॥ अमरलोक पद पावो ॥ २ ॥ जमको ग्रास त्रास नहीं तोही ॥ भौसागर तरि जावो ॥ ३ ॥ पुस्करदास विस्वास रामके ॥ नहीं दूजो मन भावो ॥ ४ ॥

समुझ मन यह तन। नहीं तेरो रहिये ॥ टेक ॥ दुरलभ तन तुम वृथा मति खोवो ॥ रामनाम मुख कहिये ॥ १ ॥ कामक्रोधकी वान बचावो ॥ वचन सबेको सहिये ॥२॥ जेहि चितवो जेहि अभे करो तुम ॥ सब सुख जगमें लहिये ॥ ३ ॥ पुस्करदास रहु आस रामके॥कालत्रासको दहिये ॥ ४ ॥

माया मति। भूलो चितचातुर ॥ टेक ॥ ना रहे माया ना रहे काया ॥ ना रहो कमवस आतुर ॥ १ ॥ नृभे गुन गावो गोविंदको ॥ ना रहो जगसे वातुर ॥ २ ॥ काया नृमल पाये मनुजतन ॥ चूकि चहो नहीं घातुर ॥ ३ ॥ पुस्करदास विचार कहत है ॥ समुझ समुझ मन तातुर ॥ ४ ॥

विहरत कृष्ण। बलदाउ वीर ॥ टेक ॥ वंसीवट तटवो कालिंदी ॥ संघ सखनकी भीर ॥ १ ॥ करमें लकुट मुकुट सिर सोहे ॥ गले बिच मुकतन हीर ॥ २ ॥ टेरत गैया भैआ बलदाउ ॥ सबे पिआवत नीर ॥ ३ ॥ गावत राग बजावत वंसी ॥ हरत सकल तनपीर ॥ ४ ॥ पुस्करदास निरखि सुखसंतन ॥ ध्यान चरन गंभीर ॥ ५ ॥

अति विचित्र सिउ। सदा सोहाई ॥ टेक ॥ याके जटनबीच श्रीगंगा ॥ सेस नाग लपटाई ॥ १ ॥ माथे चंद्र भाल छवि सोहे ॥ कुंडल फनन लगाई ॥ २ ॥ हय त्रिनेत्र छवी लाल सोहावन ॥ मुंडमाल गले भाई ॥ ३ ॥ कर त्रिसूल डमरू डंवाजे ॥ राजे गौरी छबी छाई ॥ ४ ॥ पुस्करदास आस सिउ चरनन ॥ हरत सकल दुखदाई ॥ ५ ॥

रटो मन राम। स्याम सुखदाई ॥ टेक॥ जेहि सुमिरे सुख होत चहुं दिस॥ कीरत जगमें छाई॥ १ ॥ यह माया काया दिन थोरे॥ औसर चूकि पछिताई ॥ २॥ सेस महेस ब्रह्मादिक सेवे॥ नारद जस गुन गाई॥३॥ पुस्करदास प्रभु संतनके हित॥ रूप अनेक बनाई॥ ४॥

सिआ रघुवीर। अरज सुनु मोरी॥ टेक॥ सव तजि कुटुम सरन हों तेरे॥ भक्ति भजन सुखढेरी॥ १॥ सुनहु स्रवन तुम दीन दयानिधि॥ जसकी रत जग तेरी॥ २ ॥ निसु दिन आस वास चरनन चित॥ रोम रोम रहों हेरी॥ ३॥ पुस्करदासं कहे कर जोरे॥ ध्यान चरनपर घेरी॥ ४॥

पीपा परम। सनेही हरीके॥ टेक॥ वैठि गये सागर रतनागर॥ लाये संख चक्र कर धरिके॥ १॥ वाही छाप संतन भुज लागे॥ चौरासी नहि जै हो जरिके ॥ २॥ सास्त्र पुरान वखानत महिमा॥ कवि ग्यानी गावत गुन करिके॥ ३ ॥ पुस्करदास आस जदुनंदन॥ वंदन कटे सवे भौभरिके ॥ ४॥

हरीपद काहेको। विसारे मन बावरे ॥ टेक॥ क्या माया मन फिरत भुलाने॥ वृथा तन धोखे धावरे ॥ १॥ करिके वादा आया जक्तमे॥ मोर तोर मन लाव रे॥ २॥ काल काल वो कपालते हारे॥ धोखे झपटि धारि खाव रे ॥ ३ ॥ नरदेही वहु दानयोगसे॥ राम रटो मन रावरे ॥ ४॥ पुस्करदास राम सुख सवही॥ नहीं पाछे पछिताव रे॥ ५॥

उमावर। अंग अभूपन साजे ॥ टेक ॥ सोभित जटनमें

जगतारनी श्रीगंगा ॥ चंद्र भाल छबि छाजे ॥ १ ॥ काल
व्याल सोभित कुंडल फन ॥ मुंडमाल गले गाजे ॥ २ ॥ धरि
त्रिसूल डमरू डंम वाजे ॥ कोटि काम छबी लाजे ॥ ३ ॥ अ-
तिअनंद नंदी सुरवाहन ॥ अरधंगी गौरी राजे ॥ ४ ॥ गिर
रसाल केलास सोहावन ॥ पुस्करदास सिउ ताजे ॥ ५ ॥

भजन विनु। धोखे मरि जै हो ॥ टेक ॥ काल बली ठा-
ढो सीस तेहारो ॥ ले चौरासी डैहे ॥ १ ॥ दान पुन्य जप
तप नहीं कीनो ॥ कौन ज्याव वहाँ देइ हे ॥ २ ॥ ये मन मूरख
चेत सवेरो ॥ नही पाछे पछितै हे ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे
कर जोरे ॥ रगणो राम लगै हे ॥ ४ ॥

हे मन काहेको । विसारे हरीनामा ॥ टेक ॥ सकल कार्ज
पूरन करे हरीवो ॥ अचल करे यह जामा ॥ १॥ याको जपत
सुर सेस ब्रह्मादिक ॥ सेस सहसमुख हामा ॥ २ ॥ धू
प्रहलाद याद किवो मनसे ॥ ताको दिवो पद धामा ॥ ३ ॥
पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ त्यागु जक्तको कामा ॥ ४ ॥

अभे रहो हे मन । हरीगुन गावो॥टेक॥गाय गाय गोविंद
रिझावो ॥ हरी अपने हित लावो ॥ १ ॥ जमको त्रास ग्रसे
नहीं तोही ॥ भौसागर तरि जावो ॥ २ ॥ मन माने जाने
सो ले तू ॥ अमृत फल भल खावो ॥ ३ ॥ पुस्करदास विश्वा-
स रामके ॥ तनकी ताप नसावो ॥ ४ ॥

मूढ मना । रामचरन चित लावो ॥ टेक ॥ करिके वादा
आया जक्तमें ॥ दुर्लभ तन यह पावो ॥ १ ॥ आये जक्तमें

भक्त जानकर ॥ ईस निपट विसरावो ॥ २ ॥ यह माया काया जग सपना ॥ अपना करि नहीं जावो ॥ ३ ॥ पुस्करदास हरी विनु सुमिरन ॥ चौरासींमें आवो ॥ ४ ॥

सोहावन वहे। श्रीजमुनानीर ॥ टेक ॥ वन घनलता झुकी अतिसुंदर ॥ घाट वने धीर सँभीर ॥ १ ॥ वंसीवट तट कदमकी छाहन ॥ हरो सखिनको चीर ॥ २ ॥ गउअन संघ स्याम वन विचरे॥ हरे सकल भौभीर ॥३॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ ध्यान चरन गंभीर ॥ ४ ॥

वाजत अवधपुर। आनंद वधाई ॥ टेक ॥ चैतसुदी नौमी सुभ दिन घणी ॥ वणी भाग कौसिल्या पाई ॥१॥ प्रगटे दीन-दयाल दयानिधि । दुष्टदलन संतन सुखदाई॥ भरि भरि थार दूव दधि रोचन। भंगल गावत नग्र सोहाई॥२॥ दसरथ वैठि सिंघासन आसन। भरि भरि थार मणि मानिक लुटाई॥जच-क पाय निहाल अजाचक । देत असीस हरखि गृह जाई ॥३॥ विहरत वीर तीर सरजूके। करमें धनुष वान छवि छाई ॥ पु-स्करदास अवध सुख सोभा ॥ माया तीन लोकको आई॥४॥

भजु मन। श्रीरघुवीर कृपाला ॥ टेक ॥ जेहि सुमिरे सुर सेस महेसही ॥ ब्रह्मा वेद सुख डाला ॥ १ ॥ संतनके हित प्रगटे अवधपुर ॥ भय दसरथके लाला ॥२॥ क्रीट मुकुट कर धनुस विराजे ॥ वैरीको मुख घाला ॥३॥ पुस्करदासको याही भरोसा ॥ मिटे तुरत तन ज्वाला ॥ ४ ॥

भोर भे भजो। मन सिआ रघुवीर ॥ टेक ॥ सकल सरीर

सुलभ सुख संतन ॥ पावत पद गंभीर ॥ १ ॥ परम धाम सुख अवध सोहावन ॥ तरे वहे सरजूनीर ॥ २॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ हरत सकल भौभीर ॥ ३ ॥

भैरवी समाप्त.

गौरी—अवधपुर प्रगटे श्रीरघुवीर ॥ टेक ॥ कौसिल्याके राम जन्म लिये। लखन सुमित्रा वीर ॥ केकैके भे भरत सत्रहुन। हरत सकल तनपीर ॥ १ ॥ संघ सखा सरजू तट विहरे। पिये सोहावन नीर॥ क्रीट मुकुट कर धनुस विराजे। गले गजमुकता हीर ॥ २ ॥ चरननकी रज तरी अहेल्या। पाये पद गंभीर ॥ सिउ धनु कठिन कठोर तोर प्रभू। सिआ व्याहे रनधीर ॥ ३ ॥ वालि वधे रावन कुल नासे। वांधे सागरनीर॥ पुस्करदास सदा सुख संतन । भजत भजत भयमीर ॥ ४ ॥

अवधपुर आनंद सदा सोहाई ॥ टेक ॥ राम लछिमन भरथ सत्रुहन। दसरथ सुत भय जाई ॥ भुंमिको भार उतारन कारन। प्रगटे चारों भाई ॥१॥ याके निकट वहत श्रीसरजू। लता सोहावन छाई ॥ विहरत वीर तुरंग नचावत। सोभा वरनी नहीं जाई ॥ २ ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल। करमें धनुष चढाई ॥ सुमिरत सेस महेस ब्रह्मादिक।'निस दिन ध्यान लगाई ॥ ३ ॥ धंनि धंनि दसरथ कौसिल्या। जन्म सुफल वो पाई ॥ पुस्करदास निरखि सुख संतन। आनंद मंगल गाई ॥ ४ ॥

रसना राम सिआ गुन गावो ॥ टेक ॥ नृमल काया दि-वो मनुज तन । ताहि तुमहि विसरावो ॥ माया देखि भूलि गये मनुआ । फिर पाछे पछितावो ॥ १ ॥ जेहि सुमिरे सुख होत चहूं दिंस । वेद पुरान जस गावो ॥ भये अनेक भक्त जन भजि भजि । हरी अपने हित लावो ॥ २॥ सुमिरत सेस महेस ब्रह्मादिक । नारद वीन बजावो ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन । तनकी ताप नसावो ॥ ३ ॥

सबे तजि भजु मन सिआ रघुवीर ॥ टेक ॥ अवध भुंम सुखधाम सोहावन । तरे वहे सरजू नीर ॥ चारों वीर धीर कौसिलके । संघ सखनकी भीर ॥ १ ॥ जेहि सुमिरे सुर नर मुनि गंधर्व । गावत गुन गंभीर ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुं-डल । गले गजमुकतन हीर॥ २ ॥दुष्टदलन संतन हित धावे । हरे सकल तनपीर ॥ पीतांवरकी काछे कछनी । वोढे वसंती चीर॥३॥धन धन भाग अवध पुर वासिन। नृमल कीनो सरी-र॥पुस्करदास आस रघुवरके । सव विधि भय सब मीर ॥४॥

मोहनको गोहरावत मैआ ॥ टेक ॥ रंगमहल चढि टेरे जसोदा । आवो दोउ भैआ ॥ ग्वाल सखा सब संघ सभारो । घुमरि घेरि लावो गैआ ॥ १ ॥ सुनत स्रवन वलिराम मा-तको। कूदत आवे कधैआ ॥ मात जसोदा करत आरती । दोउ कर लेत वलैआ ॥ २ ॥निरखि नंद आनंद मगन मन । हरखित गोद खेलैआ ॥ पुस्करदास स्याम ब्रजजीवन। अंधा लोचन पैआ ॥ ३ ॥

ये मन भजिये सुंदर स्याम ॥ टेक॥ निस दिन धरो ध्यान चरननपर। पूरन हो सब काम॥ नरदेही दिन रयनन भूलो। अचल करत यह जाम॥ १ ॥ जेहि चरनन सेवे सिउ ब्रह्मा। वेद पढे मुख हाम ॥ नारद सारद सहित गणेसही। रटत निरंतर नाम॥ २॥ व्रज चौरासी भुंम सोहावन। जहा किवो विस्राम॥ पुस्करदास आस चरननकी। लगे न कौडी दाम॥ ३॥

रघुवर छवि बैठे सिंघासन ॥ टेक ॥ वाम अंग सिया जनकनंदनी। मुखचंदनी सुहासन॥ दुष्टन दलि मलि गरद मिलाये। दीनो सब सुख दासन ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजे। गले पुष्पनके वासन॥ मात कौसिल्या करत आरती। प्रेममगन मन हासन॥ २॥ निरखि रूप मन मगन संतजन। तनकी ताप सब नासन॥ पुस्करदास आस चरननकी। तन मन धन सब फासन॥ ३॥

भजु मन राम नाम सुख सारो॥ टेक ॥ सब तजि भजे प्रहलाद भक्त जन। हरी हरनाकुस फारो॥ धू धारि ध्यान कीन तप भारी। अचल राज पग धारो॥ १ ॥ रामनाम भजि भक्त बिभीपन। प्रभु रावण संघारो ॥ बूडत जल गज जाय उबारो। दुष्टको मारि विदारो ॥ २ ॥ भक्त अनेक नेक भे जगमें। कहा लो कहो पुकारो॥ पुस्करदास अनंतरूप हरी। कोटिन पतितन तारो॥ ३॥

वनठन आवत अवधविहारी॥ टेक॥ चढे वेवान ग्यान

गुन सागर। भोभंजन भयहारी॥श्रीलच्छिमन मन कीवो भेह-रे। सोहत सिआ सुकुमारी॥१॥अंगद हनूमान याके पायक। चवर छत्र करे भारी ॥ सुर मुनी गंधर्व गगन चढि निरखे। पुष्पनकी वरषारी ॥२॥ निसचर कुल संघार महा प्रभू। देव-नको सुखकारी ॥ निरखि रूप मन हर्ष कौसिल्या। आरत सवन उतारी ॥ ३ ॥ धंन धंन सुख धाम अवधपुर। धंन धंन पुरजनहारी ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन,। तन मन धन किवो वारी ॥ ४ ॥

ये मन कव भजि हे रघुवीर ॥ टेक ॥ वादा करिके आया जक्तमें। गैहों गुन गंभीर॥माया देखि सव सुधि वुधि भूले। परे पेटके पीर ॥ १ ॥ वालापन तन गये तनकमें। ज्वानी भरे सरीर॥ सव रसके वस भये तूभ कुआ । जोरत मानिक हीर ॥ २ ॥ वृधपना सव तन सिथिल भे। परे खाटके तीर ॥ क-फ पित वात सव घात लगाये। पिवो गर्म करि नीर ॥ ३ ॥ तीनोपन जन जन्म गवाये। वृथा धारे सरीर ॥ पुरकरदास हरीनाम भजन विनू। कौन हरे भौभीर ॥ ४ ॥

वनसे आवत नंद छवीले ॥ टेक॥ घेरि घुमरि वनमें दोउ भैआ॥ झुकी हे लता करी ले॥ १ ॥ मुरलीमें हरी गै-अन टेरे ॥ कारी कवरी पीले ॥ २ ॥ द्वार खणी जसोमति छ-वि निरखे॥ अवो दोउ रंग रंगीले ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस नंदनंदन ॥ धाय गोदमें मेले ॥ ४ ॥

देवकीसुत जसुमतके गृह जाये ॥ टेक॥ प्रथम मारि

पूतना पिसाचिनी। खैंच वद्र ढहाये ॥ काल व्याल काली फन नाथे। फनपर निरत कराये॥१॥ अघा वकाअसुर सबही मारे। सारे माल गिराये॥ दंत उखारि मारि गज कुव्या। कंसको मारि वहाये॥२॥ करिके कोप इंद्र व्रजऊपर। प्रले मेघ पठाये॥ विकल बेहाल भे ग्वाल बाल सब। हरी नखपर गिरवर छाये ॥३॥ धंन धंन व्रजनंद जसोदा। जीवन सुफल फल पाये ॥ पुस्करदास सदा सुख व्रजमें। आनंद मंगल छाये॥४॥

ये मन भाजि हे नंदकुमार॥ टेक॥ याको सेस सहसमुख सुमिरे। नाम अनंत पुकार॥ ब्रह्मा वेद मुखनसे गावे। संकर ध्यान न डार॥१॥ गणनायक लायक सब विधिसो। नाम रटत वो सार॥ सुर मुनि सेवत चरननकी रज। जानत यह संसार॥२॥ दुष्टदलन संतन हित धावे। कोटिन पतितन तार॥ याको जोति अपार जक्तमें। भजत होइ भौ पार॥३॥ सुंदर स्याम मनोहर मूरत। मुखपर मुरली डार॥ पुस्करदास सदा सुख संतन। तन मन धन सब वार॥४॥

ठाढे मोहन मात पुकारे॥ टेक॥ बेर भई 'गउअन घेरि लावो। आवो प्रानके प्यारे॥ माखन मिसिरी कंद छोहारे। रे भोग सब न्यारे ॥ १ ॥ वनसे आवत स्याम सखनसंघ। हर मूसर वलि धारे॥ मुरलीमें हरी गउअन टेरे। धवरी कवरी कारे॥२॥ घेरि घुमारि सब गउअन लाये। वांधि वांधि सब जारे॥ मात जसोदा करत आरती। तनकी ताप नेवारे॥३॥

धंन धंन वृजभुंम सोहावन। धंन पुरवासिन सारे॥ पुस्करदास आनंद नंदजी। हरखित गोदमें डारे ॥ ४॥

मोहन गउअन दोहन धाये ॥ टेक ॥ करमें मटुकी लकुट लगाये। छानन लेत बनाये॥ टेरत धवरी कली कवरी। स्रवन सुनत उठि आये ॥ १ ॥ मंद मंद हरी छीर निकारे। मधुर मधुर सुर गाये ॥ मात जसोमति टेरे प्रभूको। मटुकी भरि ले जाये ॥ २ ॥ निरखि निहाल नंद नंदरानी। मनमानी सुख पाये॥ पुस्करदास स्याम वृजजीवन। हरखित हरीगुन गाये ॥ ३ ॥

उधोजी हरीसे कहो समुझाई ॥ टेक ॥ जवसे विछुरन किवो जदुनंदन ॥ दिन दिन सव दुख पाई ॥ १ ॥ जयसे मीन छीन रहे जलसे ॥ तलफि तलफि मरि जाई ॥ २ ॥ पुस्करदास आस जदुवरके ॥ ध्यान चरन पर लाई ॥ ३ ॥

ये मन भजि ले श्रीरघुराई ॥ टेक ॥ भजत भजत चारों पद पावो। कीरत जगमें छाई ॥ गौतम रिपकी नार अहेल्या। सिला स्राप भई जाई ॥ १ ॥ चरननकी रज लागी अंगमें। प्रभू सुरधाम पठाई ॥ सुमिरन किवो सिआ माताने। धनुस तोरि जय पाई ॥ २ ॥ सुर नर मुनि सेवत जेहि चरनन। संकर ध्यान लगाई ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन। चरन कवल वलिजाई ॥ ३ ॥

ये मन भजिये जग रखवारो ॥ टेक ॥ याको नाम अनंत अंत नहीं। सेस सहसमुख हारो ॥ सदा सारदा याद करत

मन। ब्रह्मा वेद पुकारो ॥ १ ॥ निस दिन ध्यान धरे गौरीपति। चढे भस्म अंग सारो ॥ गिरकंदरके अंदर योगी। तारत यह संसारो ॥ २ ॥ दुर्लभ काया दिवो मनुज तन। भरि भरि आय हुकारो ॥ तीनों पन तन गये तनकमें। जीती वाजी हारो ॥ ३ ॥ कोटिन पतित सरन गये वाके। ऐगुन येक न गारो ॥ पुस्करदास भजो भगवाने। नहि कोउ देवन द्वारो ॥ ४ ॥

अवधपुर सदा सुमंगल छाई ॥ टेक ॥ राजा दसरथके चार पुत्र हे। सवे गुनन अधिकाई ॥ याकी जोति अपार जक्तमें। सुर मुनि ध्यान लगाई ॥ १ ॥ विहरत वीर तीर सरजूके। चढे तुरंग कुदाई ॥ क्रीट मुकुट कर धनुस विराजे। भूषन अंग सोहाई ॥ २ ॥ रामचरन मौहरन भक्तको। लछिमन ताप नसाई ॥ भरत भलाई करत जक्तको। सत्रघुन सत्रु नसाई ॥ ३ ॥ धंन, धंन दसरथ कौसिल्या। धंन पुरवासिन पाई ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन। ध्यान चरनपर लाई ॥ ४ ॥

मोहन गउअनके संघ धावे ॥ टेक ॥ मोर मुकुट कर लकुट सोहाये ॥ मुरली सोर सुनावे ॥ १ ॥ वलदाऊ कर हर धरे मूसर ॥ सखा संघ मन भावे ॥ २ ॥ वनसे आये अति सुख पाये ॥ जसुमति कंठ लगावे ॥ ३ ॥ पुस्करदास आनंद नंदजू ॥ हरखित हिआ लगावे ॥ ४ ॥

वनसे आवत दोऊ भैआ ॥ टेक ॥ ग्वाल वाल

संघ गावत आवत ॥ नाचत थैया थैया ॥ १ ॥ निरखत रूप अनूप मात मन ॥ हरखित गोदमें लैया ॥ २ ॥ करत आरती मात जसोदा ॥ दोउ कर लेत वलैया ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस जदुवरके ॥ तनकी ताप नसैया ॥ ४ ॥

वनसे आवत नंदके लाल ॥ टेक ॥ स्यामसंघ बलदाउ भैया ॥ और सखा ग्वाल बाल ॥ १ ॥ मुरली टेर बोलावत गैअन ॥ धवरी कवरी लाल ॥ २ ॥ आये स्याम सखा संघ ठाढे ॥ जसुमति निरखि निहाल ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस नंदनंदन ॥ हरषित गोदमें डाल ॥ ४ ॥

मोहन गउअनके गोहरावे ॥ टेक ॥ धवरी कवरी काली लाली ॥ मुरलीसोर सुनावे ॥ १ ॥ ग्वाल सखा संघ रंग रंगीले ॥ गोविंदके गुन गावे ॥ २ ॥ आये स्याम सखा संघ ठाढे ॥ जसुमति कंठ लगावे ॥ ३ ॥ पुस्करदास आनंद नंदजू ॥ बृजवासिन सुख पावे ॥ ४ ॥

विहरत हरी सरजूके तीर ॥ टेक ॥ राम लच्छिमन भरथ शत्रुघन ॥ संघ सखनकी भीर ॥ १ ॥ चढे तुरंग नचावत आवत ॥ गुन गावत गंभीर ॥ २ ॥ दुष्ट दलन संतन हितकारी ॥ हरे सकल भौभीर ॥ ३ ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल ॥ धनुस बान लिये वीर ॥ ४ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ ध्यान चरन गंभीर ॥ ५ ॥

ऊधोजी हरी वेलभे संघ दासी ॥ टेक ॥ लोक लाज कुल त्यागि स्यावरो ॥ नेकन अंग उदासी ॥ १ ॥ अमृत त्यागि

रस खाय हलाहल ॥ याही समुझ मन हासी ॥ २॥ पुस्करदास स्याम विनु देखे॥ लावो गले विच फांसी ॥ ३ ॥

हे मन भजि ले श्रीरघुराई ॥ टेक ॥ भजत भजत चारों पद पावो। कीरत जगमें छाई॥ याको नाम अनंत अंत नही। वेद विदित जस जाई ॥ १ ॥ गौतम रिषकी नारि अहेल्या। सिला स्राप भै जाई ॥चरननकी रज लागी अंगमें। प्रभू सुरधाम पठाई ॥ २ ॥ धनुस तोणि ·सिआ किवो स्वयम्मर। आनंद मंगल छाई ॥ पुस्करदास आस रघुवरके। वंदी जन जस गाई ॥ ३ ॥

भजु मन रामकृष्ण सुख सांचो ॥ टेक ॥ जेहि सुमिरे सुख होत चहूं दिस। ब्रह्मा वेद मुख वांचो ॥ सेस सारदा रटत निरंतर। नारद गुन गति नाचो ॥ १ ॥ याके जपे जस कीरत जगमें। ताहिको रचना राचो ॥ युग युग योगी जन याप जपे मन। गिर कंदर· तपि आंचो ॥ २ ॥ रामकृष्ण दोउ देव दयानिधि। माखन क्षीरमें· खाँचो ॥ पुस्करदास चहो सुख जिआको। रहो चरन चित टाँचो ॥ ३ ॥

गौरी आरती—आरत कीजे दस औतारे। दुष्टदलन संतन हितकारे ॥ टेक ॥ प्रथम आरती मच्छरूपको ॥ संखासुरको वधन करि डारे ॥ १ ॥ दूजे आरती कच्छरूपको ॥ रतनागर सागर मथि डारे ॥ २ ॥ तीजे आरती वाराहरूपको ॥ हरन्याक्षको हति कर डारे ॥ ३ ॥ चौथी आरती नरसिंघरूपको ॥ हरनाकुसको वोद्र विदारे ॥ ४ ॥ पचई आरती वा-

नरूपको ॥ राजा वलिके द्वारे ठारे ॥ ५ ॥ छठई आरती परसरामको ॥ क्षत्री वंस निक्षत्र करि डारे ॥ ६ ॥ सतई आरती रामरूपको ॥ रावणके दस मस्तक फारे ॥ ७ ॥ अठई आरती कृष्णरूपको ॥ झटकि केस वो कंस पछारे ॥ ८ ॥ नवई आरती वौधरूपको ॥ श्रीजगन्नाथ जगके रखवारे ॥ ९ ॥ दसई आरती कलंकीरूपको ॥ पुस्करदास प्रभू पतितन तारे ॥ १० ॥

सैन आरती—आरत सैन स्यामकी कीजे। तन मन धन अरपन करि दीजे ॥ टेक ॥ प्रेमसहित रसना गुन गावो ॥ जीवन जन्म सुफल करि लीजे ॥ १ ॥ नाम अनंत अंत नहीं याको ॥ भक्तनके हित हरी हिआ भीजे ॥ २ ॥ चारों दिसा देवनकी चौकी ॥ सनमुख हनुमत वीर परीजे ॥३॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा ॥ मन लोभा प्याला भरि पीजे ॥ ४ ॥

भजो मन सिआवर राधावर स्याम ॥ टेक ॥ जाहि भजे सिउ सेस ब्रह्मादिक। पढत वेद मुख हाम ॥ जपत जाप योगी जन जुग जुग। नृमल करत यह जाम ॥ १ ॥ सिआवर देवन वंदनेवारे। मारे असुर संग्राम ॥ राधावर व्याधा हरे तनकी। कंस मारि विस्राम ॥ २ ॥ सिआवर राम कामप्रद पूरण। अवधपुरी सुख धाम ॥ राधावर हे नाम कृष्णजी। वृज चौरासी धाम ॥ ३ ॥ सिआवरके चरनन चित लावो। पावो पूरन काम ॥ पुस्करदास राधावर मोहर। चार भुजा कर थाम ॥ ४ ॥

भजो मन सुंदर जुगल किसोर ॥ टेक ॥ सुंदर स्याम मनोहर जोणी ॥ चितवनमें चित चोर ॥ १ ॥ झुकी लता अति सघन सोहाये ॥ मुरली बजे सुख सोर ॥ २ ॥ कालिंदी तट वट वंसीके ॥ कुहुकत कोकिल मोर ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ प्रभू राखो सरन निहोर ॥ ४ ॥

सिआवर रतनसिंघासन राजे ॥टेक॥ अति अनूप सूरत हे मूरत ॥ कोटि भान मुख लाजे ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल ॥ धनुस वान कर गाजे ॥ २ ॥ वाम अंग श्रीजनकनंदनी ॥ अंग अभूपन साजे ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ नृमल हृदे मन मॉजे ॥ ४ ॥

भरोसा अंजनीकुमारको भारी ॥टेक॥कीनो भरोसा राम लखन दोउ । पैठि पताले जारी ॥ असुर मारि संघारि कीच किवो । रुधिरन नदी वहारी ॥१॥ सोकनेवारे सारे सिआकी । अदभूत रूप देखारी ॥ वाग उजारी असुर संघारी । कंचन लंका जारी ॥२ ॥ सक्तीवान नेवारन कारन । धवलागीर उठारी॥मूल सजीवन धोंटि घांटिके। लछिमन वीर उठारी॥३॥ निस दिन रहत सरन सिआवरके । चरनन ध्यान लगारी ॥ पुस्करदास हनुमानजी भरोसे । कोटिन विघनन सारी ॥ ४ ॥

हरखि मन गुन गावो गोपाल ॥ टेक ॥ याके गुन गावत सुख पावत ॥ निस दिन रहत वोलाल ॥ १ ॥ कोटिन पतित गाय गुन तरि गये ॥ छूटे मोह भ्रमजाल ॥ २ ॥ निस दिन

सुमिरन सेस सिंभु करे ॥ गालव जाय निहाल ॥ ३ ॥ पुस्कर-
दास राखु चित चरनन ॥ हरी भक्तन गले माल ॥ ४ ॥

रघुवर सब तजि सरन तेहारी ॥ टेक ॥ राखो लाज
जक्तमें तनकी ॥ सव अपराध बिसारी ॥ १ ॥ नही विद्याबल
नही सुखसंपति ॥ निस दिन भरे बेकारी ॥ २ ॥ करों पुकार
हुकार हरी सुनू ॥ तुम भक्तन हितकारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास
कहे कर जोरे ॥ प्रभू दीन पतित तुम तारी ॥ ४ ॥

स्रवनन सुनोहू टेर गिरधारी ॥ टेक ॥ सुनी टेर जल
बूडत गजको ॥ धाये नाथ उबारी ॥ १ ॥ सुनी टेर सभा-
विच द्रोपती ॥ प्रभू अम्मर ढेर सँभारी ॥ २ ॥ टेरत मीरा
मनसे गिरधरको ॥ विष अम्रत मुख डारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास
आस चरननकी ॥ तन मन धन किवो वारी ॥ ४ ॥

गौरी आरती—आरति करि हरीसेन सँभारो । तन मन
धन चरनन चित डारो ॥ टेक ॥ मंद मंद करि चँवर ढुरावो ॥
चापु चरन तनताप नेवारो ॥ १ ॥ जेहि चितवो जेहि अभे
करो तुम ॥ कालफासको वास न मारो ॥ २ ॥ इत उत तेरो
तरत दोऊ दिस ॥ येहि सरीर सुरधाम सिधारो ॥ ३ ॥ पुस्क-
रदास आस करू प्रभुसे ॥ कोटि पतित जाय सरन
वोतारो ॥ ४ ॥

आरत कीजे हरीगुन गावो । गाइ गाइ गोविंद रिझावो
॥ टेक ॥ कंचन थार कपूरकी वाती ॥ तुलसीदल फल फू-
ल चढावो ॥ १ ॥ भूपन अंग बहु रंग बसन लसि ॥ छप्पन

विंजन भोग लगावो ॥ २ ॥ सुंदर सेज सँवारि झारिके ॥ प्रेमसहित हरिको पौढावो ॥ ३ ॥ पुस्करदास राखु चित चरनन ॥ मंद मंद करि चौर ढुरावो ॥ ४ ॥

गौरी समाप्त.

ठुमरी—श्रीकृष्णचंद्र त्रिभुअन धन स्वामी । अलख निरंजन अंतरजामी ॥ टेक ॥ भक्तहेत हित करत सदावो ॥ दुष्ट विदारत पठवत धामी ॥ १ ॥ निस दिन सेस महेस याद करे ॥ ब्रह्मा वेद पढत मुख हामी ॥ २ ॥ नारद सारद सुरवो गणपती ॥ जिअसे जपत जुग जुग तेरो नामी ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ प्रभू तारो अधम कुटिल खल कामी ॥ ४ ॥

प्रगट भये श्रीराम अवधपुर । दसरथनंदन अनि कहाये ॥ टेक ॥ धंन धंन भे भाग कौसिल्या ॥ याके गर्भ मास दस छाये ॥ १ ॥ चैत सुदी नौमी सुभ दिनी घणी । आनंद मंगल सदा सोहाये ॥ दसरथ बैठि सिंहासन आसन । भरि भरि मोतिन थार लुटाये ॥ २ ॥ होत कोलाहल भारी भवनमें । साज समाज वजे सहनाये ॥ जाचक होत निहाल अजाचक । देत असीस हरखि हिआ जाये ॥ ३ ॥ दिन दिन दीनानाथ भौभंजन । मनरंजन संतन सुख पाये ॥ पुस्करदास विस्वास रामके । देवनबंद छोडावन धाये ॥ ४ ॥

राम सिआवर सुंदर माई । दुष्टदलन संतन सुख दाई ॥ टेक ॥ याको जस सुर नर मुनि गावत ॥ सेस महेस

सदा लौलाई ॥ १ ॥ वेद पुरान वखानत महिमा ॥ चौदा भुअन जोति जगछाई ॥ २ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ धंन धंन अवध सवे सुखदाई ॥ ३ ॥

श्रीराधावर कुंजविहारी । नटनागर गिरवर गिरधारी ॥ टेक ॥ मोर मुकुट छवि अटकि सीसपर ॥ कानन कुंडल झलकत न्यारी ॥ १ ॥ मुरली धरे अधर छवि सोभित ॥ जेहि सुर विकल भई नर नारी ॥ २ ॥ गले माल मुक्तामणि सोहे ॥ पीताम्वर वोढे पट जारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास दरसके लोभी ॥ तन मन धन वनपर कीनो वारी ॥ ४ ॥

सुंदर स्याम सॉवली* मूरत । अलख निरंजन अंतरजामी ॥टेक॥ याको रूप कोउ पार न पावे ॥ सेस सहसमुख सहसयपे नामी ॥१॥ सिउ सनकादि यादि ब्रह्मादिक ॥ वेद पुरान वखानत हामी ॥ २ ॥ जपत योग योगीजन याको ॥ ताको प्रभु पठवत सुरधामी ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ नाम अनंतन त्रिभुअन थामी ॥ ४ ॥

कृष्ण तेरो चरन हरन भौमोचन । दुष्टदलन संतन सुखकारी ॥ टेक ॥ व्रजमें कंस कुठार मारिके ॥ और दुष्ट सव दल संघारी ॥ १ ॥ ईंद्रहि कोप प्रले कीनो व्रजमें ॥ लिवो गिर उठाय नखपर हरी धारी ॥२॥ सभावीच द्रोपति पति राखो ॥ खैंचत चीर दुसासन हारी॥३॥ पुस्करदास आस चरननकी॥ प्रभू महिमा त्रिभुअनमें विस्तारी ॥ ४ ॥

पयक हनुमान सिआ रामजीके प्यारे । दुरजन दलि मलि

गरदमें डारे ॥ टेक ॥ अतुलित वल करि मारि महि रावन ॥ रुधिरन नदी वहि जात पनारे ॥ १ ॥ अतुलित वलकरी कूदि गये सागर ॥ सिआ सुधि लाये गढ लंका जारे ॥२॥ वल करी धरि लाये धवलागिर ॥ लखनको प्रान वो अय उबारे ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ कष्ट परे प्रभू जाय नेवारे ॥ ४ ॥

देखो री छवी स्याम गौर तन । ये दोउ कुअर मुनिन संघ आये ॥ टेक ॥ जनक कठिन प्रन कीनो धनुस जग। देस देसके भूपति आये ॥ वडे वडे भूप वाह बल आगर। चढि चढि वेवानन सभामें जाये ॥ १ ॥ सिउ धनु कठिन उठावहि भूपती। तिलभरि भुंम ना देत छोडाये ॥ सुंदर राम काम सतसुंदर। करपर धरि हरी तोरि वहाये ॥ ॥ २ ॥ भये सोर घन घोर सरासन। आसन छोणि परस-राम आये ॥ कंपित मे सब देखि रूपको। कादर भूप सव रूप छिपाये ॥ ३ ॥ धंन धंन भाग सकल पुरवासिन। दासिन वनि सखी वर सव पाये ॥ पुस्करदास सुख सिआ स्वयंवर। देवन सकल दुंदुभी वजाये ॥ ४ ॥

हे वृजरासिआ रसिक विहारी। मोहि लिवो सव नर वो नारी ॥ टेक ॥ वंसी वजाय सुनाय स्रवननमें ॥ फिरत वेहाल हाल मतवारी ॥ १ ॥ वंसीकी सब्द सुनी सुर मुनिजन ॥ छूटे ध्यान तन सुधि ना सँभारी ॥ २ ॥ वंसीकी सब्द सुनि रवि-रथ रोके ॥ चलत न सिंधु रहे मगहारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा ॥ तन मन धन वनपर कीनो वारी ॥ ४ ॥

अंजनीकुमार सुनु स्रवन हमार में। कहो पुकार अरज सुनि लीजे ॥ टेक ॥ चाहो ना सुख संपति यह तनमें ॥ वार वार रघुपति पद दीजे ॥ १ ॥ दोउ कर जोरे अरज सुनु मोरे॥ यह वरदान कृपा हो कीजे ॥ २ ॥ यह अरजी मेरी मरजी तुमारी ॥ मनभावे स्रवनन सुनि लीजे ॥ ३ ॥ पुस्करदास-की आस येही हे ॥ हरी जस प्रेम पिआला पीजे ॥ ४ ॥

वरसानेमें जन्म लिवो हे। श्रीवृषभानजूके राधे लली ॥ ॥ टेक ॥ सुनी स्रवन सखिअन अँखिअन भरी ॥ झुंड झुंड चली जात गली॥१॥ कंचन थार भरे मणि मोतिन ॥ चौमुख दीपक जोरि चली ॥ २ ॥ जाय सखिन वृपभान द्वार खणी ॥ सुख मंगल सब गाय भली ॥३॥ पुस्करदास आस राधावर॥ सुख पाये नंदलाल बली ॥ ४ ॥

हो जादे आलकृपाल सदासिउ। देदे दान भक्तन हितकारी ॥ टेक ॥ जटन बीच श्रीगंगकी सोभा ॥ छवि चंद्र भाल ल-लाट उजारी ॥ १ ॥ तीन नेत्र हय लाल तुमारो ॥ गले मुंड-माल तन भस्महिं डारी॥२॥ डिमकि डिमकि डमरू डंवाजे ॥ कर धरि त्रिसूल वैरीमुख फारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ मोहि अस पतित अनेकन तारी ॥ ४ ॥

देखो री सखी आजु भरि भरि लोचन।श्रीराम लखन सि-आ जनकदुलारी ॥ टेक ॥ पिता वचन भेटो नहि मनसे ॥ चौदा बरष वनवास सिधारी ॥ १ ॥ जटाजूट मुनिवरके भेस धरे ॥ धनुस वान करमें प्रचारी ॥ २ ॥ कंद मूल फल फूल अ-

धार करी ॥ कोमल चरन चलत मृदु हारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास प्रभु संतहित प्रगटे ॥ देवनबंद छोडाये भारी ॥ ४ ॥

कब आवे ऊधो कृष्ण मुरारी । विना दरस धृग जिवन हमारी ॥ टेक ॥ जबसे हरी हिआसे बिछुरन किवो ॥ जबसे सीसं जटा भे भारी ॥ १ ॥ मन वैराग जोगिन वन वैठी ॥ ध्यान लगाये रटहुं पुकारी ॥ २ ॥ पुस्करदास आस हरीको हय ॥ तन मन धन सब अरपन डारी ॥ ३ ॥

श्रीविस्वनाथके दरसनके हित । श्रीअवधराज कैलास सिधारी ॥ टेक ॥ देखि उमापति हित करि धाये ॥ मानो तृषावंत जल पारी ॥ १ ॥ कंचन मणिमय रतन सिंघासन ॥ जापर हरिको आसन धारी ॥ २ ॥ पूंछत कुसल सिंभु कौसलपती ॥ सती सहित सब कथा विस्तारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास आनंद सिआवर ॥ हरखि हृदे सिउ गालव जारी ॥ ४ ॥

हे अंजनीके लाला । अतुलित वलवाला ॥ तेरो सुजस विसाला । चोला लाल गुलाला हो ॥ टेक ॥ लाल लंगूर गदा लीनो करमें ॥ संतनहित दुरजन दलि डाला हो ॥ १ ॥ पैठि पताल दलो महिरावन ॥ ल्याये भुजनपर दसरथके वाला हो ॥ २ ॥ सिआ सुधि लेन कूदि गये सागर ॥ वाग उजारी लंका लाये ज्वाला हो ॥ ३ ॥ सक्तीवान नेवारन कारन ॥ लाये मूल सजीवन ववलागिर टाला हो ॥ ४ ॥ पुस्करदास आस रघुवरके ॥ चरन ध्यान तन मन धन घाला हो ॥ ५ ॥

रामनाम हय नृमल पाती। हे मन काहे न लावत छाती ॥ टेक ॥ यह पाती तेरे संघमें धावे ॥ जहँ जावो तहाँ संघ सँघाती ॥ १ ॥ यह पाती सुरलोक सिधारे ॥ आवा गवन रहित हो जाती ॥ २ ॥ हे मन मूरुख चेत ग्यान करू ॥ ऐसो नाम विनमोल विकाती ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ समुझ समुझ मन औसर जाती ॥ ४ ॥

मन हर लीनो स्यावरो कँधैया। जमुनातीर चरावत गैआ ॥ टेक ॥ जमुनानीर भरन गई भोरे ॥ भे उदित भान छिपि गये जोंधैआ ॥ १ ॥ वाही समें मुरलीधर मोहन ॥ संघ लिवो बलदाउ भैया ॥ २ ॥ पुस्करदास स्याम सुख सवही ॥ धंन धंन नंद जसोदा मैआ ॥ ३ ॥

संकरजी हो सुनहुँ स्रवन मोरी ॥ भक्तदान चरनन रज दीजे ॥ टेक ॥ जन्म अनेक नेक गुन गाऊँ ॥ जहाँ रहों तहाँ दाया कीजे ॥ १ ॥ कोटिन पतित सरन तकि आवे ॥ ताको तुम नृभे हो लीजे ॥ २ ॥ पुस्करदास की आस नेवारो ॥ यह सुख सारो वोवो घन वीजे ॥ ३ ॥

श्रीराम नाम सुमिरो मोरे भाई। कोटि जन्मको पातक जाई ॥ टेक ॥ रामनाम धू धरो ध्यानमें ॥ अचल राज वो सुरपुर पाई ॥ १ ॥ रामनाम भजि वाल्मीक मन ॥ ब्रह्मरूपमें जात समाई ॥ २ ॥ रामनाम प्रहलादके भाये ॥ नरसिंघ रूप हरी दरस देखाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास विन रामभजनको ॥ चौरासिमें वो जन जाई ॥ ४ ॥

श्रीराम कृष्ण कहु राम कृष्ण कहु । श्री रामकृष्ण कहु मूढ मना ॥टेक॥ श्रीराम कृष्ण कहो रहो जहाँ मना ॥ छूटि जात तेरो सब भ्रमना ॥१॥ श्रीराम कृष्ण कहो रहो जाहि विधि ॥ जपवो जोग सब याही घना ॥ २ ॥ श्रीराम कृष्ण कहो चहो जो मनमें ॥ सकल पदारथ भोगवना ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ तू हो जा प्रभुके भक्तजना ॥ ४ ॥

करू मन सेवा उमारवन ॥ कैलासपती संकर लहरी ॥ टेक॥सोभित जटन वीच है श्रीगंगा॥सोये कानन कुंडल फन जहरी ॥ १ ॥ छबि चंद्र भाल सोभित ललाटमें ॥ हसत गाल मुंडमाल ठहरी ॥ २ ॥ वज्र त्रिसूल धरे यक करमें ॥ दूजे डमरू बाजत घहरी ॥ ३ ॥ पुस्करदास दयाल सदासिउ ॥ लाये रंग विहरत पहरी ॥ ४ ॥

रघुनंदन दसरथके नंदन । भंजन धनुप जनकपुर जाई ॥ ॥टेक॥आये भूप सब देस देसके।बैठे सभामें मुहँ चिकनाई॥ लागे सिंभु सरासन तोरन । तिल भारि भुंमिना देत छोडाई ॥ १॥वीस भुजा दस सीस दसानन।तोडम धनुष उठे अकुलाई॥ लागे उठावन धनुष कठोरहि । सिरकी पेच धरनीपर आई ॥ ॥२॥ सुमिरि राम गुरू मात पिता पुनि । विस्वामित्रको सीस नवाई ॥ करपर धरी हरी तीन खंड किवो । शब्द सोर तीन लोकमें छाई ॥ ३ ॥ धंन धंन जग जनकजानकी । धंन भाग पुरवासिन पाई॥पुस्करदास सुख सिआ स्वयंमर । देव दुंदुभी वजाय गुन गाई ॥ ४ ॥

श्रीवृंदावन परम सोहावन। रहस रचो रसिआ मन भावन ॥टेक॥ लीनो संघ सखा सखी संजुत ॥ वाजत बंसी धुनी सकल सोहावन ॥ १ ॥ वंसीवट तट निकट कालिंद्री ॥ झुकी लता पुष्पनकी छावन ॥ २ ॥ वाजत ताल निहाल सबे जन ॥ मंद मंद थिरकत प्रभू पावन ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख ब्रजमें ॥ तन मन धन चरनन चित लावन॥ ४ ॥

विमल रूप सोभित गौरीपति । अंग अंगमें भूषण राजे ॥ टेक ॥ सोभित जटंन बीच श्रीगंगा ॥ लपटि भुजंग कंठमें गाजे ॥ १ ॥ लाल त्रिनेत्र ललाट छबि चंद्रमा ॥ कुंडल व्याल फनन अति छाजे ॥ २ ॥ गले माल मुंडनकी सोभा ॥ कर धरि त्रिसूल डमरू डं वाजे ॥ ३ ॥ भस्म रमाये खाये हलाहल ॥ वाम अंगमें सती बिराजे ॥ ४ ॥ पुस्करदास सदा-सिउ लहरी ॥ विहरत पहरी नंदीगन ताजे ॥ ५ ॥

हय अंजनीसुत वीर बलदायक ॥ रामकार्जे करवेको लायक ॥ टेक ॥ रावन हरि ले गये सिआको ॥ डाकि सिंधु गढ लंक जरायक ॥ १ ॥ सक्तीवान नेवारे लखनके ॥ लाये मूल सजीवन प्रान बचायक ॥ २ ॥ महि रावन रामे हरी लेगे ॥ फारि पताल गदन धुनि डायक ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस रघुवरके ॥ संतनके सुख विघुन नसायक ॥ ४ ॥

सुंदर वदन कृष्ण कमलापति । कोटि भान याके मुख लाजे ॥ टेक ॥ मोर मुकुटकी लटकि सीसपर ॥ कानन कुंडल जगमग छबि छाजे ॥ १ ॥ गले माल मणिमोतिन

मोहे ॥ संख चक्र गदा पद्म कर गाजे ॥ २ ॥ काछे कछनी पीतांबरको ॥ नूपुर घूंघुर छंम छंम वाजे ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ सुमिरत नाम कोटि भय भाजे ॥ ४ ॥

हे मन सिंभु सदा गुन गावो । गालव जावो सब सुख पावो ॥ टेक ॥ याके जपेसे जात भ्रम तनकी ॥ लख चौरासी तु ना आवो॥ १ ॥याके जपे तपे तन त्यागे ॥ लागे सोहावन कैलास-को धावो॥२॥हे मन ऐसे नाम विमल गुन ॥ गुनत गुनत तुम दास कहावो ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदासिउ दानी ॥ मन मनी सो फल तुम खावो ॥ ४ ॥

राम सिआ हिआ दीप धरो मन । यह तन तेरो फिरे ना फेरो ॥ टेक ॥ यह तन तेरो हेरो काल बली ॥ फिरत गलिनमें वान लिये घेरो ॥ १ ॥ उत्तम कर्म धर्म धरू हिआमें ॥ दिआ लिहा जैहें संघ तेरो ॥ २ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ भोरे कहे ना मानो मेरो ॥ ३ ॥

बंसी वजावत कृष्ण मुरारी । मोहे सुर मुनि व्रज नर नारी ॥ टेक ॥ सुनी स्रवन वंसीकी धुनि सुनि ॥ सखिअन फिरत हाल मतवारी॥ १ ॥सुधि वुधि कछु ना रहे तन मनकी ॥ प्रेम-वान लागत तन सारी ॥ २॥ पुस्करदास स्याम रसिक सिरो-मणि॥ तन मन धन वन पर कीनो वारी ॥ ३ ॥

अति वीर ताई वल वुद्धि हनुमान ॥ टेक ॥ करी कार-ज सिआ सोक नेवारे ॥ वाग उजारे लंका फूके मसान ॥ १ ॥ सक्तीवान नेवारन कारन ॥ मूल सजीवन धवलागिर आन

॥ २ ॥ गये पताल तोरि जमका दर ॥ लाये भुजनपर दोउ बलवान ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस रघुवरके ॥ हरखि निरखि गोविंद गुन गान ॥ ४ ॥

हे मन सिउ सिउ रटत रहो रे ॥ टेक ॥ याके जपे कटे जम फंदन ॥ निस दिन नामको जिआमें कहो रे ॥ १ ॥ याके नाम लेत भौभागे ॥ लख चौरासी छूटि जैहो रे ॥ २ ॥ याको नाम लेत जोगी जन ॥ तनकी ताप सब जात वहो रे ॥ ३ ॥ पुस्करदास चहो सुख जिआको ॥ सिंभु सुजानके चरन गहो रे ॥ ४ ॥

अंजनीसुत सिआ सुधिको लाये ॥ टेक ॥ याको जस गुन रामहिं गावत ॥ कहत भरथसो प्रेम सोहाये ॥ १ ॥ कीनो कारज करि अतुलित वल ॥ दुरजन दलि मलि गर्द मिलाये ॥ २ ॥ पुस्करदास सिआ राम सबे सुख ॥ ध्यान चरनपर हरीगुन गाये ॥ ३ ॥

रामरूप औतार अवधपुर । भक्तहेत धावत हितकारी ॥ टेक ॥ अवधपुरी सुख धाम सोहावन ॥ संतनाहित सरजू वहे वारी ॥ १ ॥ मुनिन जग्य प्रभू जाय सुफल किवो ॥ गौतम नारि स्राप सिला तारी ॥ २ ॥ सिआ सोयम्मर पावन प्रभू कीनो ॥ भंजे चाप तीन खंड डारी ॥ ३ ॥ वनमें जाय नसाय निसाचर ॥ देवनवंद सबे उवारि ॥ ४ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ सेस सारदा अंत न पारी ॥ ५ ॥

चलो सखी आजु नंदभवनमें। बाजत सोहावन आनंद वधाई ॥ टेक ॥ ग्रहग्रहसे सखिअन सुत्ति स्त्रवनन। चौमुख दीपक जोति जलाई॥कंचन थार हारपू सपनके। दधिरोचन दल दूव सोहाई ॥ १ ॥ झुकी अली सब गलिन गलीमें। मंगल गावत गोकुला जाई॥आनँद मगन गगन सुर निरखे।वरषे सुमन सकल व्रज छाई ॥२॥बैठ सिंघासन आसन नंदजू। मणि मानिक भरे थार लुटाई॥ जाचक होत निहाल अजाचक। हरखि निरखि हरिको गुन गाई ॥ ३ ॥ धंन धंन नंद धंन जसोदा। त्रिभुअन धनी मनी सुख पाई ॥ पुस्करदास आस चरननकी। देवन सकल दुंदुभी बजाई ॥ ४ ॥

रामनाम सुंदर सुखदाई। सुमिरत कोटिन पाप पराई ॥ टेक ॥ रामनाम मन वालमीक वसे ॥ ब्रह्मरूपमें जात समाई ॥ १ ॥ रामनाम मन सूरके भाये ॥ प्रभू अपने मुख कीरति गाई ॥ २ ॥ रामनाम मनं वसे कवीरा ॥ जलही रूपमें जात समाई ॥ ३ ॥ रामनाम मन तुलसीके भाये ॥ जाकी कीरत जगमें छाई ॥ ४ ॥ पुस्करदास मन रामनाम भजो ॥ समुझ समुझ मन नहीं पछिताई ॥ ५ ॥

कृपानिधान उमापति संकर। सुनो स्रवन यक विनै हमारी ॥ टेक ॥ रहे ध्यान चित चरनते हारो॥ भक्तदान दे भौ सब हारी ॥ १ ॥ चाहों ना सुख संपति माया। काया कलिमल भरे वेकारी ॥ पुस्करदासकी याही विंनती। कोटिन पतित सरन गये तारी ॥ २ ॥

सुनहु कृष्ण तुम नंददुलारे। कब मेटो तनताप हमारे ॥ टेक ॥ हरो कष्ट व्रजग्वाल वालके ॥ कियो इंद्रकोप गिरवर नख धारे ॥ १ ॥ हरो कष्ट द्रोपती सभामें ॥ खैंचत चीर दुसासन हारे ॥ २ ॥ हरो कष्ट मीरा मन गिरधर ॥ विष अमृत हो मुखमें डारे ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ तन मन धन तुमपर कीनो वारे ॥ ४ ॥

रामनाम सुमिरन करो भाई। नरदेही जग सुपल हो जाई ॥ टेक ॥ जो तुम सुमिरन राम ना करि हो ॥ परि हो तुम चौरासी जाई ॥ १ ॥ यह माया काया कलिमल भरे ॥ परे फंद जैसे जाल लाई ॥ २ ॥ अजहूं चेत हेत करो हरीसो ॥ पुस्करदास कहे समुझाई ॥ ३ ॥

नंदजीके लाला माथे केसरको भाला डाला। मुरली अधर धरे वनमें वजाई हो ॥ टेक ॥ सोभित सीसपर मोर मुकुटकी ॥ कानन कुंडल लागत सोहाई हो ॥ १ ॥ गले माल वनमाल विराजे ॥ उर पीतांवरकी छवि छाई हो ॥ २ ॥ कछनी काछे चरावत वात वाछे ॥ मोहनी मूरत मनको लोभाई हो ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस जदुनंदन ॥ गोपी ग्वाल सदा सुख दाई हो ॥ ४ ॥

देखो री सखी सुंदरवर सिआजूके। याकी सोभा कछु वरनी न जाई ॥ टेक ॥ स्यावली सूरत मोहनी मूरत ॥ देखि रूप भूप सवे लोभाई ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट छवि सोहे सीसपर ॥ कानन कुंडलकी छवि छाई ॥ २ ॥ गले माल हे लालमणिनके ॥

लिये धनुस वान करमें दोउ भाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ जेहि सुमिरे सुख चहु दिस पाई ॥ ४ ॥

श्रीराम नाम रटो रे मन लाई । यह तन जैहें जैहें भाई ॥ टेक ॥ जो तुम रामनाम ना भजिये ॥ और देव जैहें जैहें ना सहाई ॥ १ ॥ खडो काल दे ताल सीसपर ॥ झटकि पटकि लैहें लैहें खाई ॥ २ ॥ बिना नाम नृमल ना काया ॥ अंग अभूषन सुगंध लैहे लाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास जग आस वास तजू ॥ सिआवर सरन लैहें लैहें लाई ॥ ४ ॥

चले अवधसे राम लखन सिआ । पितृबचन वनवासको जाये ॥ टेक ॥ सुनिके भेस देस सो बनठन ॥ याकी सोभा कवि वरनी न जाये ॥ १ ॥ फलवो फूल भोग दल तुलसी ॥ प्रेमसहित प्रभु रुचि रुचि पाये ॥ २ ॥ चित्रकूट विस्राम धाम किवो ॥ वाँदर भाल दल कटक जोहाये ॥ ३ ॥ देवनबंद फंद प्रभू काटे ॥ पुस्करदास प्रभूको जस गाये ॥ ४ ॥

राम लखन सिआ सहित सिंघासन । वैठे आसन सहित सोहाई ॥ टेक ॥ रतनजडित मंदिरकी सोभा ॥ फिरत नग्रमें राम दोहाई ॥ १ ॥ याको सेस महेस याद करे ॥ ब्रह्मा वेद मुखनसे गाई ॥ २ ॥ क्रीट मुकुटकी लटकि सीसपर ॥ गले माल मणि मोतिन लाई ॥ ३ ॥ पीत वसनकी हसन हृदेपर ॥ करपर धनुस बानवो भाई ॥ ४ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ निस दिन गुन गोविंदको गाई ॥ ५ ॥

पतित जान जिआ हिआ ना विसारो। श्रीअवधराज लगी आस घनेरो॥ टेक॥ भरि लोचन भौमोचन कीजे॥ दीजे भक्त चरन पद केरो॥ १॥ पुस्करदासकी याही विनती॥ सुनिये स्रवनन अरजी मेरो॥ २॥

स्याम सुंदर वंसीवाल री सजनी। मन हर लीनो मेरो वंसी बजाके॥ टेक॥ मैं जल जमुना भरत जात री॥ स्रवन सुनत सब तन मन थाके॥ १॥ वाही समे सुंदर मनमोहन॥ दौणि झपटि झुकि झुकि मुख झाँके॥ २॥ लाख कहूं मानत नही येको॥ ढोठा ढीठ नंदकें वाँके॥ ३॥ पुस्करदास कहे कर जोरे॥ तन मन धन अरपन कीनो वाके॥ ४॥

श्रीरामचंद दुख देखि रिपनको। अवधपुरी आपे पग धारो॥ टेक॥ विस्वामित्रको यग्य सुफल कीवो॥ गौतम नार चरनरज तारो॥ १॥ कठिन कठोर सिंभु धनु तोरे॥ और भूप लाये मुख कारो॥ २॥ वाल काल तृन वोटसे मारो॥ राज दिहो सुग्रीवको सारो॥ ३॥ पुस्करदास राम रावन वधी॥ कोटिन पतित दिवो गति पारो॥ ४॥

श्रीराधावर कुंजविहारी। राखो लाज दुख हरो हमारी॥ ॥ टेक॥ हरो सकल भौभीर भक्तकी॥ संख चक्र गदा पदुम धारी॥ १॥ जाको जस गुन गावत सिउ ब्रह्मा॥ सेस सारदा नाम पुकारी॥ २॥ जुग जुग जपत योगी जन जाको॥ ताको प्रभु सुरलोक सिधारी॥ ३॥ पुस्करदास कहे कर जोरे॥ तन मन धन उनपर कीनो वारी॥ ४॥

रामको रूप देखि सिआ मोहे। पूजन गईं जनक फुलवाई ॥ टेक ॥ हँसि हँसि पूछत सिआ सखिनसो ॥ दोउ कुअर कौन सुत जाई ॥ १ ॥ कहत सखी सुनु जनकनंदनी ॥ नृप दसरथके ये सुत भाई ॥ २ ॥ तोरन धनुंस गवन कीनो मुनि संघ ॥ जाकी सुरत सुर मुनिन लोभाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास सिआ सुनि स्रवनन ॥ सुंदर मूरत हृदे लगाई॥ ४ ॥

वंसीवट जमुनातट कुंजन । रहस रचौ मन रसिकबिहारी ॥ टेक॥ सखिन साज अंग रंग अभूषन ॥ लिवो संघ वृषभान दुलारी ॥ १ ॥ याकी सोभा त्रिभुवन मनलोभा ॥ मानो चंद्र वदन उजिआरी ॥ २ ॥ वजी बांसुरी स्रवनन सुनिके ॥ तन मन धन सब सुरत बिसारी ॥३ ॥ पुस्करदास आनंद नंदसुत ॥ धंन धंन चरन कवल बलिहारी ॥ ४ ॥

राम सुमिर ले होत सवेरा । सोवत नीद भरे क्या वेरा ॥टेक॥ यह तन दुरलभ पाये बहु विधिसे ॥ जन्म जन्म किवो जोग घनेरा ॥ १ ॥ चूके औसर सरना लागे ॥ भागे पछितै हो मन मेरा ॥ २ ॥ पुस्करदास करू आस रामको ॥ खणो काल दस द्वारा घेरा ॥ ३ ॥

कहा मान पिआ वचन हमारी । दैदे सिआ सिआ रामको प्यारी ॥ टेक ॥ जबसे रामकी सिआ हर लाये ॥ ढूंढत राम सिआ वचन पुकारी ॥ १ ॥ नरतनरूप मति भूल पिआ तुम ॥ जानतो हैं त्रिभुवन रखवारी ॥ २ ॥ सिउ ब्रह्मा याको जस

गावत ॥ सेस सारदा गनत गुन हारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास र-घुनाथ सरन विन ॥ रावन अपनो कुल संघारी ॥ ४ ॥

येसे निठुर आली कुअर कँधाई। रोके मग मेरो विच कुंजन जाई ॥ टेक ॥ में दधि वेचन जात वृंदावन ॥ छीन झपट पट मटुकी वहाई ॥ १ ॥ वरजोरी मोरी येक न मानत ॥ करकी चुरिआ सवे मसकाई ॥ २ ॥ पुस्करदास स्याम सुख सवही॥ प्रेम विवस रस वस हो धाई ॥ ३ ॥

हरो चीर नटवर गिरधारी। वैठो जाय कदमकी डारी ॥ टेक ॥ जमुनातीरे सखिनकी भीरे ॥ ठाढी सवे जल मांझ उघारी ॥ १ ॥ वोले वचन मधुरी मनमोहन ॥ चीर देहुँ जलसे हो न्यारी ॥ २ ॥ पुस्करदास स्याम सुख सवही ॥ तन मन धन वन पर कीनो वारी ॥ ३ ॥

कटक जोरि श्रीराम लखन वन। वादुर भाल लंक गड तोरी ॥ टेक ॥ जामवंत सुग्रीव नील नल ॥ अंगद हनूनान वल भोरी ॥ १ ॥ झपटि लपटि पट मारि निसाचर ॥ धृत आंचर लंका फूकी होरी ॥ २ ॥ धनुस वान कर तान सि-यावर ॥ वीस भुजा दस मस्तक तोरी ॥ ३ ॥ पुस्करदास स-दा सुख संतन ॥ निस दिन ध्यान चरन चितहोरी ॥ ४ ॥

किवो कोप श्रीकृष्ण कंसपर । दुरजन दलि मलि सवे संघारी ॥ टेक ॥ प्रथम हते पूतना पिसाचिन ॥ अघा वका सुर सव्वेको मारी ॥ १ ॥ माल्जुद्ध दलि मलि सव कीनो ॥ गजको दंत गिराय उखारी ॥ २ ॥ झटकि केस त्ररि पटकि

कंसको ॥ मारि असुर भूमि भार उतारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख वृजमें ॥ धंन धंन चरन कमल वलिहारी ॥ ४ ॥

किवो मान वृषभान लाणिली। ललिता सखी समुझावे री ॥ टेक ॥ तजि दे मान प्रान पिआ प्यारी। स्यामहीं तुमें बोलावे री ॥ वो तो प्रभू घट अंतरजामी। तुमरो जस गुन गावे री ॥१॥ तू हटि जा हटकर ना मोसो। मोहिं मीठी वचन सुनावे री ॥ मोहि उपमा चंद्रामुख दीनो। झूठी कलंक लगावे री ॥ २ ॥ प्रभु तकसीर धीर करु प्यारी। को चातुर समुझावे री ॥ चलो हमारे संग स्याम ढिग। अब वेलंभ क्या लावे री ॥ ३ ॥ हम ना जहुं जाउ तुम ललिता। स्याम गरज जव आवे री ॥ पुस्करदास आस चरननकी। राधे स्याम गुन गावे री ॥ ४ ॥

श्रीकृष्ण प्रगट भे गर्भ देवकी। नंद जसोदाके गृह जाये ॥ टेक ॥ प्रथम हतो पूतना पिसाचिनी। क्षीर खैंचि लियो वोद्र ढहाये ॥ अघा बका सुर सबे सँघारे। जीभ चोच धारि फारि वहाये ॥ १ ॥ पैठि पताल काल फन नाथें। माथे धरी कवल दल लाये ॥ भार पठाये कंसराजको। देखि देखि अति मन पछिताये ॥ २ ॥ मालजुद्ध कीनो अति भारी। सारी दलको भुंम गिराये ॥ गजको दंत उखारि मारिके। झटकि केस वो कंस गिराये ॥ ३ ॥ भार उतार भुंमको त्रिभुअन। देव सकल दुंदुभी वजाये॥ पुस्करदास आस जदुवरके। गोपी ग्वाल सदा सुख पाये ॥ ४ ॥

श्रीरघुनंदन अवधविहारी। दुष्टदलन संतन हितकारी ॥ टेक ॥ भारी पीर हरो हरी गजको ॥ बूडे जल जाय ग्राह सँघारी ॥ १ ॥ भक्त वीर प्रहलाद पीर हरी ॥ प्रभू खंभ फारि हरनाकुस फारी ॥ २ ॥ जुरी सँभर भर दूलराम रटि ॥ प्रभू घंटा तोरि धरे महि डारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ तन मन धन वनपर कीनो वारी ॥ ४ ॥

रहस रचो रसिआ मनमोहन। सखिन समज श्रीराधे सोहन ॥ टेक ॥ श्रीजमुनाके तीर कदम तर ॥ गुंजत भँवर पुष्परस दोहन ॥ १ ॥ पहिर अभूषन सखीन सजि साजे ॥ बाजे मुरली मुख मनमोहन ॥ २ ॥ झमकि छमकि पग नेपुर बाजे ॥ लाजे सदासिउ आये जोहन ॥ ३ ॥ पुस्करदास आनंद नंदसुत ॥ सबे समाज प्रेमरस वोहन ॥ ४ ॥

भजु मन राम सिआ सुखदाई। कोटिन जन्मको पातक जाई ॥ टेक ॥ यह जगमें जीवन दिन थोरे ॥ भोरे करि ले प्रेम सगाई ॥ १ ॥ याको जस सुर सेस ब्रह्मा गुने ॥ निगम नेत पुरानन गाई ॥ २ ॥ कोटिन पतित चरनरज तारि गये ॥ ताको हरी सुखधाम पठाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास रखू चित चरनन ॥ प्रभू हितकारी हिआसो लगाई ॥ ४ ॥

देखो री सखी छवि आजु मंडफतर। श्रीअवध लाल सिआ जनकल्ली री ॥ टेक ॥ सीस मौर कंचनको मणिमय ॥ दुय सिआ मौरी पुष्पकली री ॥ १ ॥ लाल गले मणिमाल मोतिनलर ॥ सिआजूके हार हिआ सोहत भली री ॥ २ ॥ जामाज-

णित जरकसी रामके॥सिआजूके घाघर कुसुमकली री ॥३॥ पुस्करदास राम सिआ सोभा ॥ आनंद मंगल गली गली री ॥ ४ ॥

ऐसी कैसी वंसी वजाई आजु स्यावरो । मोहि लिवो किवो सवे मन वावरो ॥ टेक ॥ वंसीकी सब्द सुनाये स्रवनमें ॥ मोहे मन जंगम अस थावरो॥ १ ॥ चलत न सिंधु स्रवन सुनि धुनिके ॥ रोके रविरथ मगन घावरो ॥ २ ॥ वृजजुवतिनकी तन सुधि नाहीं ॥ लागे हिआ बिच प्रेमको घावरो ॥ ३ ॥ पुस्करदास सुख स्याम दरसको ॥ चरन कमल चित रहत धावरो ॥ ४ ॥

दैदे सिया रामको मान मेरी । मत करू वयर पिआ पैयां लागों तेरी ॥ टेक ॥ जवसे सियापिया तुम हरि लाये ॥ अस गुन होत हजारन वेरी ॥ १ ॥ प्रथम दूत एक वाँदर आये ॥ लंका जारि भस्म कीनो ढेरी ॥ २ ॥ नरतन तूं मति जानो पिआरे ॥ वो त्रिभुवनके राखनके री ॥ ३ ॥ पुस्करदास रघुनाथ सरन विन ॥ निसचर कुल संघारन हेरी ॥ ४ ॥

साजि सजि साजे जुरी समाजे । श्रीराधे सखियन संघ राजे ॥ टेक ॥ वाजत ताल मृदंग तमूरा ॥ सब्द सुरन मुरली धुनि वाजे ॥ १ ॥ छम छम छम पग नेपुर छमके ॥ रमके रहस सहस सुख लाजे ॥ २ ॥ सुनि सुनि स्रवन देव मुनि गंधर्व॥ सुमनवृष्टि करी आय विराजे ॥ ३ ॥ पुस्करदास आनंद नंदसुत ॥ तन मन धन चरनन चित गाजे ॥ ४ ॥

सिता स्वयंवर जनक जग्य रचो। तोरन धनुस गये रघु-राई ॥ टेक ॥ विश्वामित्र महामुनी संघ लिये ॥ गौर किसोर लखन लघु भाई ॥ १॥ वर्णे वर्णे भूप जुरि बैठे सभामें ॥ राम-रूप देखत मुरझाई ॥ २ ॥ सिंभु सरासन आसन करि करि॥ कादर भूप ना लेत उठाई ॥ ३॥ पुस्करदास श्रीराम सुमिर गुरू॥ किवो तीन खंड तीनों लोक घहराई ॥ ४ ॥

हे मन अभिमानी तजु तू अभिमान। क्या चार दिनाको करो गुमान ॥ टेक ॥ तजि अभिमान प्रानपति भजि ले॥हर-खित मन गोविंद गुन गान ॥१ ॥ वे सुमिरे सुख इत उत ना-हीं ॥ लख चौरासी फिरत भुलान ॥ २ ॥ मात पिता तृआ पुत्र पवित्रक ॥ मायावस रस रहे लपटान ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ मोरे हृदे कछु नाही समान ॥ ४ ॥

आली री दधि वेचन कुंजन गई। मोहि गेल मिले नंदलाल वोलावे ॥ टेक ॥ आजुकी सोभा देखत मन लोभा ॥ गोभा चित चरननमें धावे ॥ १ ॥ अति छवि लटक मुकुट माथेपर ॥ कुंडल लोल कपोल सोहावे ॥ २ ॥ हरे हरे वांसकी वंसी अधर धरे ॥ हरे पीर वहु राग सुनावे ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा ॥ लोभा तीन लोक जस गावे ॥ ४ ॥

दैदे सिया पिया मान कहा जिया। जो नही दे सिआ जैहे जिआ पिया ॥ टेक ॥ आये दूत यक पूत पवनके ॥ लंका जा-रिके भस्म किया ॥ १ ॥ रन प्रचंड हय डंड लखनके ॥ मेघ-नाथको हत करी लिया ॥ २ ॥ कोटिन पतित सरन गये तारे

॥ वो त्रिभूअननाथ सियाजीके पिया ॥ ३ ॥ पुस्करदास रावन अभिमानी ॥ मुक्त जानी जिआ भजि सिया सिया ॥ ४ ॥

ऊधोजी तुम कहिये हरिसे। विकल बेहाल भई नर नारी ॥ टेक ॥ जबसे हरी हित किवो कुवजासे ॥ तबसे जोग रूप तन धारी ॥१॥ लोक लाज कुल त्यागि स्यावरो ॥ जमुनानीर त्यागि पिये खारी ॥ २ ॥ पुस्करदास स्याम विन जीवन ॥ जैसे मीन हीन जल सारी ॥ ३ ॥

धंन धंन श्रीगुरू वसिष्ठ मुनी। त्रिलोकीनाथ सरनागति आये ॥ टेक ॥ किवो वास श्रीआ भूराजमें ॥ मंदिर बनो अति परम सोहाये ॥ १ ॥ आस पास किवो वास रिषी मुनी ॥ श्रीगोविंदपद हरषित गुन गाये ॥ २ ॥ वन अनेक घन लता सोहावन ॥ गुंजत भँवर पुष्प चहुं छाये ॥ ३ ॥ पुस्करदास छवि निरखि संतजन ॥ प्रेममगन चरनन रज लाये ॥ ४ ॥

श्रीरघुनंदन दसरथके नंदन। संतत मन रंजन दुष्टनिकंदन ॥ टेक ॥ जनक कठिन प्रन कीनो धनुष जग ॥ प्रभू भंजे चाप किवो बहु खंडन ॥ १ ॥ बालु बैर कीनो हरी जनसे ॥ धरे तृनको वोट सीस किवो खंडन ॥ २ ॥ रावन गरभी गरद मिलाये ॥ काटे वीस भुजा दस सीस किनो खंडन ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस रघुवरके ॥ प्रभू काटि देत जमको बणो फंदन ॥ ४ ॥

बालभोग भावे जदुनंदन। आनंदकंदन नंदके नंदन ॥टेक॥ सिद्ध सनकादि यादि ब्रह्मादिक ॥ सेस सहस मुख करे

वो वंदन ॥ १ ॥ मात जसोदा करत आरती ॥ त्रिलोकीनाथ भक्तन भौभंजन ॥ २ ॥ पुस्करदास स्याम व्रजजीवन ॥ दुष्ट मारि कीनो प्रभू दंदन ॥ ३ ॥

सत्तदेव अघहरन विनासन। अपराध छिम प्रभू भै सो भै ॥ ॥ टेक ॥ त्यागि प्रासाद कलावतकन्या। पिता पती विपति भै सो भै ॥ त्यागि मोह जब गै सरन हरी। नवका देखि रही सो रही ॥ १ ॥ त्यागि प्रसाद राजा वंकज धुज। कुलकी नास भै सो भै ॥ त्यागि मोह गये सरन रामके। जैसेको तैसे रही सो रही ॥ २ ॥ जो जन कलीमें पल ना विसारे। सत्त-नामको कही सो कही ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे । नाम रूपमें भै सो भै ॥ ३ ॥

कहे नार सुनो लंकपती पिया। लैके जानकी मिलो रा-मको ॥ टेक ॥ अतुलित बल पायेक संघ याके ॥ पिया फूंकि गये लंका हनूमान वो ॥ १ ॥ रन प्रचंड अति डंड लखनको ॥ पिया येक वानमें लैहे प्रानको ॥ २ ॥ जौ सुख चाहो पिया दैदे सिआको॥रज लावो चरननकी आनको॥३॥पुस्करदास कहे वचन मदोदर ॥ राम सरन विन गये पिया प्रानको॥४॥

सुंदर सोभित हय राम सियावर। रतन सिंघासन वैठि रहो री ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट छवी सोभित रामके ॥ सिया-जूके हार हिया लटकि रहो री ॥ १ ॥ श्रीरामचंद्र हृदे मणी-माला ॥ सियाके चंद्रिका चमकि रहो री ॥ २ ॥ पीतांवर वा-रे धरनीधर ॥ सिया सूहा सारी अंगसो लसो री ॥ ३ ॥

दिवो दान राजा वली वावन। त्रिभूअननाथ भे रूप भिखारी॥ टेक॥ हरी करी छल बल त्रिवाचा॥ साढे तीन पेर पृथ्वी लिवो हारी॥ १॥ वार वार वरजत गुरु सुक्राचार्ज॥ ये तो हय त्रिभुअन रखवारी॥ २॥ नृभे दान दिहो वलि वावन॥ प्रभू करी पावन बली देह सँभारी॥ ३॥पुस्करदास वली भक्तवीर भे॥ हरी छल गये ग्रह दरसन हारी॥ ४॥

महा दलिद्र भक्त भये सुदामा। त्रिआवचन सुनि हरी ढिग जाये॥ टेक॥ बाँधी पोटरी दिहो त्रया तांदुल॥ उठे हरखि हरीको गुन गाये॥ १॥ जात विप्र प्रिया नाथ हाथ धारे। पूछत कुसल हरषि हिया लाये॥ पुस्करदास आस जदुनंदन। दिवो कंचन महल त्रिलोक सोहाये॥ २॥

हे मन राम कृष्ण गुन गानि ले। नहीं तो तुम चौरासी जैहो॥ टेक॥ यमको डंड प्रचंड प्रबल हय॥ बिना भजे डंडा तुम खैहो॥ १॥भजे नाम सब काम होत हे॥ चार पदारथ तुरते पैहो॥ २॥चेत न चोला चेत सवेरे॥ औसर चूकि समुझ पछितै हो॥ ३॥ पुस्करदास कहे कर जोरे॥ हे मन चरन कमल चित लैहो॥ ४॥

पुष्पनकी झांकी वंकी वने। रनछोण राय रसके रसिया हो॥ टेक॥ सोभित कुंदको कली लली सिर॥ वेला गुलाव माल हसिया हो॥ १॥ कुंडल लोल सिरपेच सोहाये॥ छबि छाये अधरन बसिया हो॥ २॥ जूही जाम चमकि चमकि चमेली॥ पीताम्बर कछनी कसिया हो॥३॥ पुस्क-

दास प्रभू वास पुष्पकी ॥ ध्यान चरनपर मन धसिया
हो ॥ ४ ॥

धंन धंन प्रभू चरनकमल रज। श्रीअवधराज दसरथसु-
त याये॥ टेक॥ येहि चरनन सेवत सिउ ब्रह्मा॥ सेवत सं-
कर हृदे लगाये ॥ १ ॥ गौतम रिषीकी नार तार प्रभू॥ दि-
वो मुक्तधाम चरनन रज लाये ॥ २ ॥ चरनन पखारि सब
कुटिल केवट जन॥ प्रभू कुटुमसहित सुरधाम पठाये॥ ३ ॥
पुस्करदास आस रघुवरके ॥ प्रभु संतनके हित चहुं दिस
धाये ॥ ४ ॥

श्रीद्वारिकानाथ हो श्रीलक्ष्मीनाथ हो। त्रिलोकीनाथ हो
अनाथनके नाथ हो ॥ टेक ॥ नाम अनंत गुनरूप अनंनहीं ॥
अंत नही संतनके साथ हो ॥१॥ जहाँ जहाँ कष्ट देखी भक्त-
नको ॥ चार भुजा करी राखो हाथ हो ॥ २ ॥ वेद पुरान
वखानत महिमा ॥ सुर मुनि सेवत चरन माथ हो ॥ ३ ॥ पु-
स्करदास सुख सरन चरनमें॥ फेरत प्रभू वो जनपर हाथ
हो ॥ ४ ॥

पवनकुमार अंजनीके नंदन। श्रीरामजीके पायक सिया-
सुधि लाये ॥ टेक ॥ सौ योजन मरजाद सिंधुको ॥ कपी कूदि
गये गढ लंका जाये ॥१ ॥ अक्षेकुमार महाभट जोधा ॥ मारो
वीर गदन धुनि डाये ॥ २ ॥ बाग उजारी लंका गढ जारी ॥
कूदि परे सागरतट आये ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस रघुवरके।
सदा सनमुख हरीको जस गाये ॥ ४ ॥

हितकारी चित सानी ॥२॥ पुस्करदास प्रभू अधम उधारन॥ यह कारन औतार वो मानी ॥ ३ ॥

दरसन करो चलो संत द्वारिका। जहां विराजे रणछोण राजा ॥ टेक ॥ मंदिर बनो हय अति विचित्र छबी ॥ घंटा घोर सोर बजे बाजा ॥ १ ॥ बनो झाँकी बाँकी अतिसुंदर ॥ कुँअर कल्यान टीकम महराजा ॥ २ ॥ टीकम सनमुख ठाढे गरूरणजी ॥ देवी अंमिका जोति विराजा ॥ ३ ॥ श्रीमाधोजी जक्तके दाता ॥ परसोतम महराजा ध्राजा ॥ ४ ॥ माता देवकी सनमुख ढाढी ॥ अस्तुत करि पूरवे सब काजा ॥ ५ ॥ श्रीराधे रानी महरानी ॥ महालक्ष्मी अंग भूषन साजा ॥ ६ ॥ हय साखी गोपाल लालजी ॥ गोवरधननाथ राखे लोककी लाजा ॥ ७ ॥ सत्तभामा पूरन करे कामा ॥ लक्ष्मीनारायन जामवंती सुख पाजा ॥ ८ ॥ कूसे स्वर गनपती सोहाये ॥ हनुमत वीरकी चौकी गज॥९॥चारों दिसा रतनागर सागर॥ उठत लहर घनघोर सोर बाजा ॥१०॥ लागत भोग छप्पन प्रकारको ॥ तस जलेबी खुरमा खाजा ॥ ११ ॥ पुस्करदास निरखि दबि सोभा ॥ ध्यान चरनपर तन मन ताजा ॥ १२ ॥

बाजी बाजी बाजी वंसीधुनि नटवरकी । वृज नर नारी कोन भावे कछु घरकी ॥ टेक ॥सुनी स्रवन ब्रह्मा सिउ मोहे॥ छूटे ध्यान सुर नर मुनिवरकी ॥ १ ॥ सुनी स्रवन रोके रविरथको ॥ चलत न सिंधु स्रवन गिरधरकी ॥ २ ॥ खग मृग पसु ना चरत तृन तोरत ॥ रटत नाम वो कृष्ण हलधरकी

॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम व्रजजीवन ॥ धंन धंन बंसी मोहे घर घरकी ॥ ४ ॥

भजु मन द्वारिकाधीस ईसको। सप्त लोकमें रचना सारो ॥ टेक ॥ निस दिन सेवत सेस ब्रह्मादिक ॥ नारद सारद नाम उच्चारो ॥ १ ॥ जप तप व्रत संतन सुख भावे ॥ त्यागि मोह चरनन चित धारो ॥२॥ हरो पीर भौभीर सकल व्रज ॥ असुर मारि गिरवर नख धारो ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख भक्तन ॥ तन मन धन वनपर कीनो वारो ॥ ४ ॥

देखो री आजु छवी सुंदरस्यामकी। रुचि रुचि अंग अभूषन धारे ॥ टेक ॥ मोर मुकुटकी लटकि सीसपर ॥ जगमगात कुंडल छवि न्यारे ॥ १ ॥ बीन बांसुरी अधर सोहाये ॥ मन मोहे गोपिनको सारे ॥ २ ॥ मणिमोतिनको माल लाल गले ॥ कछनी पीतांबर उर डारे ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ कोटि भानको योति उजारे ॥४ ॥

जन्म लिओ श्रीकृष्ण देवकीगर्भ। नंदजसोदाके गृह जाये ॥ टेक ॥ प्रथम मारि पूतना पिसाचिनी ॥ क्षीर खैंच प्रभू वोद्र ढहाये ॥ १ ॥ दुति वो मार सुर अघा बकासुर ॥ जीभ चोच धरे फार बहाये ॥ २ ॥खेलत गेंद कूदि कालीदह॥ नाथे नाग कवल दल लाये ॥ ३ ॥ केस झटकि धरे कंस पछारे ॥ पुस्करदास चरन चित लाये ॥ ४ ॥

अंजनीकुमार प्यार रघुवरके। मारि किलकारी च[illegible] गये गढ लंका ॥ टेक ॥ अछे कुमारको मारे गदनसो ॥ फल

वो फूलको किहो फंका ॥ १ ॥ ब्रह्मफासमें जाय बंधाये ॥ घृत बहु बसन लपेटि निसंका ॥ २ ॥ ज्वाला लाये जराये चहूं दिस ॥ कूदि परो सागरतट वंका ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस रघुवरके ॥ सियासुधि लाये आये दय दय हंका ॥ ४ ॥

आनंद नंदगृह बाजत बधाई । मात जसोदा अति सुख पाई ॥ टेक ॥ भादों वदी गोकुल अष्टमी । रोहिनी नक्षत्र सुभ लगन सोहाई ॥ प्रगटे दीनदयाल दयानिधि । दुष्टदलन संतन सुख दाई ॥ १ ॥ जुरी भीर बहु गोप ग्वालिनी । गावत मंगल गली गली जाई ॥ दधिरोचन दल दूव थार भरे । चौमुख दीपक जोति जलाई ॥ २ ॥ बैठि सिंघासन आसन नंदजू । मणिमोतिन भरे थार लुटाई ॥ जाचक होत निहाल अजाचक । हरषि निरखि हरीको गुन गाई ॥ ३ ॥ धंन धंन वृज गोप ग्वालिनी । धंन धंन नंद जसोदा माई ॥ पुस्करदास सदा सुख वृजमें । त्रिभुअननाथ वो कुंअर कँधाई ॥४॥

भजु मन रघुनंदन त्रिभुअनधनी । जेहि सुमिरे कोटिन भै जाई ॥ टेक ॥ टेरत गज हरीनाम पुकारे ॥ प्रभू वेग जाय गजराज बचाई ॥ १ ॥ नाम सुमिर सुख पाये प्रहलादे ॥ प्रभू हरनाकुसको वोद्र ढहाई ॥ २ ॥ महाभारथ भरदूलको अंडा ॥ प्रभू घंटा तोरिके किवो सहाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास भय भक्त अनेको ॥ सदा ध्यान चरनन गुन गाई ॥ ४ ॥

मनसे रघुनंदनको गुन गावो । सुख पावो जगमें सवही ॥ ॥ टेक ॥ जन्म मरन छूटे यह तनसे ॥ भौसागर तरि जा

अवहीं ॥ १ ॥ चेतन चोला पाये चेत करो ॥ औसर चूकि भजो कवहीं ॥ २ ॥ खणो काल दे ताल सीसपर ॥ लै जैहैं औसर जबहीं ॥ ३ ॥ पुस्करदास मान मन कहेना ॥ रहेना सदा सरनागतही ॥ ४ ॥

रखे सरन हरी हरे भौभारी। दुष्टदलन संतन हितकारी ॥ टेक ॥ रामरूप भै हरो भभीखन ॥ प्रभू रावनके दस मस्तक फारी ॥१॥ कृष्णरूप भौ हरो सकल वृज ॥ झटकि केस वो कंस पछारी ॥ २ ॥ याको योति अपार जक्तमें ॥ ब्रह्मा सेस रटे त्रिपुरारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास चहो सुख जियाको ॥ तन मन धन वोनपर करो वारी ॥ ४ ॥

डारे गले बनमाला ठाढो नंदजीके लाला। आली वो वंसीवाला मारे हियाविच भाला ॥ टेक ॥ मोर सुकुटकी अति छवि सोभा ॥ लोभामन कुंडलन गहाला ॥ १ ॥ पीतांबरकी काछे कछनी ॥ वोढे वसन वो साल दुसाला ॥ २ ॥ स्यावली सूरत मोहनी मूरत ॥ निरखत रूप भय मन मतवाला॥३॥ पुस्करदास आनंद सदा वृज ॥ तन मन धन चरनन चित घाला ॥ ४ ॥

दस औतार धरो धरनीधर। दुष्टदलन भक्तन हितकारे ॥ टेक ॥ मच्छरूप धरो प्रभू द्वारिकामें। संखासुरको वधन करि डारे ॥ कच्छरूप धरो मथि रतनागर। चौदा रतन निकारो प्यारे ॥ १ ॥ धरो रूप वाराह रसातल। हरन्याक्षको हति कर डारे ॥ रूप धरो नरसिंघ भक्तहित। हरनाकुसको

बोद्र विदारे ॥ २ ॥ धरो रूप पातालमें वावन । राजा वलिके द्वारे ठारे ॥ धरि औतार प्रभू परसरामको । छत्री वंस निछत्र करि डारे ॥ ३ ॥ धरि औतार प्रभू राम अवधपुर । रावनके दस मस्तक फारे ॥ कृष्णरूप भय हरो सकल वृज । झटकि केस वो कंस पछारे ॥ ४ ॥ वौधरूप धरि हरि भक्तनभे । श्री-जगन्नाथ जगके रखवारे ॥ कल्जुगमें औतार कलंकी । पु-स्करदास प्रभू पतितन तारे ॥ ५ ॥

श्रीरामकृष्णको भूपन वरनो । सुनो संजन चित कानन-में दय ॥ टेक ॥ श्रीरामचंद्र सुखधाम अवधपुर॥श्रीकृष्णचं-द्रको वृंदवन मय॥१॥ श्रीरामचंद्रके क्रीट मुकुट छवी॥श्रीकृ-ष्णचंद्रके मोर मुकुट हय ॥२ ॥ श्रीरामचंद्र कुंडलकी सोभा॥ श्रीकृष्णचंद्के कुंडलमें जय ॥ ३ ॥ श्रीरामचंद्रके माल मो-तिन मणी ॥ श्रीकृष्णचंद्र वनमाल गले भय ॥ ४ ॥ श्रीराम-चंद्र कर धनुष विराजे॥ श्रीकृष्णचंद्रके करमें लकुट लय॥५॥ पीतांबरकी काछे कछनी ॥ स्यावली सूरतमें सव सय ॥ ६ ॥ जेहि सुमिरे सुख होत चहूं दिस ॥ जात सकल सव तनकी भय ॥ ७ ॥ पुस्करदास श्रीरामकृष्ण सोभा ॥ लोभामन चि-त्त चरननमें गय ॥ ८ ॥

भजु मन सुख सिया रघुनंदनको ॥ टेक ॥ सुर सुमिरत मुनि ध्यान लगावत ॥ सिउ ब्रह्मा करे वंदनको॥१॥आनंद-कंदन दसरथनंदन ॥ भक्तनके भौ भंजनको ॥ २ ॥ पुस्कर-दास सदा सुख संतन ॥ प्रभू दुष्टनके मुख दंदनको ॥ ३ ॥

श्रीबालाजी लाला दसरथके। सेसाचलपर आप विराजे ॥ टेक ॥ सुंदर गौर किसोर मनोहर ॥ कोटि भान याके मुख लाजे ॥१॥ देवनवंद नेवारन कारन ॥ दुरजन दलि मलि हरीगुन गाजे ॥ २ ॥ मंदिर वनो अति परम सोहावन ॥ घंटा घोर सोर वजे बाजे ॥ ३ ॥ अंग अभूषन वहु रंग वसन कसे ॥ संख चक्र गदा पद्म विराजे ॥ ४ ॥ लागत भोग छप्पन प्रकारके ॥ तपत जलेबी खुरमा खाजे ॥ ५ ॥ वन अनेक घनलता सोहावन ॥ गुंजत भँवर पुष्प चहुं छाजे ॥ ६ ॥ तृपतीमें सीतारामजीकी झांकी ॥ बांकी चितवन तन मन ताजे ॥ ७ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ नाम अनंत भक्तके काजे ॥ ८ ॥

सुमिरो सुखमन रिद्धि सिद्धिपती । गणनायक गणेस सुखदायक ॥ टेक ॥ लाल अंग रंग भूषन राजे ॥ साजे वाहन मूस सोहायक ॥ १ ॥ मंगल करन हरन भौमोचन ॥ सव विधिपूरन कारज लायक ॥ २ ॥ दुष्टनको दलि गरद मिलाये ॥ छाये छत्र भक्तहित जायक ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ सदा रहो चरननके पायक ॥ ४ ॥

लाल वदन मन लाल लंगूरहि । अतुलित बल याको नाम हनुमान ॥ टेक ॥ सकल कार्ज सुभ संतनके हित ॥ विद्याके गुन ज्ञाननिधान ॥ १ ॥ रामके पायक सव सुखदायक ॥ कारि मन आनंद गोविंदगुन गान ॥ २ ॥ दुष्टन दलि मलि गरद

मिलाये ॥ दिये राम बडाई अपने मुख मान ॥ ३ ॥ पुस्कर-दास आस रघुवरके ॥ हरत सकल तनकी भे हान ॥ ४ ॥

आजु आनंद भये गये सकल दुख । सुख संतनके हित हरी आये ॥ टेक ॥ प्रगटे त्रिभुअनधनी अवधपुर । नौमी चैत सुकुल सुभ दीये ॥ घर घर बाजत बधावा अवधपुर । यह सुख सोभा बरनी न जाये ॥ १ ॥ चढे वेवन निरखि सुर गंधर्व । बाजे निसान सुमन झरि लाये॥पुस्करदास सदा सुख संतन। देवनको प्रभू बंदि छोडाये ॥ २ ॥

रामजन्म सुनिके पुरवासिन । देखनको गृह गृहसे धाये ॥ टेक ॥ करमें थार हार भरि मोतिन। दधिरोचन सुभ मंगल छाये ॥ करत गान गुन प्राननाथको । हरखि निरखि तनताप नसाये ॥ १ ॥ देखत रूप भूप पुरवासिन । मणिमानिक भरे थार लुटाये ॥ जाचक होत निहाल अजाचक । हरखि निरख हरीको गुन गाये ॥ २ ॥ चढे वेवन गान करे गंधर्व । देव सुमनको झरी लगाये ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन । सुख अवध धाम सरजू वहि आये ॥ ३ ॥

श्रीहनुमान देवान रामके । पंचमुख धारे संतन दुख टारे ॥ टेक ॥ सियाजीको सोक नेवारन कारन । सागर कूदि लंक गढ जारे ॥ सक्तीवान नेवारे लखनके । लाये मूल सजीवन गिरसहित उपारे ॥ १॥ फारि पताल मारि महिरावन । लाये भुजनपर कुअर दो उबारे ॥ रावनकुल संघारे महाप्रभू । लंकातिलक भभीषन सारे ॥ २ ॥ देवनबंद फंद सब फारे ।

राम पूआ सुख अवध सिधारे॥पुस्करदास सदा सुख संतन। तन मन धन वनपर कीनो वारे ॥ ३ ॥

ठुमरी समाप्त.

ठुमरी झँजोटी प्रारंभ—सखी री नयना निरखि ले राम ॥टेक॥ यक गोरे यक स्याम सरीरे॥ कसे जरकसी जाम॥१॥ यक छोटे यक सरिस स्यावरो ॥ वाही जानकी वाम ॥ २ ॥ याको जपत सुर सेस महेसही ॥ ब्रह्मा वेद मुख हाम ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ अचल करत यह जाम ॥ ४ ॥

सखी री कब आवे घनस्याम ॥ टेक ॥ कौल करार किहो नही मोहन ॥ छाये द्वारिका धाम ॥ १ ॥ ज्वानी जोर जनावे सजनी ॥ रजनी नही विस्राम ॥ २ ॥ पुस्करदास सुख स्याम दरस विनू ॥ जीवन जग क्या काम ॥ ३ ॥

श्रीराधे रानी जस गुन वेद वखानी ॥ टेक ॥ जन्म लिनो वृषभान रायके ॥ कृष्णचरन लपटानी ॥ १ ॥ कोटिन काम चंद्रसुख मोहे ॥ सकल गुननकी खानी ॥ २ ॥ सिउ ब्रह्मा सुर सेस ध्यान करे ॥ करे कविन गुन ज्ञानी ॥ ३ ॥ पुस्करदास वास वरसाने ॥ सबके मनकी जानी ॥ ४ ॥

हो मोहन प्यारे नेक सुनाये जा तान ॥ टेक ॥ तेरी वंसीमें प्रान वसत हय ॥ घर अगनना सोहान ॥ १ ॥ तेरी वंसी मोहे सुर नर मुनी ॥ छूटे सकलको ध्यान ॥ २ ॥ तेरो तान मोहे पसु पंछी ॥ फिरत भुलान भुलान ॥ ३ ॥ [पु]स्करदास स्याम ब्रजजीवन ॥ करत सबे गुन गान ॥ ४ ॥

हो मोहन प्यारे मेरी गली मति ऐहो ॥ टेक ॥ जो तुम मो-हना मेरी गली ऐहो ॥ तेरी मे बंसी छिनै हों ॥ १ ॥ जो नही मानो जानो में प्यारी ॥ पकणि बांह वैठे हो ॥ २ ॥ सुनु राधा पृआ प्रानपियारी ॥ नेक ना काहू डेरे हो ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस राधेवर ॥चरनकवल गुन गेहो ॥ ४ ॥

हो रसिक पिया झमकि हिंडोला झूले ॥ टेक ॥ वंसी बटतट कदमकी छाहन ॥ कालिंद्रीके कूले ॥ १ ॥ कंचन खंभ डोर कसे रेसम ॥ झूकी लतानन फूले ॥ ३ ॥ झूलत स्याम सुंदरी राधे ॥ सखियन मारठ हूले ॥ ३ ॥ पुस्करदास निरखि सुख संतन ॥ ध्यान चरनपर भूले ॥ ४ ॥

सुदामा महा दरिद्र दुखारी ॥ टेक ॥ कहे त्रया सुनु हे सुख स्वामी ॥ हरीहित सुनत तुमारी हो ॥ १ ॥ सुनो त्रया मेरे कर्म दारिद्रही ॥ क्या हरीहित करत हमारी ॥ २ ॥ त्र-यावचन सुनि गये सुदामा ॥ श्रीद्वारिका पुरी सिधारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास भै कृपा कृष्णकी ॥ कंचन महल सिधारी ॥ ४ ॥

हो सुनो भाइ संतो राम सियावर संचो ॥ टेक ॥ याको ध्यान धरत सिउ ब्रह्मा ॥ वेद मुखनसो वँचो ॥ १ ॥ याको जपे सुर सेस गणेसही ॥ नारद गुन गती नाचो ॥ २ ॥ याको दरस तरस योगी जन ॥ गिरकंदर तपि अँचो ॥ ३ ॥ पुस्क-रदास आस रघुवरके ॥ प्रभू तीन भुवनको राचो ॥ ४ ॥

हो वाट मेरो मति रोको रसिकविहारी ॥टेक॥ सास बुरी घर ननद हठीली ॥ सैंआँ सुने देइ हे गारी ॥ १ ॥ ना हम तेरे

नग्र वसतु हे ॥ ना सरहजना सारी ॥ २ ॥ कंस रजाको राज बुरो है ॥ लै जैहे धरि वांह तुमारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ तन मन धन कीनो वारी ॥ ४ ॥

हो स्याम तेरो लटकि चाल लगे प्यारी ॥ टेक ॥ सोभा सीसपर मोर मुकुटकी ॥ कुंडलकी गती न्यारी ॥ १ ॥ भृगुटी नयन चलाय बानसम ॥ घूंघरवार हय कारी ॥ २ ॥ हरे हरे बासकी वंसी अधर धरे ॥ मोहे सबे नर नारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम वृजजीवन ॥ चरनकवल बलिहारी ॥ ४ ॥

करो भाई संतो रामकृष्णसो प्रीत ॥ टेक ॥ जग व्यौहार हार सव बाजी ॥ पावो पद अमर अजीत ॥ १ ॥ गुरुको ज्ञान प्रानमें राखो ॥ जमपुर ले तू जीत ॥ २ ॥ चेतन चोला चेत सवेरे ॥ नहीं पछितै हो मीत ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ स्वारथको जगरीत ॥ ४ ॥

हो मुकुटवाले हरो सकल भौ भारी ॥ टेक ॥ निस दिन ध्यान चरन चित राखों ॥ प्रभू भौ पार उतारी ॥ १ ॥ भक्तनकी भौ भीर पीर हरी ॥ संतनके हितकारी ॥ २ ॥ पुस्करदासकी आस हरी हो ॥ तुम दीन पतितको तारी ॥ ३ ॥

करुनानिधी सब विधी पूरनकारी ॥ टेक ॥ करी करुना सभाविच द्रोपती ॥ प्रभू अंमर डेर संभारी ॥ १ ॥ करुना करी मीरा मन गिरधर ॥ विष अमृत सुख डारी ॥ २ ॥ महाभारथ भरदूल पुकारे ॥ प्रभू घंटा तोरि महि डारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ चरनकवल वलिहारी ॥ ४ ॥

हो रसिक छेला मति रोको वाट हमारी ॥ टेक ॥ तुम तो नागर नंदरायके ॥ हम वृषभान दुलारी ॥ १ ॥ हम जानत सब छल बल तुमरो ॥ माँगत दान भीखारी ॥ २ ॥ कंस राजाको राज बुरो हय ॥ लै जैहें बांह तुमारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस राधावर ॥ चरनकवल बलिहारी ॥ ४ ॥

हो अवधपती विहरत सरजूतीर ॥ टेक ॥ राम लच्छिमन भरथ सत्रहन ॥ संग सखनकी भीर ॥ १ ॥ चढे तुरंग सब अंग अभूषण ॥ गले झलके मणी हीर ॥ २ ॥ भोतलभार उतार सियावर ॥ सुख संतन गंभीर ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ हरे सकल तनपीर ॥ ४ ॥

हो पवनसुत करी अतुलित बल भारी ॥ टेक ॥ अतुलित बल करी ल्याये सजीवन ॥ लछिमन प्रान उवारी ॥ १ ॥ अतुलित बल करी ल्याये सियासुधी ॥ लंका भस्म करि डारी ॥ २ ॥ करी अतुलित बल पैठि पताले ॥ महिरावन वधि डारी ॥ ३ ॥ पुरुकरदास धंन अंजनीनंदन ॥ प्रभूके कार्ज सँभारी ॥ ४ ॥

हो उमापती अंग अभूपन धारे ॥ टेक ॥ जंटन बीच श्रीगंगकी सोभा ॥ अधमनको वो तारे ॥ १ ॥ चंद्र भाल सोभित ललाटमें हय ॥ तीन नेत्र उजिआरे ॥ २ ॥ गले माल मुंडनकी सोभा ॥ कछनी काल फुफुकारे ॥ ३ ॥ कर डमरू त्रिसूल अत्र लिये ॥ दुष्टनको सुख फारे ॥ ४ ॥ पुस्करदास कैलासकी सोभा ॥ तीन लोकसे न्यारे ॥ ५ ॥

हो रघुनंदन रतनसिंघासन राजे ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल ॥ धनुष बान कर गाजे ॥ १ ॥ गले मणि- मोतिन माल विराजे ॥ कछनी कमरपट साजे ॥ २ ॥ वाम अंग श्रीजनकनंदनी ॥ कोटि काम मुख लाजे ॥ ३ ॥ पुस्क- रदास सदा सुख संतन ॥ गुनत ग्यान मन ताजे ॥ ४ ॥

हो जदुनंदन भक्तनको भे टारें ॥ टेक ॥ इंद्र रिसाय प्र- ले कीनो व्रजमें ॥ प्रभू गिर उठाय नख धारे ॥ १ ॥ अघा वका असुर माल गज मारे ॥ केस धरि कंस पछारे ॥२॥ स- भावीच द्रोपतीपति राखो ॥ प्रभू अंमर ढेर सँभारे ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस जदुवरके ॥ प्रभू दीन पतितको तारे ॥ ४ ॥

रहो मन रामचरन सरनं ॥ टेक ॥ निस दिन ध्यान चरन चित राखो ॥ भौसागर तरनं ॥ १ ॥ जौ तुम हरीसे हेत न क- रि हो ॥ चौरासी परनं ॥ २ ॥ पुस्करदास तू हरी ना विसारे ॥ सकल भौहरनं ॥ ३ ॥

श्रीगिरधारी राखो पति मेरी ॥ टेक ॥ यन पतितन मोरी अपत विचारे ॥ प्रभू राखो चरन चेरी ॥१॥ द्रोपती टेर सुनी करुनानिधि ॥ प्रभू अंमरको घेरी ॥२॥ पुस्करदास आस जदु- वरके ॥ जनपर हाथ फेरी ॥ ३ ॥

येरी आली री हरी विन परे नहीं चेन ॥ टेक ॥ जवसे विछुरे रसिक साँवरो ॥ भावे नही काहू वेन ॥ १ ॥ निस दि- न व्याकुल रहों पियाविन ॥ झरि लाये दोउ नेन ॥ २॥ भवन

भेआवन लागत सजनी ॥ सूनी सेजपर सेन ॥ ३ ॥ पुस्कर-दास दरस बिन देखे ॥ कैसे कटेगी रेन ॥ ४ ॥

मुकुटवाले वांकी अदा तेरी ॥ टेक ॥ वांकी अदासे पेच संवारे ॥ मोतिन लर फेरी ॥ १ ॥ वाके अधर धरे मुरली ब-जावे ॥ गउअन वन घेरी ॥ २ ॥ बाँकी चितवन चलाये नय-नसर ॥ लगे हिया मेरी ॥ ३ ॥ पुस्करदास प्रभू वाँकी लटकि छबी ॥ ध्यान चरन घेरी ॥ ४ ॥

मूढ मना काहे ना भजो हरीनाम॥टेक॥ मिथ्या काया मि-थ्या माया ॥ मिथ्या जगकी काम ॥ १ ॥ नाम हरे तनपीर तेहरो ॥ लगे न गाठि न दाम ॥ २ ॥ जेहि सुमिरे सिउ से-स ब्रह्मादिक ॥ योगी जपत जुग जाम ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ अवधपुरी सुख धाम ॥ ४ ॥

भजो हो भाई संतो सुंदर स्याम सरीर ॥ टेक ॥ मोर मु-कुट मुख मुरली वजावे ॥ गावे हरे तनपीर ॥ १ ॥ ब्रज चौ-रासी भुंम सोहन ॥ तरे बहे जमुनानीर ॥ २ ॥ संख चक्र ग-दा पदुम विराजे ॥ वैरी विदारन वीर ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस जदुवरके ॥ हरत सकल भौभीर ॥ ४ ॥

सखी री कैसे धरे मन धीर ॥ टेक ॥ नृमल नीर त्यागि जमुनाको ॥ पिवे खारी सागरनीर ॥ १ ॥ कुबजा सवत मेरी कंसकी दासी ॥ हरी वाके रहत सँभीर ॥ २ ॥ लोकलाज कुल त्यागि स्यावरो ॥ अखिर जात अहीर ॥ ३ ॥ पुस्कर-दास यक स्याम दरसबिन ॥ कौन हरे तनपीर ॥ ४ ॥

चहो सुख मन सियावरचरन गहो री ॥ टेक ॥ जेहि चरननसे निकरी सुरसरी ॥ अधमन जाय तरो री ॥ १ ॥ जेहि चरननसे तरी अहेल्या ॥ गौतम साप करो री ॥ २ ॥ जेहि चरनन सेवत सिउ ब्रह्मा ॥ ध्यान कपाट लगो री ॥ ३ ॥ पुस्करदास विस्वास रामके ॥ कोटिन विघन टरो री ॥ ४ ॥

हो भरोसा भारी अंजनीकुमार तुमारी ॥ टेक ॥ कीनो भरोसा राम लखन दोऊ ॥ महिरावन वधि डारी ॥ १ ॥ कीनो भरोसा लखन लगे सक्ती ॥ धवलागीर उपारी ॥ २ ॥ पुस्करदास धंन अंजनीनंदन ॥ रामचरन चित धारी ॥ ३ ॥

ज्ञान गुन अतुलित वल हनुमान ॥ टेक ॥ अतुलित वल करी हरी हिया धारे ॥ लंका जैसे फूकी मसान॥१॥ज्ञान करी धारि लाये सजीवन ॥ लखन वीर हरखान ॥ २ ॥ करी ज्ञान भुज राम लखन ल्याये ॥ महिरावन वधि जान ॥३॥ पुस्करदास श्रीरामकृपासो ॥ करत सदा सुखपान ॥ ४ ॥

सुनु आली री नयना निरखि वनमाली ॥ टेक ॥ याहीने दधि लूटत मगमें ॥ देत अनोखी गाली ॥ १ ॥ याहीने कूदो कालीदह ॥ नाथो फन सव काली ॥ २ ॥ याहीने दुष्ट कंस पछारे ॥ मारो असुर सव घाली ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख व्रजमें ॥ सव ध्यान चरनपर घाली ॥ ४ ॥

मन हंसा अजव रचो यह ठाठ ॥ टेक ॥ टूटी ठाट वाट वहु धावे ॥ विचरत वन वन घाट ॥ १ ॥ टूटी ठाठमें दस दरवाजा ॥ फिकिर फकीरी फाट ॥ २ ॥ आपे राजा आपे

परजा ॥ आपे योगी आपे नाट ॥ ३ ॥ पुस्करदास ठाठकी ठिकरा ॥ ना कहीं लागत डाट ॥ ४ ॥

मन हंसा अजब ख्याल हय तेरो ॥ टेक ॥ जैसे तृषावंत वनमृगा ॥ नीर न पावत हेरो ॥ १ ॥ बन बन धावत धीर न आवत ॥ वधिकबान लिये घेरो ॥ २ ॥ असथिर हुआ हुआ जरि घुआ ॥ करे बहुरि ना फेरो ॥ ३ ॥ पुस्करदास हंसकी हिकमत ॥ ना जानत मन मेरो ॥ ४ ॥

मन हंसा आपु अकेला जाये ॥ टेक ॥ ना तुम मात पिता संघ लीनो ॥ ना तृया संघ लाये ॥ १ ॥ हम हम कारि धन धाम सिधारे ॥ प्रान छुटे पछिताये ॥ २ ॥ तीनों पन तन गये तनकमें ॥ गाफिल गोता खाये ॥ ३ ॥ पुस्करदास सिया राम भजन विन ॥ सब धन धूर गँवाये ॥ ४ ॥

मन सुगना अब बोलो हरी नाम॥टेक॥ विना नाम नृमल नही काय ॥ पाया सुक्षको जाम ॥ १ ॥ अतिविचित्र रचो पोल पींजरा ॥ सहे न सरदी घाम ॥ २ ॥ तू पाये विंजन छत्तीसो ॥ किवो सोय बयठ विस्राम ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ तू भोरे करि ले काम ॥ ४ ॥

सुमिर मन तन धरि मदनगोपाल ॥ टेक ॥ जेहि सुमिरे सुख होत दोउ दिस ॥ नयन निरखि निहाल ॥ १ ॥ सुमिरत ब्रह्मा सेस महेसही ॥ हरषि बजाये गाल ॥ २ ॥ सुंदर मोर मुकुट सिर राजे ॥ मुख मुरली वजत रसाल ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख बृजमें ॥ गोपी ग्वाल निहाल ॥ ४ ॥

सखी री पिया छाये परदेस ॥ टेक ॥ जबसे गये पिया जियासो बिसारो ॥ ना कोउ लाये सनेस ॥ १ ॥ तन मन रहत मलीन पियाबिन ॥ उरझ गई सब केस ॥ २ ॥ सब तिनके फंदे परे बंदे ॥ धरो अजायब भेष ॥ ३ ॥ पुस्करदास पियाबिन अबन ॥ नहि भावे यह देस ॥ ४ ॥

सखी री नंदछयल रोंके गेल ॥ टेक ॥ मैं जल जमुना भरन जात रहीं ॥ झटकि पटकि दिबो घेल ॥ १ ॥ छयल छबीले कसे पट पीले ॥ करत अनोखी खेल ॥२॥ पुस्करदास प्रभू आनंदविहारी ॥ करत वो पलमें मेल ॥ ३ ॥

झंजोटी समाप्त.

खंमाच ठुमरी—सखी देखो बंसीवाला लाला मोपे जादू डाला ॥ टेक ॥ मे जल जमुना भरन जात रहीं ॥ घेरि लिबो संघ सखा ग्वाल वाला ॥ १ ॥ मोर मुकुटकी लटकि सीसपर ॥ डारे गले मनमोहन माला ॥ २॥ भ्रुकुटी नयन चलाये बानसम ॥ लागे हिया बिच कसकत भाला ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ तन मन धन चरनन चित डाला ॥ ४ ॥

खंमाच—सखी हरी बिन नींद न आवे नयन॥टेक॥जबसे हरी श्रीद्वारिका सिधारे ॥ आली नही भावे मोहि सुनी सयन ॥१॥यक तो जोवनकी मदमाती॥दूजे अंधेरी छाये रयन॥२॥ निस दिन व्याकुल रहत हरीबिन ॥ सखी घरी पल छिन नही

मुझे चयन ॥ ३ ॥ पुस्करदासकी आस हरीसो ॥ सखी कब बोले हरी मधुरी बयन ॥ ४ ॥

रघुवीर सरन जा येरी मना ॥ टेक ॥ सरन गये हरी हित करि राखे ॥ सकल काम तेरो जात बना ॥ १ ॥ सिउ ब्रह्मा याको ध्यान लगावत ॥ जपत सेस याके सहसफना॥२॥ भक्तन भीर पीर हरो पलमें ॥ दुष्टनको हरी अन्नहना ॥ ३ ॥ पुस्करदास चहो सुख जियाको ॥ सदा रहो तुम हरीको जना ॥ ४ ॥

मन हरीको नाम तुम सदा कहो ॥ टेक ॥ जेहि सुमिरे भौसागर उतरे ॥ कालचक्रको त्रास दहो ॥ १ ॥ सदा रहो संतनके सरने ॥ मुख जो भाखो सो पलमें लहो ॥ २ ॥ पुस्करदास चहो सुख जियाको ॥ ऊंच नीच तू सबकी सहो ॥ ३ ॥

— उधो हरीसे कहो तू ये बतिया ॥ टेक ॥ जबसे किवो हरी व्रजसे बिछुरन ॥ काहे न भेजी खवर पतिया ॥ १ ॥ विरहा-बान प्रान नही निकसे॥ निस दिन धणकत हय छतिया॥२॥ जैसे मीन छीन रहे जलबिन ॥ वैसे महाल होत रतिया ॥ ३॥ पुरुकरदासके स्वामी नंदनंदन ॥ वंदन करो देहु गतिया॥४॥

रसिकपिया नटनागर नंदलाल ॥ टेक ॥ सोभा सीसपर मोर मुकुटकी ॥ मुख मुरली गले मोतिनमाल ॥ १ ॥ संख चक्र गदा पदुम विराजे ॥ अंग राजे श्रीराधे निहाल ॥ २ ॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ याके जपे भौ छूटे जाल ॥ ३ ॥

पौढे सेज सयन रघुनंदनजू ॥ टेक ॥ दसरथनंदन आनंदकंदन ॥ याके यपे कटे भोफंदनजू ॥ १ ॥ सेवत सेस महेस ब्रह्मादिक ॥ करे सदा वेदमुख बंदनजू ॥२॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ प्रभू दुष्टनके सुख दंदनजू ॥ ३ ॥

गोवरधन नखपर हरी धारे ॥ टेक ॥ कोप किवो वृजमें राजा इंद्रहि ॥ प्रलेकारको झरी डारे ॥ १ ॥ पुरजन विकल बेहाल पुकारे ॥ सबविधि प्रभू रक्षा कारे ॥ २ ॥ छप्पन भोग प्रभू आपु सवारे ॥ इंद्र आय अज्ञा कारे ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख व्रजमें ॥ प्रभू दुष्ट मार सब किवो छारे ॥ ४ ॥

आली विंदावन स्याम विना सुना ॥ टेक ॥ जबसे बिछुरे रसिक स्यावरो ॥ दिन दिन रोग बढे दूना ॥ १ ॥ गउअन ग्वाल बाल सब व्याकुल ॥ नंद जसोदा भे जूना ॥ २ ॥ पुस्करदास हरीबिन देखे ॥ धृग धृग जीवन जगहूना ॥ ३ ॥

आली मदनमोहन गृह नही आये ॥ टेक ॥ लागे स्रावन मास सोहावन ॥ उमडि घटा चहुं दिस छाये ॥ १ ॥ बोलत मोर सोर करे दामिन ॥ पापी पपीहा रटि लाये ॥२॥ विरहाबान तान तन लागे ॥ वो कुबजा सवत हरी बेलभाये ॥ ३ ॥ पुस्करदास हरीबिन आवन ॥ वृथा जन्म जगमें जाये ॥ ४ ॥

आली हरीबिन पीर हरे ना कोई ॥ टेक ॥ विरहाबान तन अधिक सतावे ॥ निस दिन नयनन भरि रोई ॥ १ ॥ यह दुख दारुन परे कुबजापर ॥ सखी सूनी सेजपर गई सोई ॥ २ ॥ जो जिया जनती हरी करे बिछुरन ॥ सखी प्रेमबि-

वस कहेको होई ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामविनु देखे ॥ वृथा जन्म जग यौं खोई ॥ ४ ॥

मन करो भजन क्या भटकेमे ॥ टेक ॥ जो सुख हय गोविंदगुन गाये ॥ जो सुख नही कोई पटकेमें ॥ १ ॥ नही सुख अंग अभूषन साजे ॥ नही सुख उलटा लटकेमें ॥ २ ॥ रात देवस चाहो सुख जियाको ॥ चित चरनकमलसे अटकेमें ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ सुनो संतो सुख टटकेमें ॥४ ॥

सुख चाहो हरी गुन गायेमें॥टेक॥नहीं सुख अंग अभूषन साजे ॥ नहीं सुख मंडफ छायेमें ॥ १ ॥ नहीं सुख विंजन बहु प्रकारमें ॥ नहीं सुख हलाहल खायेमें ॥ २ ॥ नहीं सुख बाट हाट वहु धाये ॥ नहीं सुख वकवक लायेमें ॥ ३ ॥ पुस्करदास चहो सुख जियाको ॥ यक रगणो राम लगायेमें ॥ ४ ॥

चित चरनकमलमें लाय रहो ॥ टेक ॥ जेहि चितवो जेहि अभे करो तुम ॥ कालवलीको जाय दहो ॥ १ ॥ निरगुन नाम कामपद पूरन ॥ हरी जस सुनो सुनाय कहो ॥ २ ॥ अभे रहो तुम सहो सवनकी ॥ जस कीरत जग छाय रहो॥ ३ ॥ पुस्करदास हरी विन सुमिरे ॥ चौरासीमें जाय वहो ॥ ४ ॥

येरी आली वनमाली मन हर लीनो ॥ टेक ॥ मैं जल जमुना भरन जात रहीं ॥ मुरली वजाय जादू कीनो ॥ १॥ झपटि लपटि झटपट पट पकडो ॥ मोरी नरमी कलैया मसकि दीनो ॥ २ ॥ वाँकी चितवन चलाय नयन सर ॥ लागे हिया

बिचमें चीनो ॥ ३ ॥ पुस्करदास हरी रसिकसिरोमन ॥ वो सकल काममें प्रवीनो ॥ ४ ॥

कहां छाय रहे सुंदर स्यावरो॥टेक॥उमणे जोवन मदकी माती ॥ आली आवे न पाती हिया लागे घावरो ॥१॥ विरहा वान तान तन लागे ॥ फिरत देवानी मानी होय बावरो ॥२॥ पुस्करदास स्याम विन जीवन ॥ धृग धृग जीवन जग जावरो ॥ ३ ॥

तूं हे मन हरीको जस गावरे ॥ टेक ॥ नृमल काया पाये मनुज तन ॥ नाम अमृत फल फवरे ॥ १ ॥ जोहि सुमिरे सुख होत चहूँ दिस ॥ भ्रम भौसागर उतारि जावरे ॥ २ ॥ पुस्करदास हरीविन सुमिरे ॥ अंतसमे पछितात जावोरे ॥ ३ ॥

मन भजो सदा सिंभू भोला ॥ टेक ॥ जटनबीच श्रीगंगकी सोभा ॥ फनन व्याल कुंडल डोला ॥ १ ॥ चंद्र भाल सोभित ललाटमें ॥ हसत गाल छाने भंग गोला ॥ २ ॥ सुंडमाल गले व्याल लपटि रहे ॥ अंग भस्म दावे झोला ॥ ३ ॥ कर त्रिसूल डमरू डं वाजे ॥ वोढे वाघंमरको छोला ॥ ४ ॥ पुस्करदास सदाशिउ योगी ॥ अचल करत वह यह चोला ॥ ५ ॥

सखी हरी कीनो गवन लगे भवन भ्यावन ॥ टेक ॥ यक तो उमडि घटा घन घेरे ॥ सखी दूजे मास लगे सावन ॥ १ ॥ जवसे गये हरी सुधि नही लीजे ॥ सखी ना कोउ

वचन कहे आवन ॥ २ ॥ धृग धृग जीवन जक्त हमारो ॥ पिया परदेस रहे छावन ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस यक हरी-को ॥ चित चरनकमलमें रहे धावन ॥ ४ ॥

उधो हरीसे कहो बतिया समुझाय ॥ टेक ॥ जबसे वि-छुरन किवो हरी हियासे ॥ वृथा जन्म जग जीवन जाय ॥ १॥ अम्रत त्यागि रस खाय हलाहल ॥ ऐसे चतुर चित कहाँ ग-वाय ॥ २ ॥ पुस्करदासके जीवन जदुनंदन ॥ येक वारको द-रस देखाय ॥३ ॥

कहीं वेलमि रहे रसिया आपना ॥ टेक ॥ जबसे हरी जि-या सुरति विसारे ॥ सब सुखभय जैसे रयन सोपना ॥ १ ॥ पुस्करदासको वेग मिलो प्रभू ॥ निस दिन ध्यान चरन जपना ॥ २ ॥

मन हरी हितकारी दूजो कोई नहीं ॥ टेक ॥ याको जपत सुर सेस ब्रह्मादिक ॥ वेद पुकार पुकार कही ॥ १ ॥ विन हरी हेत हित करे न कोई ॥ पुस्करदास वीचार रही ॥ २ ॥

जियासे हरी नाम जपो भाई ॥ टेक ॥ याको यादि करे सिउ सेसही ॥ ब्रह्मा वेद गुन जस गाई ॥ १ ॥ यादि करे मन धू प्रहलादे ॥ अचल राज सुर पुर पाई ॥ २ ॥ वाल्मीक वो सूर कबीरा ॥ तुलसीदास जग जस छाई ॥ ३ ॥ युग युग योगी जन ध्यान धरत हय ॥ पुस्करदास सदा सुख पाई ॥ ४ ॥

उधो हरीविन मुझे नहीं चेन परे ॥ टेक॥ जबसे विछुरे रसिक सॉवरो ॥ तन कामक्रोध मद लोभ भरे ॥१॥ निस दिन व्याकुल रहत रसिकविन ॥ जयसे मीन जल छीन मरे ॥२॥ पुस्करदासको वेग मिलो प्रभू ॥ अब काहेको देर करे ॥ ३ ॥

वंसी वाजी धुनि सुनि सब भे वेहाल ॥ टेक॥ विधनाकी लिखनी विधि भूले ॥ भूले सदासिउ वजाउ वगाल ॥ १ ॥ जमुनानीर प्रवाहन लागे ॥ वन वन व्याकुल गोपी ग्वाल ॥ २ ॥ थकित भये रवीरथ मग धावन ॥ सेस सहसफन रहे हाल ॥ ३ ॥ जपत जाप योगीजन भूले ॥ फूले वन घन सब लता लाल ॥ ४ ॥ पुस्करदास स्याम सुख सवही ॥ दुष्ट विदारे मारे माल ॥ ५ ॥

हरीको गुन गावो रे मूढ मना ॥ टेक ॥ गुन गावो पावो सुख सवही ॥ इत उत तेरो दोऊ बना ॥ १ ॥ चेतो चार दिना जगवासा ॥ आसारामके हो जाजना ॥ २ ॥पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ मानो कहा तू मेरो तना ॥ ३ ॥

हरीविन पल छिन नही परत चेन ॥ टेक ॥ जैसे मीन विछुर जलसे दुख ॥ वैसे कटे सखी हमरी रेन ॥ १ ॥ पुस्करदासको पियाको मिलावे ॥ मोहि आन सुनावे को मीठी वयन ॥ २ ॥

गोरी जनककिसोरी भोरी भारी भाग पाई ॥ टेक ॥ कीनी तपस्या वहुतन तजिके ॥ जक्तपतीको वो पति पाई ॥ ॥ १ ॥ याको हिया हित करत कृपानिधी ॥ वेद पुरान विमल

जस गाई ॥ २ ॥ धंन धंन जीवन जक्तमें वाके ॥ याके संघ सब रिद्ध सिद्ध धाई ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस रघुवरके ॥ निस दिन ध्यान चरन चित लाई ॥ ४ ॥

खंमाच समाप्त.

सोरठ–पौढे सुख सुंदरी घनस्याम ॥ टेक ॥ अति विचित्र छवि रचो मंदिर ॥ झुकी मोतिन झांम ॥ १ ॥ रतनमणि मय सेज सोभा । लगे अति बहु दाम ॥ कोटि भान सुख याके मोहे । पतित पावन जाम ॥२॥ सेस सुमिरन करे निस दिन । रटे सहसो नाम ॥ सदा संकर ध्यान लाये । वेद ब्रह्मा हाम ॥ ३ ॥ जपत योगी याको युग युग । पाय पद वो धाम ॥ दास पुस्कर आस चरनन । चौकी हनुमत थाम ॥ ४ ॥

पौढे सुख अवध धाम सिया राम ॥ टेक ॥ बनो मंदिर विमल सोभा ॥ जडे मणिमय काम ॥ १ ॥ पुष्पसेज सुगंध चहुं दिस । लटकि मोतिन झांम ॥ काम कोटिन मोहे सुखपर । वेद ब्रह्मा हाम ॥ २ ॥ सिंभुके उर वास निस दिन । सेस सहसो नाम ॥ रटत युग युग याको योगी । पाय पद निरवान ॥ ३ ॥ कोटि पतितन सरन याये । जाको तारे जाम ॥ दास पुस्कर चौकी हनुमत । जनकसुतके वाम ॥ ४ ॥

पौढे माई गोपीपति गोपाल ॥ टेक ॥ अधिक सोभा सेज सुंदर ॥ जडे मोतिन लाल ॥ १ ॥ अंगमें श्रीरंगराधे । गले मोतिन माल ॥ लालजूके सेइ चरनन । निरखि नयन निहाल

॥२॥ गान गंधर्व करत मंदिर। देत तारी ताल॥ दास पुस्कर सरन जाये। चौकी हनुमत लाल ॥ ३ ॥

भजु मन नंदके नंदन ॥ टेक ॥ याके सुमिरे सुख चहूं दिस ॥ कटे जमफंदन ॥ १ ॥ वेद ब्रह्मा गाय जस गुन। सेस सुख वंदन ॥ सदा संभू ध्यान लाये। रहे मनरंजन ॥ २ ॥ सीसपर सोभा मुकुटकी। खौर दिये चंदन ॥ संख चक्र गदा पद्म धारे। दुष्टको दंदन ॥ ३ ॥ संतहित हरी रूप धारे। भक्त करि वंदन॥दास पुस्कर आस जदुवर। करत मनसंदन॥४॥

भजु मन सिआ सुंदर राम ॥ टेक ॥ याके जपते मिटे भौ सब ॥ होत पूरन काम ॥ १ ॥ क्रीट कुंडल मुकुट सोभा। जरकसीको याम ॥करमें लीनो धनुस वाने।जीति सब संग्राम ॥ २ ॥ भक्तके हित रूप धारे। संतके सुख धाम ॥दास पुस्कर चहों सुख जिया। जपो निस दिन नाम ॥ ३ ॥

भजु मन उमापतिही कृपाल ॥ टेक ॥ जटनमें श्रीगंग राजे ॥ लपटि क्रालहि व्याल ॥ १ ॥ खौर लाल ललाटमें छवि। चंद्र सोहे भाल ॥ हसे गाल गले मुंडमाले। अंग भस्मे डाल ॥ २ ॥ येके करमें धरि त्रिसूले। दूजे डमरू हाल ॥ रंग भंग धतूर खावे। वैठे सिंघन खाल ॥ ३ ॥ विमल वाहन साजे नंदी। गले पुष्पन माल ॥ दास पुस्कर गिर सोहावन।गौरी अंग निहाल ॥ ४ ॥

भयौ आजु नंदके आनंद ॥ टेक ॥ प्रगटे दीन दयाल स्वामी ॥ नाम कृष्णहीं चंद ॥१॥ थार भरि भरि सखी साजे।

लसे भूषन अंग॥ ठाढीं द्वारे नंदजूके। करत असतुत बंद॥२॥ धंन गोकुल धंन ग्वालिन। धंन जसोदानंद ॥ दास पुस्कर नाम जपते। कटे जमको फंद ॥ ३ ॥

दयानिधि भक्त हितकारी ॥टेक॥कोप कीनो इंद्र वृजमें॥ छत्र गिरधारी ॥ १ ॥ सभामें पति राखि द्रोपति। धाये वन-वारी ॥ ढेर अंमर घेरे चहुं दिस। वाँह बलहारी ॥ २ ॥ दीन विषमा राना मीरा। अमृत मुख डारी॥ दास पुस्कर आस चरनन॥ पतित प्रभू तारी ॥ ३ ॥

मूढ मन जन्म जग खोये ॥ टेक ॥ जन्म दीनो भजनको प्रभू॥ वादा करि रोये ॥ १ ॥ वालापन तुम खेलि खोये। ज्वानी मद सोये ॥ बूढापन तन थकित सब भय। चलत मग रोये ॥ २ ॥ तीनोपन तन गये यौं तेरो। नाम ना पोहे ॥ दास पुस्कर चहो सुख जिया। बीज घन बोये ॥ ३ ॥

चलो आली राधेरवन किवो सेन ॥टेक॥ स्यांवली सूरत सोहावन॥ मोहनी मुख वेन ॥ १ ॥ सेस सिंभू सदा सुमिरे। परे नहि पल चेन ॥ दास पुस्कर सदा सुखहरी। झुकी निद्रा नयन ॥ २ ॥

किसोरीजी नीद नयन न भरे॥ टेक ॥ बनो मंदिर अति सोहावन॥ झुकि ललानन हरे॥ १ ॥ सेज सोभा जक्त लोभा। जडित पालन परे॥ सेस सिंभू सदा सेवे। वेद ब्रह्मा उच्चरे ॥ २ ॥ स्यावली सूरत सोहावन। बयन अमृत झरे ॥ दास पुस्कर सुमिरि सुख ले। नम पतितन तरे ॥ ३ ॥

पौढे सुख सेन तीरथ स्याम ॥ टेक ॥ श्रीद्वारिकामें कुसासुर बधि ॥ कुसा संकर नाम ॥ १ ॥ बेट संखा सुर पछारे। बैठि किवो विस्राम॥ वने मंदिर परम सोभा। झूलि मोतिन झांम ॥ २ ॥ दुष्टको दलि मलि विदारे। संतकारन काम ॥ दास पुस्कर सदा सोभा। मुक्तके सुख धाम ॥ ३ ॥

वौरे मन मोह निसा सोये ॥ टेक ॥ फिरत निस दिन पेट धंधे ॥ गुनत गुन रोये॥ १ ॥ मोर तोरन त्यागे बंदे। फंदे परि खोये ॥ दास पुस्कर सुमिरि लाये। होनी हो होये ॥ २ ॥

त्रिभुअननाथ करि विस्राम ॥ टेक ॥ सेज सुंदर जडे मणिमय॥ लगे अति बहु दाम ॥ १ ॥ क्षीरसागर सयन मंदिर। झुकी मोतिन झाम ॥ श्रीलक्ष्मी चरन चापे। मुख मोहे कोटिन काम ॥ २ ॥ सेस सिउ ब्रह्मादि नारद। सारदा गुने नाम ॥ योगी जन जेहि याप यपते। पाय पद वो धाम ॥ ३ ॥ दुष्टको दलि मारि मरदे। भक्तजन आराम॥ दास पुस्कर आस प्रभुकी। पतित पावन जाम ॥ ४ ॥

मूढ मन सरन सुखदाई ॥ टेक ॥ याहि सुमिरे सेस ब्रह्मा ॥ ध्यान सिउ लाई ॥ १ ॥ धू प्रहलादे याद कीनो। अचल सुख पाई ॥ भे अनेको भक्त जन जग। ग्यान गुन गाई ॥ २ ॥ रामको जे न नाम भूले। भवर भे पाई ॥ दास पुस्कर सुमिरे रे मन। चरन चित लाई ॥ ३ ॥

समुझ मन रामगुन गावो ॥ टेक ॥ जाहि सुमिरे सुख चहूं दिस ॥ कीरत जग छावो ॥ १ ॥ भौको तू तजि देहु भ-

मना। अमृत फल खावो ॥ दास पुस्कर 'समुझि सब भजे । परम पद पावो ॥ २ ॥

बौरे मन हरिन जस गाये ॥ टेक ॥ बालापन तुम खेलि खोये ॥ ज्वानी मदा छाये ॥ १ ॥ आये वृधपन गये यौं तन । माया लपटाये ॥ दास पुस्कर वीति औसर । समुझ पछिताये ॥ २ ॥

सुंदर सेन सिया रघुवीर ॥ टेक ॥ अति सोहावन सेज मंदिर ॥ जडे मानिक हीर ॥ १ ॥ परम सुख श्रीअवध सरजू। निकट नृमल नीर॥ देवता सब ठाढे चौकी । सनमुख हनुमत वीर ॥ २ ॥ दुष्ट दलि मलि संतके हित । दीनो सुख गंभीर ॥ दास पुस्कर पतित ठाढो । हरो तनकी पीर ॥ ३ ॥

सोरठ समाप्त.

दादरा—आयौ री सखी गृह मेरे मनमोहन ॥ टेक ॥ माखन खाये छाछ लढाये ॥ फोरि दिहो मटुकीको कोरन ॥१॥ माखन चोर भोर गृह आये ॥ जाहुं सखी मे गैअन दोहन ॥२॥ लाख कहूँ मानत नहीं येको ॥ परिगे वान कूबानन चो-रन॥३॥ पुस्करदास स्याम व्रजजीवन ॥ प्रभूके चरन चित लागत मोरन ॥ ४ ॥

आये जनकपुर श्रीरघुनंदन ॥ टेक ॥ धनुस जग्य जनक प्रन ठानो ॥ जो कोई तोरे याको सियारज वंदन ॥ १ ॥ जुरे भूप गुनरूपके आगर ॥ उठे न धनुस किहो नही खंडन॥२॥ विस्वामित्र संग राम लखन गये ॥ तोडे धनुप किहो तीन खं-

डन ॥ ३ ॥ पुस्करदास सुख सिया स्वयंमर ॥ चरनकवल लागे रज वंदन ॥ ४ ॥

कोमल चरन हरन भौभंजन ॥ टेक ॥ सेस महेस सदा गुन गावे ॥ ब्रह्मा वेद करे मुख वंदन ॥ १ ॥ भक्तनके हित चहुं दिस धावे ॥ दुष्टदलन संतन मनरंजन ॥ २ ॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ काल फासपर देत हे दंदन ॥ ३ ॥

यक सुंदर स्याम सुघर राधे प्यारी ॥ टेक ॥ मोर मुकुट सिर स्यामके सोहे ॥ चमकि चंद्रिका राधेजूके न्यारी ॥ १ ॥ गले माल वनमाल लालके ॥ राधे हार हिया लटकत भारी ॥ २ ॥ पीतांवरकी कछनी काछे ॥ प्यारी आँछे सुहा सारी जारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा ॥ श्रीराधे तन मन धन वारी ॥ ४ ॥

आवत राम लखन सिया वनसे ॥ टेक ॥ पुष्प वेवान चढे चतुरानन ॥ श्रीअवधपुरी पूरी भै धनसे ॥ १ ॥ चौंर ढुरावत गावत गुन हनुमत ॥ सदा सँभीर रहत प्रभू मनसे ॥ २ ॥ मात मुदित मन हृदे लगावत ॥ भेंटत राम भरथ सत्रुहनसे ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ दुष्टदलन कीनो प्रभू तनसे ॥ ४ ॥

सुनहूं स्याम क्यों मारग ठारे ॥ टेक ॥ काह तुमारो नाम गाम हय ॥ कौन पिता कौन मात तुमारो ॥ १ ॥ सुनु प्यारीं पिता नंद नृपत हे ॥ मात जसोमत करत हय प्यारो ॥ २ ॥ सुनु प्यारी पूछत हौ हमसो ॥ लागत दधिको दान हमारो ॥ ३ ॥

पुस्करदास आस राधेवर ॥ तन मन धन वनपर कीनो वारो ॥ ४ ॥

मांगत दधिको दान विहारी ॥ टेक ॥ यह मगमें मेरो दान लगत हय ॥ बिन दीने जाय देहुं न प्यारी ॥ १ ॥ सुनु प्यारे पृया नाम हमारो ॥ लैहो छिनाय सुख मुरली तुमारी ॥ २ ॥ पुस्करदास आस राधावर ॥ वार वार चरनन बलिहारी ॥ ३ ॥

मन हर लीनो मेरो स्याम विहारी ॥ टेक ॥ श्रीवृंदावनकी कुंज गलीमें ॥ बंसी बजाय कीनो मन मतवारी ॥ १ ॥ लपटि झपटि झटपट पट पकडो ॥ फाटि गई नौलाखकी सारी ॥ २ ॥ येरी सखी ठाकुर ठग वृजमें ॥ श्रीराधावर गिरवरधारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम सुख वृजमें ॥ तन मन धन वनपर कीनो वारी ॥ ४ ॥

लागे नीको मोहि रामको नामा ॥ टेक ॥ भरे अमृतरस प्रेमको प्याला ॥ अचल होत तेरो यह जामा ॥ १ ॥ वीके अनोखी चीज हाटमें ॥ लेहु खरीद लगे नहीं दामा ॥ २ ॥ औसर चूकि चहो फिर नाही ॥ समुझि समुझि पछितै हो कामा ॥ ३ ॥ पुस्करदास समुझ मन भाजि ले ॥ अजर अमर हृदे धरो नामा ॥ ४ ॥

बँगला पुष्पनकी छवि छाय ॥ टेक ॥ वेला चमेली जूही नेवारी ॥ केवडा गुलाव लगे महमाय ॥ १ ॥ कंचन मणिमय मुकुटकी सोभा ॥ सोभा अतिछवि वरनी न जाय

॥ २ ॥ गले माल पुष्पनकी सोभा ॥ मोतिन मणि यामें रहे लटकाय ॥ ३ ॥ अंग अभूषन पुष्पनके राजे ॥ पुस्करदास चरनन चित लाय ॥ ४ ॥

सखी सुनु स्यानी भरन गई पानी ॥ टेक ॥ पनिया भरन गई वहि पनिघटवा ॥ देखि स्याम मोहिं मन मुसकानी ॥ १ ॥ पनिया भरि धरि सिरपर गागर ॥ नटनागर मोरी चोली मसकानी ॥ २ ॥ लाख कहूँ मानत नही येको ॥ वार वार मेरो मुख चुंमानी ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ हरीचरननमें चित लपटानी ॥ ४ ॥

स्याम सरीरा हरो तनपीरा ॥ टेक ॥ जबसे छांडि गये मनमोहन ॥ निस दिन व्याकुल सकल सरीरा ॥ १ ॥ औखद मंत्र लगे नही येको ॥ सदा रहे उर अंतर पीरा ॥ २ ॥ विरहाविकल नही कल पल मोहिं ॥ नीर वहे नयननसो झीरा ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम विनु देखे ॥ धृग धृग जीवन मेरो सरीरा ॥ ४ ॥

भजो मन प्यारे तू नंददुलारे ॥ टेक ॥ यह तनकी तनीको नही आसा ॥ पल छिनमें जिया होत हे न्यारे ॥ १ ॥ सुख संपत सब रयनको सोपना ॥ अंतसमें नहीं संघ सिधारे ॥ २ ॥ औसर चूकि चहो फिरि नाही ॥ फिरि फिरि ऐहो लवट येही डारे ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ वार वार जिया तोहि पुकारे ॥ ४ ॥

भैरवी दादरा—मेरे हृदे विराजे श्रीजनकलली। फसे नयनो राजकुमार अली ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल ॥ सियाजूके हार हिया सोहे भली ॥ १ ॥ पीतांबरकी काछे कछनी ॥ सिया सूहा सारी गुथे पुष्पकली ॥२॥ पुस्करदास निरखि सुख संतन ॥ सुख उपजे सब गली गली ॥ ३ ॥

दादरा—आली मोहि मग मिलो नंदलाला ॥टेक॥ श्रीवृंदावनकी कुंजगलीमें ॥ लीनो संघ सखा ग्वालवाला ॥ १॥ दौडि झपटि पट पकडो मेरो ॥ दधि खाई मटुकी फोरि डाला ॥ २॥ लाख कहूं मानत नही येको ॥ ऐसो ढीठ ठाकुर वंसीवाला ॥ ३ ॥ पुस्करदास प्रभु रसिकसिरोमन ॥ तन मन धन चरनन चित घाला ॥ ४ ॥

आजु स्याम मेरो बहिंया मरोरी॥टेक॥मे दधि बेचन जात कुंजनमें ॥ झपटि लपटि मटुकी चट फोरी ॥ १ ॥ दधि माखन सब खाये बहाये ॥ वंसी बजाय मोपे जादू करो री ॥२॥ लाख कहूं मानत नही येको ॥ करत स्याम अपनी बरजोरी॥३॥ पुस्करदास स्याम व्रजजीवन ॥ नंदके लाल पैंया लागो तोरी ॥ ४ ॥

सोरठ दादरा—किनो वीरताई वल अंजनीके लाला ॥ टेक ॥ सिया सुधि लाये लंक जराये ॥ वाग उजारि असुर सब घाला ॥ १ ॥ अतुलित वल करि लाये सजीवन ॥ हरो सक्ती लछिमनजीको ज्वाला ॥२॥ पटकि लँगूर फारि धर-

नीको ॥ महिरावन वधि लाये दोउ बाला ॥ ३ ॥ पुस्करदास धंन अंजनीनंदन ॥ सदा रहत रघुवर गले माला ॥ ४ ॥

सुमिरो राम कृष्ण वलिहारी ॥ टेक ॥ रामरूप सुख अवध सोहावन ॥ कृष्णरूप वृजमें सुख सारी ॥ १ ॥ रामरूप धरिं धन्वा तोरे ॥ कृष्णरूप काली फन भारी ॥ २ ॥ रामरूप रावन संघारे ॥ कृष्णरूप धरि कंस पछारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास भजो राम कृष्ण गुन ॥ कोटिन पतित सरन गये तारी ॥ ४ ॥

सुमिरो रामचरन सिया प्रानन ॥ टेक ॥ जेहि चरनन सेवत सिउ संकर ॥ निस दिन जाप जपत उर ध्यानन ॥ १ ॥ जेहि चरनन ब्रह्मा सुर सेवे ॥ नारद सारद जपत गुन ज्ञानन ॥ २ ॥ जेहि चरनन जोहत योगी जन ॥ सेस सहसमुख महिमा न जानन ॥ ३ ॥ पुस्करदास चहो सुख जियाको ॥ निस दिन ध्यान चरन चित सानन ॥ ४ ॥

झूलन दादरा—हरीविन झूलाको झकमारे झूलन॥टेक॥ नहि भावे रितु पावस सजनी ॥ नहि भावे जमुनाजीको कूलन ॥ १ ॥ नहि भावे मोहि स्याम रंग वदरा ॥ येक सुंदर स्याम कुवजासंघ भूलन ॥ २ ॥ ना मोहि स्रवनन राग सोहाये ॥ लगे हियाविच कसके हूलन ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ प्रभूको चरनरज कोई नही तूलन ॥ ४ ॥

सोरठ दादरा—उमडि वदावा घटा घन घेरे॥टेक॥वोलत मोर सोर करे दामिन ॥ पापी पपीहा पिया पिया टेरे ॥ १ ॥ उमडी जवानी जानी नही मोहन ॥ कुवजा सवतके परि

गये फेरे ॥२॥ वरसत बुंद नीर झरे नयनन ॥ उठत पीर तन धीर न मेरे ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम विन जीवन ॥ जैसे मीन बिछुर जल केरे ॥ ४ ॥

श्रीद्वारिकानाथ स्रवन सुनु मेरो ॥ टेक ॥ तन मन धन अरपन कीनो तुमपर ॥ जब चाहो जव नाथ निवेरो ॥ १ ॥ मात पिता जगदाता तुमही ॥ और आस नही दूजे हेरो ॥२॥ लगी प्रीत पीतम चरननकी ॥ करो कृपा गुन गाँऊ तेरो॥३॥ पुस्करदासकी याही विनती ॥ जान पतित प्रभू जन कर फेरो ॥ ४ ॥

येक सुंदर स्याम वनो वांके बिहारी ॥ टेक ॥ बाँकी अदासे पेच सँवारे ॥ जापर कँलगी लगी हय न्यारी ॥ १ ॥ मणिमय कुंडल नयना रतनारे॥ जुलफन केस लटाके कारी ॥ २ ॥ अधर धरे मुख मुरली टेरे ॥ हेरे गोपी ग्वाल मतवारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख व्रजमें ॥ धंन धंन चरन कवल वलिहारी ॥ ४ ॥

दादरा—मरि सरिजरवे भजन कब करवे ॥ टेक ॥ वादा करिके आये जक्तमें ॥ सव हम तजिवे चरन पद भजवे ॥१॥ बालापन तुम खेलि गँवाये ॥ आई जवानी सव जोरि जोरि धरवे॥ २ ॥ वृथा जवानी तेरी जैहें जक्तसे ॥ आई बुढाई जब खाट धरि परवे ॥ ३ ॥ पुस्करदास श्रीरामभजन विन ॥ भौसागर विच कैसे उतवे ॥ ४ ॥

नरतन पाये भजन कव कारि हे ॥ टेक ॥ जौ तुम राम

भजन ना करि हो ॥ फिरि फेरा चौरासी पारि हो ॥ १ ॥ भये अचेत चेत चितचातुर ॥ भौसागरमें वुडि वुडि मरि हो॥२॥ पुस्करदास कहे कर जोरे॥विन हरिनाम नीर नही तरि हो॥३

झूलन दादरा–झमकि झुकि झूले रसिक स्याम रसिया ॥ टेक ॥ कंचनखंभ कसे डोर रेसम ॥ नृमल नीर हीर मन हसिया ॥ १ ॥ सोभा सीसपर मोर मुकुटकी ॥ कानन कुंडल बाजे सुख बासिया ॥ २ ॥ झुकी लता अति सघन प्रफुल्लित ॥ भूषन बसन सबे अंग लसिया ॥३॥ पुस्करदास स्याम मनमोहन ॥ ध्यान चरनपर तन मन धसिया ॥ ४ ॥

सिया पिया झूले अवधपुर झूलन ॥ टेक ॥ कंचन खंभ जडे मनि मानिक ॥ छाये लतानन फूले सब फूलन ॥ १ ॥ चहुं दिस उमडि घुमडि घन बरसे ॥ भरे उमंग सखिन देत हूलन ॥ २ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ ध्यान चरनपर तन मन भूलन ॥ ३ ॥

झूले राम रसिया सुंदर सिया प्यारी ॥ टेक ॥ कंचन खंभ गडे सरजूतट ॥ जडे नग पन्ना रेसम डोर डारी ॥ १ ॥ झुकी लतानन वन घन फूले ॥ छबि झाँकी बाँकी वाकी न्यारी ॥२॥ झोंका देत लेत सुख संतन ॥ अंत न पावे ब्रह्मा त्रिपुरारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास प्रभू पतितन पावन ॥ तन मन धन वनपर कीनो वारी ॥ ४ ॥

सोरठ दादरा–मति फोरो मोहना हमारी सिर गागरी ॥ टेक ॥ सास बुरी घर सैंया बूरो हय ॥ लहुरी ननदीया वडी

वोझागरी ॥ १ ॥ जौ नही मानो मैं कहियो कंससो ॥ ले जैहे धरि बाँहसे रिवागरी ॥ २ ॥ लाख कहूँ कछू लाज न आवे ॥ मनभावे सो करो रगर डागरी ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम बृजरसिया ॥ वसिया बजाये मोहे वृजसागरी ॥ ४ ॥

नींद भरे हरी सयन सोहाये ॥ टेक ॥ अतिविचित्र छवी वनो हय मंदिर ॥ मोतिन मणिको झालर छाये ॥ १ ॥ सेजकी सोभा देखत मन लोभा ॥ मंद सुगंध बहु रंग सोहाये ॥ २ ॥ जस गावे गंधर्व अपछरा ॥ साज समाज सब राग सुनाये ॥ ३ ॥ पुस्करदास देवनकी चौकी ॥ सनमुख श्रीहनुमानजी आये ॥ ४ ॥

निरतत स्याम सुंदर राधे प्यारी ॥ टेक ॥ अंग अभूषन बहू रंग वसन कसे ॥ कोटि काम छवी जात लजारी ॥ १ ॥ सजि सजि साजे भारी सब रागे ॥ गावत हरी जस प्रेम मतवारी ॥ २ ॥ बीन बाँसुरी बाजत हरीमुख ॥ देत ताल घूंगर झँनकारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख बृजमें ॥ देव गगन चढे सुमन झरि डारी ॥ ४ ॥

श्रीराधे स्याम झॅमकि झूले झूला ॥ टेक ॥ हरे लतानन कदमकी छाहन ॥ नृमल नीर कालिन्द्रीके कूलन ॥ १ ॥ कंचन मणिमय गडो हिंडोला ॥ रेसम डोर लगे बहु फूलन ॥ २ ॥ झूलत स्याम प्रान पिया प्यारी ॥ झोकत सखिन हरखि मन हूलन ॥ ३ ॥ पुस्करदास प्रभू स्याम सिरोमन ॥ ध्यान चरनपर तन मन भ[illegible]न ॥ ४ ॥

वॉंके छेला गयल मोरी रोके॥ टेक ॥ मे जल जमुना भरन जात रहीं ॥ ओचक आये प्रानपति टोंके ॥ १ ॥ वरजोरी मानत नही येको ॥ लपटि झपटि झट गागर झोंके॥ २ ॥येरी सखी सुनु चतुर सेआनी ॥ मागत दधिको दान दे मोके ॥३॥ पुस्करदासके रसिक स्यॉवरो ॥ तन मन धन अरपन किवो वोके ॥ ४ ॥

राखो पति गोवरधन धारी ॥ टेक ॥ वूडतही वृज आपु वचाये ॥ ग्वाल वाल श्रीकृष्ण पुकारी ॥ १ ॥सभावीच द्रोपति पति राखे ॥ खैंचत चीर दुसासन हारी ॥ २ ॥ राखो पति मीरा मन गिरधर ॥ विप अमृत हो मुखमें डारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस जदुवरके ॥ धंन धंन चरनकवल वलिहारी ॥४॥

देखो संतो रथ वैठे नंदलाला ॥ टेक ॥ मोर मुकुटकी लटकी सीसपर ॥ कानन कुंडल गले मणिमाला ॥ १ ॥ मुख मुरली पीतांवर सोहे ॥ कर संख चक्र गदा पदुम विसाला ॥ २ ॥ सोभित अंग श्रीरंग राधिका ॥ कसे सुहा सारी हार हृदेविच हाला ॥ ३ ॥ पुस्करदास आनंद नंदसुत ॥ ध्यान चरन तन मन धन घाला ॥ ४ ॥

भैरवी दादरा—ढाढो ढीठ लॅंगरवा नंदजूके लाल। संघ सखा लिवो गोपी ग्वाल ॥ टेक ॥ मोर मुकुट वाके सिर सोहे ॥ गले सोभित वेजंती माल ॥१॥ मुख मुरली सुर सोर सुनावे ॥ गावे रागिन राग रसाल ॥ २ ॥ पीतांवरकी काछे

कछनी ॥ वोढे वसन वो साल दुसाल ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम सुख बृजमें ॥ निरखि रूप मन होत निहाल ॥ ४ ॥

सोरठ दादरा–रथपर देखो स्यामकी सोभा ॥ टेक ॥ जेहि सूरत सुर नर मुनि मोहे ॥ कोटिकाम देखत मन लोभा ॥ १ ॥ मोर मुकुट मुख मुरली सोहाये ॥ श्रीराधे चरनन चित गोभा ॥ २ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ दीन पतित पावन प्रभू वोभा ॥ ३ ॥

चलो सखी झूले कदमतर झूला ॥ टेक ॥ बंसीवट तट कदमकी छाहन ॥ नृमल नीर श्रीजसुनाको कूला ॥ १ ॥ हरी लतानन झुकी चहूँ दिस ॥ फूले सोहावन कदमको फूला॥२॥ झूलत रसिकस्याम सुख राधे ॥ सखियन झुकि झुकि मारत हूला ॥ ३ ॥ पुस्करदास आनंद नंदसुत ॥ जाको सुरत सुर नर मुनि भूला ॥ ४ ॥

दादरा चंचरीक–मोहे री मन मदनमोहन बजाई वन वाँसुरी ॥ टेक ॥ संकरको ध्यान गये। ब्रह्माको ज्ञान गये ॥ नारद सारद गणेश । सवे ध्यान धासुरी ॥ १ ॥ गोपी ग्वाल विकल हाल । तजिके गृह गोद बाल ॥ हँसत गाल हो निहाल । जसुनानिकट जासुरी ॥ २ ॥ वछरन तृन छीर तजे। गउअन वन जाय भजे ॥ अस्थिर जल जमुना वहत । पक्षी तन फासुरी ॥ ३ ॥ पुस्करदास अतिआनंद । नंदके भे कृष्णचंद ॥ भक्तनमें हरन करन । वृजमें प्रगटे तासुरी॥४॥

दादरा–तेरी वन जैहें जानकीवरसे ॥ टेक ॥ क्रीट मु-

कुट मकराकृत कुंडल ॥ धरे प्रभु धनुस वान वो करसे ॥१॥ संतनके हित चहुं दिस धावे ॥ दुष्टन मूल उखारे जरसे ॥ २ ॥ कोटिन पतित तरे याके सरने ॥ योगी जन दरसनको तरसे ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ करि ले प्रेम तू धरनीधरसे ॥ ४ ॥

सैंयाँ सारी रेन वेन नही वोले ॥ टेक ॥ वहुविधि जतन करूँ मे सजनी ॥ नींद न नयनन खोले ॥ १ ॥ तन मन धन अरपन सव कीनो ॥ हाले हलाये न वो कहीं डोले ॥ २ ॥ रूठे पियाको कोई जाय मनावे ॥ देइ हों मे वाको मणि मोतिन अमोले ॥ ३ ॥ पुस्करदास पियाके विछुरे ॥ धृग धृग जीवन यह जग चोले ॥ ४ ॥

सोरठ दादरा—भूलो न राम काम सव भूलो ॥ टेक ॥ जो तुम राम नाम मन भूलो ॥ होइ हो यह तन अंधा लूलो ॥ १ ॥ ये मन रहत मलीन सदा तुम ॥ टूटी खाटपर झुकि झुकि झूलो ॥ २ ॥ यमको ग्रास त्रास संघ धावे ॥ जहाँ जावो तहाँ मारे हूलो ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस करो हरीसो ॥ निस दिन ध्यान चरन चित फूलो ॥ ४ ॥

भैरवी दादरा—मेरे नयनोंमें श्रीगिरधारी फसे। तन मनमें राधे प्यारी वसे ॥ टेक ॥ स्यावली सूरत मोहनी मूरत ॥ कोटि काम मुख वाके हसे ॥ १ ॥ मोर मुकुट स्याम सीस विराजे ॥ मोतिनमाँग श्रीराधे कसे ॥ २ ॥ पीतांवरकी कॉछे कछनी ॥ सूहा सारी अंग राधे कसे ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम

वृजजीवन ॥ चरन ध्यान श्रीराधेके धसे ॥ ४ ॥

तू ये मन भजि ले राम सिया। वृथा जन्म जग जात छि-या ॥ टेक ॥ नरतन पाये गावो गुन गोविंद ॥ तू प्रेमको प्याला भरि पियो हिया ॥ १ ॥ यह तन रैनको सोपना जानो॥ कल बाँधि ले जैहें जिया ॥ २ ॥ वाद करिके आया जक्तमें ॥ सब तजि भाजि ह्वो चरन पिया ॥ ३ ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे ॥ मोरे मन चित चरन दिया ॥ ४ ॥

दादरा–ठाढे कदमपर श्रीगिरधारी ॥ टेक ॥ ठाढी रही जलमें बहु सखिया ॥ लेकर चीर कदम डार डारी ॥ १ ॥ बोली प्रेमसे सखी सबे मिली ॥ दे दे चीर हमारी मुरारी ॥ २ ॥ कहे कृष्ण सुनु चतुर सेयानी ॥ चीर देहुँ जलसे हो न्यारी ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस जदुवरके ॥ तन मन धन वनपर कीनो वारी ॥ ४ ॥

भैरवी दादरा–फसे नयनोंमें राजकुमार अली। तन मनमें बसे जनक लली ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुटकी लटकि सीसपर ॥ सियाके हार हिया सोहे भली ॥१॥ स्याँवली सूरत मोहनी मूरत ॥ मेरो मन मोहे प्रमोध गली ॥२॥ पुस्करदास आस रघुवरके ॥ सियाके चरन चित हुलसि हली ॥ ३ ॥

हितकारी हरी धरो दसो अवतार । दुष्टदलन संतन हितकार ॥ टेक ॥ मच्छरूप धरि मारे संखासुर ॥ कच्छरूप सागर मथि डार ॥ १ ॥ वाराहरूप हरन्याक्ष हतन किवो ॥ नरसिंघ रूप हरनाकुस फार ॥ २ ॥ वामन रूप बलिके ठाढे

द्वारे ॥ परसराम छत्रीकुल मार ॥ ३ ॥ रामरूप दस सीस सँघारे ॥ कृष्णरूप धरे कंस पछार ॥ ४ ॥ बौद्धरूप जगदीस कहाये ॥ कलिजुग अकलंकी औतार ॥ ५ ॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ कोटिन पतित सरन गये तार ॥ ६ ॥

दादरा समाप्त.

वसंत—आये रितु वसंत आनंद सोहाय । सोभित सिया सुंदर लखन भाय ॥ टेक ॥ साजे अंग अभूषन बहु बसन छाय ॥ सिरपेंचकी रेंच कलगी लगे जाय ॥ १ ॥ कर धनुस बान तरकस कमान ॥ भक्तनहित चित धरी धरनी धाय ॥ २ ॥ सुमिरत सिउ ब्रह्मा मुनि ध्यान लाय ॥ कहे पुस्करदास सुख हरीगुन गाय ॥ ३ ॥

आये रितु वसंत आनंदबहार । कोइलीया बोले जाय अम्मा डार ॥ टेक ॥ उमडे मदजोवन गोरी भरे हो थार ॥ वाजे डफ ढोल नगाडे तार ॥ १ ॥ फूले बन घन धन निगम सार ॥ दास पुस्कर निरखि सुख अगम अपार ॥ २ ॥

आये रितु वसंत मूठिन गुलाल । वाजे डफ ढोल नगाडे ताल ॥ टेक ॥ फूले सब बन घन हरपि हाल ॥ गावे गुन गोरी बजाये गाल ॥ १ ॥ छाये अति आनंद सुत नंदलाल ॥ कहे पुस्करदास सुख निरखि निहाल ॥ २ ॥

वसंत कापी—आली झूमत आये वसंत । कंथबिन मोहिं न भावे ॥ टेक ॥ फूले सब बन घन फूले डार अंमा । कोइल कुहुक

सुनावे ॥ अंग अभूषन लाये अरगजा । लाल गुलाल उडावे दोउ कर ताल बजावे ॥ १॥ धंन धंन भाग सखीजन वाके । जाके पिया घर भावे ॥ पुस्करदास कहे सुनु सजनी । यहि विधि लाड लडावे हरीको जस गुन गावे ॥ २॥

होरी काफी—होरी खेले हर्षि भक्तन हितकारी ॥ टेक॥ गज औ ग्राह लडे जलभीतर । बूणत गजराज उबारी ॥ नर-सिंघरूप प्रहलाद हेत धरे । हरनाकुस वोद्र विदारी ॥ सदा संतन सुख भारी ॥ १ ॥ इंद्रकोप कीनो बृज ऊपर । प्रलेकार करि डारी ॥ वूडत बृज बृजराज बचाये । नखपर गिरवर धारी॥ सदा संतन सुख भारी ॥ २ ॥ सभावीच करुना करे द्रोपती । नाथमें लाज उधारी॥स्रवन सुनत सारी बिच नारी । खैंचत भुजबल हारी ॥ सदा संतन सुख भारी ॥ ३ ॥ मीरा मन सुमिरन किवो गिरधर । विष अमृत मुख डारी ॥ पुस्करदास आस चरननकी । प्रभू दीनपतितको तारी॥सदा भक्तन हितकारी ॥ ४ ॥

होरी—सुन्दर स्याम रंग भरे खेले होरी॥टेक॥इत मे स्याम सखा बनिठनके । उत वृषभानकिसोरी ॥ खेलत होरी गावत ग.री । धूम मची चहुं वोरी ॥ मानो मे घन घन घोरी ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण बलिराम सुंदर तन । भरि गुलालकी झोरी ॥ झोक-त झोरी हसत किसोरी । लपटि गये मुख रोरी ॥ आनंद नही जात कहो री ॥ २ ॥ भरि भरि रंग भंग पिये लोटे । चितवन-की छबि वोरी ॥ लपटि झपटि वोरी पीतांवर । गलेमालमणि

तोरी ॥ हंसत वृषभानकिसोरी ॥ ३ ॥ धंन धंन भाग जागे वृज सारी । जेहिं संघ फाग रचो री ॥ पुस्करदास स्याम सुख सवहीं । प्रेमविवस वस होरी ॥ ध्यान चरनोंमें लगो री ॥४॥

सियाके समाज राज रंग भारी ॥ टेक ॥ चहुं दिस पत्र पठाये जनकजू। भूपति आय जुरो री ॥ श्रीराम लषन औधेसलाल दोउ । मुनि संघ आय पधारी ॥ गये देखन फुलवारी ॥ १ ॥ पूजन गौर किसोर जानकी । सखिअन संघ सिधारी ॥ देखि रूप दोउ स्याम गौर तन।रामरूप उर धारी ॥ गौरसे विने पुकारी ॥ २ ॥ उठे भूप तोरनको धनुस । सब वल वुद्धि उर धारी ॥ कोटि उपाय किहो बलबीरही । तिल भरि भुंमन टारी ॥ सभा वैठे मन मारी ॥ ३ ॥ सुमिर राम गुरु मात पिता हृदे । धनुषा करपे धारी ॥ पुस्करदास प्रभू तीन खंड किवो । सिया जेमाल गले डारी ॥ देव दुंदुभी वजारी ॥ ४ ॥

होरी खेलत वृज नंदलाल कँधाई ॥ टेक ॥ इतमें स्याम सखा संघ लीनो।मुरली अधर बजाई ॥ उतमें श्रीराधे सखियन संघ । ताल मृदंग वजाई॥हरखि हृदे हरी गुन गाई॥१॥ केसर रंग गुलाल लाल भरे । कर पिचकारी सोहाई ॥ भरि भरि झोरी झोंकत गोरी । स्याम सखा सुख छाई ॥ सोभा वरनी नहीं जाई॥ २ ॥ फागुन फाग रचो मनमोहन । सखिन भाग वडी पाई ॥ पुस्करदास आनंद नंदसुत । चिरंजीव जदुराई ॥ सदा संतन सुख पाई ॥ ३ ॥

होरी खेलत सुंदर स्याम किसोरी ॥ टेक ॥ इतमें सुंदर स्याम सखा लिवो । केसरको रंग घोरी ॥ भरि भरि कर कंचन पिचकारी । राधेके मुख छोरी ॥ लपटि गये अंग सुख शेरी ॥ १ ॥ सखिन समाज वृजराज जहाँ राजे । झांझ मुरचंग वजोरी ॥ निरतत गोरी स्याम किसोरी । आनंद धूम मचो री ॥ मानो मेघन घन घोरी ॥ २ ॥ अतिआनंद निरखी सुर गंधर्व । पुष्पन झरि वरखो री ॥ पुस्करदास आनंद नंदसुत । जीवन प्रान भमौरी ॥ ध्यान चरनोंमें लगोरी ॥ ३ ॥

होरी खेलत राम लखन जज्ञ जाई ॥ टेक ॥ राजा जनक जग भेजि पत्रिका । भूपन सब बोलाई ॥ जो कोई सिंभू सरासन तोरे । याको सिया सुख दाई ॥ चहूं दिस फिरत दोहाई ॥१ ॥ जुरे भूप गुनरूपके आगर । चढे वेवान अई ॥ कीनो बल छल उठे न धनुषा । वैंठे सभा मुरछाई ॥ लजित मुरख वात न आई ॥ २ ॥ सुंदर राम सुमिर गुरुचरनन । उठे सभा सोआई ॥ धनुष उठाय प्रभू करपर लीनो । तीन खंड किवो जाई ॥ सिया जेमाल पहिराई ॥ ३॥ होरी खेलन लागी सखिया । लाल गुलाल उडाई ॥ पुस्करदास सिया रघुवर सुख । घर घर बजत बधाई ॥ सुमन झरि देवन लाई ॥ ४ ॥

लंका पवनसुत खेलत होरी ॥ टेक ॥ कर जोरे ठाढो वीर पवनसुत । मात अरज सुनु मोरी ॥ लगे छुधा मोहि अज्ञा दीजे । बाग वाटिका फल तोरी ॥ वृक्ष सब देत मरोरी ॥ १ ॥ अछे कुमार महाभट जोधा । निसचर संघ लिवो री ॥ ताहि

वीर वाको गदन पछारे। और निसचर भागि गयौ री॥ दसन मुख खवर करो री॥ २॥ मेघनाथ सुत आनि पठाये। वांदुर जाय धरो री॥ब्रह्मफास गले डारि दिहो हे। बांधत पूछ मरोरी॥ वसन घृत तेलमें वोरी॥३॥ फूकि दीहो कंचन गढ लंका। निसचर जुत्थ जरोरी॥ पुस्करदास श्रीराम कृपासो। भभीषनको ग्रह वचो री॥ वामें रामनाम लिखो री॥ ४॥

श्रीअवधलाल संतन भेटारी ॥टेक॥ मोहिमें तोहिमें खर्ग खंभमें। यतनी वचन प्रहलाद पुकारी॥ खंभ फारी नरसिंघ रूप धरे। हरनाकुसको वोद्र विदारी॥ सदा भक्तन हितकारी॥ १॥ इंद्रहि कोप किवो वृजऊपर। प्रलेमेघ किवो भारी॥ ग्वाल बाल जदुनंदन टेरे। प्रभू नखपर गिरवर धारी॥ सदा भक्तन हितकारी॥ २॥ रिषियन कष्ट नेवारे करुनानिधि। दससुख मस्तक फारी॥ भक्त भभीषन हृदे लगाये। लंका किवो छत्रधारी॥ सदा भक्तन हितकारी॥ ३॥ सभा वीच द्रोपति पती राखे। दीनबंधु वनवारी॥पुस्करदास प्रभू पतितन तारन। रूप अनेक सँभारी॥सदा भक्तन हितकारी॥४॥

होरी खेलत सुंदर स्याम विहारी॥टेक॥ मोर मुकुट सिर स्यामके राजे। कानन कुंडल न्यारी॥ प्यारीके सिर चमकि चंद्रिका। कोटि चंद्र उजियारी॥ लगे सुंदर पिया प्यारी॥१॥ लाल गले वनमाल सोहावन। मुरलीसुर मोहे सारी॥ श्रीराधेके हार हृदे विच। राजे मुनिमन लाजेवारी॥ लगे सुंदर पिया प्यारी॥ २॥ रंग केसरीया जामजणितमणी। पीतांबर

पट जारी ॥ सारी सूहा प्यारी लगे प्रिया । नूपुर घूंघुर झनकारी ॥ लगे सुंदर पिया प्यारी ॥३॥ क्या वरनो सोभा सुखसागर । गुन अगर गिरधारी ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन । चरनकमल वलिहारी ॥ दीन पतितनको तारी ॥ ४ ॥

होरी काफी–सखी री मन मतवारो।मेरो केसे धरे जिया धीर ॥ टेक ॥ वृज तजि स्याम गये धाम द्वारिका ॥ खारीनदके तीर ॥ १ ॥ कुवजा सवत मेरो कंसकी दासी । स्याम वाके रहत सँभीर ॥ दिन नहीं चेन रात नहीं निद्रा । उर अंतरमें पीर ॥ २॥ कैसी जतन करूं मे सजनी । निठुर स्याम वेपीर॥ पुस्करदास स्याम बिनु देखे । धृग धृग जीवन सरीर ॥ ३ ॥

होरी–होरी खेलत आजू व्रजराज बिहारी ॥ टेक ॥ श्रीजमुनाके तीर भीरभैभारी । सखिन संघ पिया प्यारी ॥ चूंदर सारी मांग सँवारी । मोतिनकी लर न्यारी ॥ वनी सोभा अति प्यारी ॥ १॥ सुंदर स्याम सलोना री सजनी । मोर मुकुट सिर धारी ॥ छवि ललाट तिलक केसरके । कुंडलकी गति न्यारी॥ मुरली धरे अधर मुरारि ॥ २ ॥ पीतांबरकी कछनी काछे । वोढे वसन पटजारी ॥ कर पिचकारी मारी रंग राधेके । भीजि गई सुहा सारी ॥ हसत मुख दे दे तारी ॥ ३ ॥ मची कीच मगबीच कुंजनमें । श्रीराधे रंग झोके झारी ॥ पुस्करदास सुख कहा लगी वरनो । सेस सारदा हारी ॥ हरी भक्तन हितकारी ॥ ४ ॥

होरी सोरठ–होरी जनककिसोरी । संघ खेलत श्रीरघु-

वीर ॥ टेक ॥ कर कंचन पिचकारी भरि लीनो ॥ केसर रंग गंभीर ॥ १ ॥ उत सिया संघ सखिन भरे झोरी । झोंकत रंग अवीर ॥ मची हय कीच मगवीच दोउ दिस । वरषि सुमन झरि नीर ॥ २ ॥ गावत गुन धुनी सुनी स्रवननमें । जीवन करत सरीर॥ पुस्करदास आस चरननकी । प्रभू हरत सकल भौभीर ॥ ३ ॥

होरी—श्रीअंजनीके लाल गदनसो खेले होरी ॥ टेक ॥ कूदि गये रतनागर सागर । लंका जाई खडो री ॥ वाग उजारि लंकगढ जारी । सियाको सोक मिटो री॥ रामके चरन परो री ॥ १ ॥ सक्तीवान नेवारे लखनके । धवलागीर धरो री ॥ घोटि सर्जावन दिवो लखनमुख । वीर उठे हरखो री ॥ देव दुंदुभी वजो री ॥ २ ॥ पैठि पताल तोरि जमका दर । वैठे वदन छिपो री ॥ कोपे पवनकुमार मारि दुष्ट । ल्याये भुजन दोउ जोरी ॥ आनंद नहीं जात कहो री ॥ ३ ॥ लंका जीति भभीषन थापे । रामको राज दिवो री ॥ पुस्करदास आस रघुवरके । जीवन प्रान भयो री ॥ ध्यान चरनोंमें लगो री ॥ ४ ॥

मक्रमास माधो खेलत होरी ॥ टेक ॥ होत प्रात उठिके सुर नर मुनी । संगम जाये नहोरी ॥ पूजा ध्यान ज्ञान गुन गावे । सुमिरन नाम करो री ॥ वास वैकुंठ वसो री ॥१॥ संत समाज श्रीप्रागराजमें । निस दिन वास करो री॥ वडे वडे भूप रूपगुन आगर । दरसन आय करो री ॥ वास वैकुंठ करो री ॥२॥ स-

तासेत श्रीगंगा जमुना। माधो लहर करो री ॥ पुस्करदास दरसके देखे। कोटिन पाप भगो री॥ वास वैकुंठ बसो री॥३॥

सुनहुँ अरज रघुवीर हमारी ॥ टेक ॥ जबसे आस लगी चित्त चरनन। तन मन धन किवो वारी ॥ मांगू वर कर जोरे तुमसो। सुनहुं भक्त हितकारी॥ सदा पतितन तुम तारी॥१॥ ना चाहुँ सुख संपति माया। नहीं कुटुम परवारी ॥ पुस्करदासकी याही विनती। भजन भक्त करो भारी॥ दूजो नहीं आस हमारी ॥ २ ॥

होरी सोरठ—श्रीराधे रंग भरे होरी खेलत श्रीनंदलाल॥ ॥ टेक ॥ भरि पिचकारी हरी मारी मुख राधे ॥ टूटि गये मोतीमाल॥ १ ॥ झँमकि झटकि पट पकडो राधे। वांधे झोरिन गुलाल॥ लाल लाडिली लपटि झपटि गये। उरझि गये वनमाल ॥२॥ वाजत ताल मृदंग झाँझ डफ। तार तमूरा ताल॥ पुस्करदास विचित्र विंदावन। धंनि धंनि गोपी ग्वाल ॥ ३ ॥

होरी—सुमिर सनेही सियावर साचो ॥ टेक॥ नाभीकवलसे ब्रह्मा उपजे। रचन सिरर्टको राचो ॥ त्रिगुन गुन सबही घटभीतर। ज्ञान गुनन गति नाचो॥ जपत नही लागे आचो ॥१॥ सिउ सनकादि यादि नारद मुनी। धुनि करी वेदन वाचो ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन। ध्यान चरनको टाँचो॥ क्षीर मथि माखन खाँचो ॥ २ ॥

श्रीराम जनक पुर खेलत होरी ॥ टेक ॥ कर कंचन पिचकारी कुअर लिये। केसरको रंग घोरी॥ सियाजू संघ लिये

मूठी गुलाले । भरि भरि मारत झोरी ॥ नग्रविच धूम मचो री ॥ १ ॥ वाजत डफ औ चंग मुरचंगे । ढोल नगाडेकी जोडी ॥ गावत राग सोहाग सुंदरी । रंग वरसे चहुं वोरी ॥ घोर मुख मीजत रोरी ॥ २ ॥ भीज गई तनवसन दोउ दिस । पीतांवर पट छोरी ॥ खेलत होरी करत ठिठोरी । सियारामकी जोरी ॥ काम छवि लेत वहोरी ॥ ३ ॥ रचो हय फाग भाग सव पुरजन । जीवन जन्म किवो री ॥ पुस्करदास आस रघुवरके । पूरन कार्ज करो री ॥ ध्यान चरनोंमें लगो री॥४॥

यक सुंदर स्याम रचो व्रज होरी ॥ टेक ॥ मोर मुकुटकी लटकि सीसपर । मुरली अधर धरो री ॥गले लालके माल वेजंती । मोतिन लर लटकि रहो री ॥ रतनमणि माणिक जडो री ॥ १ ॥ कर लीनो कंचन पिचकारी । केसर रंग भरो री ॥ वोरी वरजोरी रंग राधे । हार हृदेकी तोरी ॥ हँसत वृपभान किसोरी ॥२॥ वाजत ताल मृदंग तमूरा॥और नगाडेकी जोडी ॥ नाचत गोरी हँसत किसोरी । प्रेममगन भैं भोरी ॥ काम छवि लेत वहोरी ॥ ३ ॥ उडत गुलाल लाल गुन गावे । सुर सुमनन वरषो री ॥ पुस्करदास स्याम सुख संतन । अंत न पावत कोई री ॥ सरन गये पतित तरो री ॥ ४ ॥

आली नंदलाल आजु मोपे रंग डारी ॥ टेक ॥ मे जल जमुना भरन जात थी । पहिरे कुसुम रंग सारी ॥ भरि पिचकारी केसर रंग मारी । भीजि गई तन सारी ॥ मधुर हसि श्रीगिरधारी ॥ १ ॥ लाख कहूँ मानत नही येको । ऐसे नि-

ठुर वनवारी ॥ पुस्करदास सखिन मनमोहन । तन मन धन किवो वारी ॥ ध्यान चरननमें डारी ॥ २ ॥

खेलत राजा रनछोड राय होरी ॥ टेक ॥ सेस महेस गणेस सारदा । नारद बीन बजो री ॥ इंद्र कुबेर वरुन गति नाचे । सारदकी मति भोरी ॥ हरषि गन गावत वोरी ॥ १ ॥ जो जन भावे सो तन पावे । पूरन आस करो री ॥ ब्रह्मा वेद मुखनसो भाषे । जस कीरत चहुँ वोरी॥नाम रटि छाय रहो री ॥२॥धू प्रहलाद याद किवो गनिका । अजामील तरो री ॥ सूर कवीर दास तुलसीके । पूरन भाग बडो री ॥ नामको कीरत करो री॥३॥ धंन धंन जे न नाम जपो मन । जीवन जन्म भयो री ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे । जुग जुग नाम जपो री ॥ ध्यान चरननको करो री ॥ ४ ॥

सिया राम लखन वनवाससे आये ॥ टेक ॥ रावन मारि असुर संघारे । देवनबंद छोडाये ॥ चढे वेवानन श्रीरघुनंदन । अवधपुरी छबि छाये ॥ श्रीहनुमत चौर ढुराये ॥ १ ॥ देखि वेवन अवध नर नारी । देखनको सब धाये॥भैया भरथ सत्रुघन संध लिये । मात मुदितमन भाये ॥ हरषि हिया हृदे लगाये ॥ २ ॥ वैठे राम राजगद्दीपर । तीन लोक सुख पाये ॥ ब्रह्मा सिउ जाको जस गावत । सारद पार न पाये ॥ नारद मुनि वीन वजाये ॥ ३ ॥ धंन धंन भाग अवध नर नारी । त्रिभुअनको सुख पाये ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन । राम सिया गुन गाये ॥ ध्यान चरनोंमें लगाये ॥ ४ ॥

होरी सोरठ–होरी आनंद भरो री खेलत श्रीडाकोर ॥ टेक ॥ भक्तनभीर पीर हरो पलमें ॥ भृकुटी नयन मरोर ॥१॥ सिउ सनकादि यादि ब्रह्मादिक । नाम रटत कर जोर ॥ सेवत योगि जती संन्यासी । जपत तपत गिरखोर ॥ २ ॥ दुष्टविदारन संतन कारन । धावत चारों वोर ॥ पुस्करदास आस चरननकी । गावों जस गुन तोर ॥ ३ ॥

होरी–होरी खेलत कृष्णकुँअर राधे गोरी ॥ टेक ॥ वनठन आई सकल वृजवनिता । श्रीराधे संघ लिवो री ॥ आय मिले वंसीवट कुंजन । होरीकी धूम मचो री ॥ नयननही सूझि परो री ॥ १ ॥ सखिन साजि अंग रंग अभूषन । झाँझ मृदंग वजो री ॥ नाचत गोरी हसत किसोरी । मुरली धुनि अधर वजो री ॥ आनंद नही जात कहो री ॥ २ ॥ चढे बेवान गगन सुर निरखे । पुष्पनकी वरषो री ॥ पुस्करदास सदा सुख वृजमें । चिरंजीव दोउ जोरी ॥ काम छवि लेत वहोरी ॥ ३ ॥

होरी सोरठ–येरी हरी जन हरीगुन गावो । श्रीगुरुचरनन चित लावो ॥ टेक ॥ श्रीगुरुचरन सेवत सिउ ब्रह्मा ॥ ध्यान कपट चढावो ॥ १ ॥ निस दिन ध्यान चरन चित राखो । मुख भाषो सो पावो ॥ पुस्करदास तरत कुल दोउ दिस । नेह सकल जग छावो ॥ २ ॥

होरी–रामनामको गुन सुख साँचो ॥ टेक ॥ याको यपत सुर सेस ब्रह्मादिक । वेद मुखनसो वाँचो ॥ करत ग

अपछरावो किन्नर। नारद गुन गति नाचो ॥ क्षीर मथि माखन खाँचो ॥ १ ॥ यो जन हरीको नाम विसारे। जीवन मरन दोउ काँचो ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे। जपत न लागे आंचो ॥ याको त्रिभुवन हय राचो ॥ २ ॥

आली नंदलाल मोहि आन ठगो री ॥ टेक ॥ मे जल जमुना भरन जात थी। औचक आन मिलो री ॥ दौडि झपटि झटपट फोरी गागर। मोतिनकी लर तोरी ॥ चूंदरी रंगमें भिजो री ॥ १ ॥ लाख कहूँ मानत नही येको। ऐसे निठुर ठगवोरी॥ पुस्करदास सवे सुखमोहन। प्रेमविवस भै भोरी ॥ ध्यान चरनोंमें लगो री ॥ २ ॥

परनारी हरी लाये पियाजियाको दुख पाये ॥ टेक ॥ प्रथम दूत यक वॉदर आये। बाग बाटि काढ हाये ॥ अछे कुमारको पटकि भुंमिमें। निश्चर दलि मलि डाये ॥ फूंकि गढ लंका जाये ॥ १ ॥ वडे वडे वीर नरधीर लखन संघ। सेस सहस फन छाये ॥ मेघनाथसुत वो हति कीनो। तेरो काल अब आये ॥ पिया तोहि नेक न भाये ॥ २ ॥ वो तो हय पिया त्रिभुवन करता। तासे वैर वढाये ॥ पुस्करदास श्रीराम सरन विनू। रावन राज गँवाये ॥ सरन तकि भक्त जन आये ॥ ३ ॥

होरी सोरठ—सुनु आली वनमाली। मेरे अंगमें रंग घाली ॥ टेक ॥ जमुनातीर सघन वन कुंजन ॥ झुकी कदम डाली ॥ १ ॥ सखासंग वहुरंग भंग पिये। देत अनोखी गाली ॥ लाख कहूँ मानत नही येको। जदुवर वडो जाली ॥ २ ॥ वा-

जत ढोल धमारनकी धुनि। सुनि मुनिमन हाली ॥ पुस्कर-
दास प्रभु रसिक सिरोमन। तन मन धन पाली ॥ ३ ॥

होरी–होरी खेलत राम सिया सुखदाई ॥ टेक ॥ जन-
ककिसोरी घोरी रंग केसर। सखियन साज वजाई ॥ गा-
वत राग मदनमन जागे। नारद वीन सोहाई ॥ नभे हरी-
को गुन गाई ॥ १ ॥ भरि पिचकारी गुलाल रंग मारे। स्याम
गौर दोउ भाई ॥ भीजि गई पट पीत पितांवर। अविर
गुलाल उडाई ॥ सोभा सुंदर सुखदाई ॥ २ ॥ अतिआनंद
दसरथके नंदन। सोभा जनकपुर छाई ॥ पुस्करदास सदा
सुख संतन। सेसजी अंत न पाई॥सारदा सदा गुन गाई॥३॥

होरी एक तीताला–वृजमें आजु हो रही होरी। गोपी
ग्वाल संघ ख्याल रचो हे। मोहना मनको हरो री ॥ टेक॥
उडत गुलाल लाल भे दोउ दिस॥ रंगको कींच मचो री॥१॥
वाजत डफ करताल तमूरा ॥ नाचत गनगुन गोरी ॥ २ ॥
झोंकत झमकि रमकि पिया प्यारी ॥ घोर मलत मुख रो-
री ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस चरननकी ॥ राधे कृष्णकी
जोरी ॥ ४ ॥

तीताला–होरी खेलन जनपुर चलो री । श्रीराम ल-
खन सुत अवधलालके। मुनि संघ गवन कियो री॥टेक॥
वनठनके सखियन संघ सीता ॥ झोरिन अवीर लियो री
॥ १ ॥ वाजत ताल मृदंग चंगधुनि ॥ सव्द सुरन भें भोरी
॥ २ ॥ भरि भरि केसर रंग रंगीली ॥ झोकत सिया पिया

वोरी ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ जीवन जन्म भयो री ॥ ४ ॥

होरी–पवनतने कीनो वल भारी ॥ टेक ॥ करि अतुलित वल सागर नांघे । लंकामाहिं पधारी ॥ बाग उजारी असुर संघारे । अछेकुमार पछारी ॥ वीर गढ लंका जारी ॥ १ ॥ करि अतुलित बल ल्याये धवलागिर । मूल सजीवन सारी ॥ सक्तीवान नेवारे लखनके । उठे वीर हरषारी ॥ श्रीरघुवर हृदे लगारी ॥ २ ॥ करिके बल पल गये पताले । महिरावन वधि डारी ॥ ल्याये भुजनपर वीर कुअर दोउ । रुधिरन वहत पनारी ॥ वीरवो कटकमें आरी ॥ ३ ॥ दुरजन दलि मलि गर्द मिलाये । पाये वडाई सारी ॥ पुस्करदास आस रघुवरके । तन मन धन किवो वारी ॥ ध्यान चरनोंमें डारी ॥ ४ ॥

होरी धमार–आजु हो रही होरी बृजमें धूम आजु हो रही ॥ टेक ॥ रंग भरे रसिया सुख वसिया ॥ पिये घोटि भंग मग रहे झूंम ॥ १ ॥ दौडि झपट पट राधे पकडो ॥ उमडि घुमडि स्यामहि सुख चूंम ॥ २ ॥ उडत गुलाल लाल भे दोउ दिस ॥ हो हो होरी खेलत घूंम ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्याम सुख सवही ॥ चरनकमलरज लपटि रूंम ॥ ४ ॥

वृंदावन रहस रचो रसिया वृंदावन ॥ टेक ॥ साजि सजि साजे जुरी समाजे ॥ मोहन मुख बाजे वसिया ॥ १ ॥ सूहा सारी प्यारी पहिरे ॥ भूषन अंग सखी कसिया ॥ २ ॥ मंडर

घेरि घुमारि चहुं दिससो ॥ बाजत ताल हरषि हंसिया ॥ ३ ॥ पुस्करदास सखिन सुख मोहन ॥ ध्यान चरणपर मन धसिया ॥ ४ ॥

होरी खेलो नाम रटि छाय रहो होरी खेलो ॥ टेक ॥ नाम रटो मन ध्रू प्रहलादे ॥ अचल नाम वो पाइ रहो ॥ १ ॥ उलटा नाम जपत जग जाने ॥ वाल्मीक ब्रह्म जाय लहो ॥ २ ॥ अंका बंका सघन कसाई ॥ नामदेव पद पाय चहो ॥ ३ ॥ पुस्करदास चहो सुख जियाको ॥ उँच नीच मन सबकी सहो ॥ ४ ॥

होरी खेले नंदजीके सॉवरो हो होरी खेले ॥ टेक ॥ इतमें स्याम सखा साजि ठाढे ॥ उत सखियन संघ राधे धावरो हो ॥ १ ॥ जुरी भीर गंभीर जमुनतट ॥ वटवंसीके छाँवरो हो ॥ ॥ २ ॥ धूम धमार चहूं दिस हो रही ॥ प्यारी लपटि अंग रावरो हो ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा ॥ चित चरनकमलमें वावरो हो ॥ ४ ॥

होरी खेलत स्याम सुंदर राधे होरी खेले ॥ टेक ॥ स्याम सखा लीनो पिचकारी ॥ झोरिनमें गुलाल बांधे ॥ १ ॥ सखिन साथ साजिके पिया प्यारी ॥ झारिन रंग धरे कांधे ॥ २ ॥ बाजत ढोल धमारनकी धुनि ॥ सुनिके स्रवनन सिउ जागे ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा ॥ निरखि रूप सब भे भागे ॥ ४ ॥

होरी खेलत लाल लाडिली संघ ॥ टेक ॥ होरीपे स्याम भरे कंचन पिचकारी ॥ श्रीराधे भरे झरिनमें रंग ॥ १ ॥ लाल

उडावत लाल गुलाले ॥ भीजि गईं राधेके अंग ॥ २ ॥ बाजत ढोल धमार धुनि गावे ॥ भरि भरि लोटे घोंटे भंग ॥३॥पुस्करदास मची वृज होरी ॥ खोरिन खोरी बहि गये रंग ॥ ४ ॥

होरी खेलत लखन राम रसिया ॥ टेक ॥ इतमें राम लखन सजि ठाढो ॥ उतमें सिया संघ सखिया ॥ १ ॥ भरि भरि राम कनक पिचकारी ॥ मारत ताकि सियाके अँखिया ॥ २ ॥ दौडि झपटि पट पकडो पीताम्बर ॥ मुख मीजत सिया हिया हसिया ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ राम लखन सिया मन बसिया ॥ ४ ॥

बृज कुंजन स्याम खेलत होरी वृज कुंजन ॥ टेक ॥ इतमें स्याम रंग भरे केसर ॥ उत राधे भरे गुलाल झोरी ॥ १ ॥ श्रीराधे माधोके मुखपर ॥ कर कपोल मले रोरी ॥ २ ॥ सुंदर स्याम सखा संघ लीनो ॥ पिचकारीसों अंग वोरी ॥३॥ पुस्करदास स्याम सुख सवही ॥ दुष्टन दलि मलि मुख तोरी ॥ ४ ॥

वृज धूम मचाई रंग रसिया वृज धूम ॥ टेक ॥ बाजत ताल मृदंगनकी धुनि ॥ मोहन मुख बाजत वसिया ॥ १ ॥ लाल गुलाल डारि हरिके मुख ॥ श्रीराधे हर्पि हिया हसिया ॥ २ ॥ हो हो होरी सव सुर गावें ॥ ध्यान चरनपर मन धसिया ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा ॥ श्रीराधे भूपन अंग कसिया ॥ ४ ॥

होरी खेलत रामसियाके संघ ॥ टेक ॥लाल गुलाल लाल

भरि मारे ॥ भीजि गई सब सिआके अंग॥१॥ भरि भरि लाल गुलाल लिये लछिमन ॥ भरि भरि लोटे घोंटे भंग ॥२॥ मची कीच मगवीच जनकपुर ॥ वाजे डफ झांझे मुरचंग ॥ ३ ॥ पुस्करदास सुख राम सियावर॥ सदा नहाये नृमल गंग॥४॥

होरी खेलत राम लखन वनमें ॥ टेक ॥ कागा चोंच चरन हति भागे ॥ प्रभू मारो वान लगे तनमें ॥ १ ॥ आय मरीच नीच मृग वनिके ॥ प्रभू कपट जान लीनो मनमें ॥ २ ॥ वन वन धावत प्रभू मन भावत ॥ प्रानवान लीनो छनमें॥३॥ तृन धरि वोट सँघारे वालहि॥ लगे वान वाके तनमें॥४॥वीस भुजा दस सीस सँघारे॥ राज भभीषन दिवो धनमें॥५॥पुस्करदास प्रभु पतितन तारन ॥ अवध सोहावनमें जनमें ॥ ६ ॥

होरी खेले राम सरजूतटपे होरी खेले ॥टेक॥ संघ सखा सब रंग रंगीले॥ वोलत होरी हो हो जे ॥१॥ भरे रंग चतुरंग चहूं दिस ॥ पिये घोंटि भंग झोरिन झटपे ॥ २ ॥ मची कीच मगवीच अवधपुर ॥ जुगल जुगल रंगसो लटपे ॥३ ॥पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ गुन गावत गोविंद निरभे ॥ ४ ॥

होरी खेले व्रजरसिया रंग भरे होरी खेले ॥ टेक ॥ हरे रंग भरे नीर जमुनके ॥ हरे वृक्षकदंमके लत खरे ॥ १ ॥ हरे हरे रंग मुकुटकी सोभा ॥ लोभा मन जेहि द्रिष्ट परे ॥ २ ॥ हरे हरे वाँसकी वाजे वँसुरिया ॥ सुर नर मुनिको मन वो हरे॥३॥ पुस्करदास श्रीरंग राधिका ॥ कृष्णचरनपर ध्यान करे ॥४॥

होरी समाप्त.

मल्लार–भजो मन सिया पिया सुंदरताई ॥ टेक ॥ जेहि सुमिरे सिउ सेस ब्रह्मादिक ॥ मुनि जन ध्यान लगाई ॥ १ ॥ भजे भषीषन धू प्रहलादे । रामनाम रटि लाई ॥ चारों पदारथ दिवो कृपानिधि । जस कीरत जग छाई ॥ २ ॥ वालमीक भजि ब्रह्मरूप भे । जोतिमें जोति समाई ॥ महाभारथ भरदूल नाम रटि । प्रभू घंटा तोरि बचाई ॥ ३ ॥ भजे भक्त योगीजन जाको । ताको प्रभू हृदे लगाई ॥ पुस्करदास प्रभू पतितन तारो । नेक न लाज लजाई ॥ ४ ॥

सुख मन राम स्याम गुन गावो ॥टेक ॥ जेहि सुमिरे भौसागर उतरो ॥ चौरासी नही जावो ॥ १ ॥ राम स्याम सुमिरत सुख बहुविधि । कोटिन विघुन नसावो ॥ सेस शंभु ब्रह्मादिक भावे । वेदविदित जस गावो ॥ २ ॥ राम सुमिरि सिया हिया भरि भेंटे । चरनन ध्यान लगावो ॥ सुंदर स्याम सुमिरि श्रीराधे । सखिन सखा संघ धावो ॥ ३ ॥ विनगुन गने बने नही तेरो । गृह गृह धक्का खावो ॥ पुस्करदासकी याही विनती । औसर चूकि पछितावो ॥ ४ ॥

धरो मन रामकृष्णको ध्यान ॥ टेक ॥ आये रितु पावस सुख संतो ॥ करो गोविंद गुन ज्ञान ॥ १ ॥ संदर स्याम घटा घन घेरे । सुमिरत दादुर स्यान ॥ बूंद न वरसे वियाविन जिया तरसे । भये अचानक भ्यान ॥ २ ॥ याको ध्यान ज्ञान गुन वाढे । होत वडाई मान ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे । करु अपने मुख व्यान ॥ ३ ॥

सखी स्यामविन भावे नही स्याम रंग घटा ॥ टेक ॥जब रे वदरिया वहि देस पियाके॥ जहँ सौतिनके संघ छटा ॥१॥ ना पिया विनु पावस रितु भावे। सूनी सेज हय अटा॥ उमडि उमडि घनघटा घटापर। विजुली चमकत चटा॥ २ ॥ निस दिन व्याकुल रहत रसिकविन। जयसे मीन जलहटा ॥पुस्करदासकी सुरत विसारे। नगर नंदके नटा ॥ ३ ॥

हे ऊधोजी स्याम विना वृज फीको॥टेक॥ रमाकि झमाकि झुकि आये वदरीया॥ पिया विन लगे न नीको॥ १॥ रागरहित विन स्याम सुंदरके। ना जानो यह जीको ॥ पुस्करदास कहे कर जोरे। जो मोहि मिलावे पीको ॥ २ ॥

अंतरजामी कृष्ण द्वारिकामें छाये॥ टेक॥ जवसे छाडे श्रीवृंदावन॥ अधिक सनेह सुखाये॥ १ ॥ नृमल नीर त्यागि जमुनाको। सागर खार सोहाये ॥ ना सुख गोपी ग्वाल संघ तेरे। कुवजा सव तवे लभाये ॥ २॥ ना मुरलीधर अधर वजावे। ना पंचम सुर गावे ॥ ना छवि छाये रहस मंडलको। कवा कठोर संघ जाये॥ ३ ॥ रितु पावस पिया विन नहीं भावे। उमडि उमडि झरि लाये॥ पुस्कारदास स्याम विन देखे। काहु न वयन सोहाये॥ ४॥

श्रीअंजनीकुमार अतुल वल भारी॥ टेक ॥ हरो पीर वलवीर सियाको॥ करमें मुद्रिका डारी॥१॥ पीर हरो पलमें लछिमनके। सक्तीवान नेवारी॥ ल्याये धवलागीर सजीवन। उठे वीर हरषारी॥ २॥ पीर हरो रघुवीरको पलमें। पैठि प-

ताले जारी ॥ महिरावन वधि लाये कुअर दोउ । रुधिरन वह-त पनारी ॥ ३ ॥ जव जव कष्ट परे रघुवरपर । अतुलित वल कर धारी ॥ पुस्करदास आस रघुवरके । ध्यान चरनपर डारी ॥ ४ ॥

भजु मन राघेवर सुंदर स्याम ॥ टेक ॥ याके यपेसे कटे दुख दारुन ॥ पूरन होत सब काम ॥ १ ॥ जपत जपत जम-राज डरे तोहि । पावो पदारथ धाम ॥ ध्यान धरत सुर नर मुनि गंधर्व । ब्रह्मा वेद मुख हाम ॥ २ ॥ चतुर चेत चितरित पावसमे । गये वृषमरित धाम ॥ पुस्करदास स्यामकी सो-भा । याको अनंतहि नाम ॥ ३ ॥

राजकुअर वनवासको जाये ॥ टेक ॥ स्याम गौर दोउ रूप मनोहर ॥ नारी संघ सोहाये ॥ १ ॥ रिमिकि झिमिकि झर वूंदन वरसे । कारि घटा झुकि आये ॥ पवन चले पुरवाई सननननन । योति कला चहुं छाये ॥ २ ॥ तरवंर पात्र कोपिन करे प्रभू । कंद मूल फल खाये ॥ कुस आसन विस्राम राम करे । पितावचन मन लाये ॥ ३ ॥ निसचरकुल संघारि मारि प्रभू । रिषियन कष्ट मिटाये ॥ पुस्करदास अवध सुख संतन । मरत मीन जल पाये ॥ ४ ॥

पियाविन भावे नहीं वुंद फुहारे ॥ टेक ॥ कारे कारे वद-रा उमडि चहूं दिस ॥ विजुली चमकत न्यारे ॥ १ ॥ दूजे दामिन दमकि चमकि रहे । झनननन झींगुरवा झारे ॥ तीजे पवन चले पुरवाई । अँचला उडि उडि जारे ॥ २ ॥ वाही समे

रटि लाये पपीहा। पिया पिया करत पुकारे॥ पुस्करदास पिया विन देखे। धृग धृग जीवन सारे॥ ३॥

मन अभिमानी तू मानत नाहीं ॥टेक॥ फिरत काल दे ताल अचानक॥ तोहि झपटि धरि खाँहीं॥ १॥ पछितै हो क्या पै हो पाछे। मूरख जन्म गँवाही॥ जहाँ जैहो जहाँ धक्का खैहो। कोउ ना पकडत वाँहीं॥ २॥ धन जोवन जन पाय खटकि रहो। भटकि रहे जगमाहीं॥ पुस्करदास चहो सुख जियाको। ध्यान चरनमें चाहीं॥ ३॥

पियाविन वरसत उमडि वदरीया ॥टेक॥ पियाबिन पावस मोहि नहीं भावे॥ कौन वोढावे चदरीया॥१॥मोर सोर करे दामिन दमके। चमके विजुली उजरिया॥ पिया परदेस री छाये सजनी। वो नहीं जाने कदरीया ॥ २॥ निस दिन व्याकुल कल नहीं घरी पल। वल वुद्धि सारी सदरीया॥ पुस्करदास पियाके विछुरे। को नहीं करत अदरीया ॥ ३॥

पावस रितु पियाविन नहीं भावे॥ टेक॥ येक तो बदवा बूंदन वरसे॥ दूजे घन घहरावे॥१॥दामिन दमके विजुली चमके। दादुर सोर सुनावे॥ पापी रटत पपीहा पिया पिया। पिया अजहुं नहीं आवे॥ २॥ केहि विधि धीर धरों तन सजनी। कोउ नहीं खवर ले जावे॥ पुस्करदास जो पिया-को मिला दे। मनमानिक धन पावे॥ ३॥

स्याम सुंदर गिरधर नख धारो ॥ टेक॥ इंद्रहि किवो कोप वृजऊपर॥ मूसलधार जल डारो॥ १॥ उमडि उमडि

घन घटा घटापर । झुकी रेन अँधियारो ॥ विजुली चमकत अति जिया डरपत । गोपी ग्वाल पुकारो ॥ २ ॥ मोर मुकुट मुख मुरली अधर धरे । करमें लकुट प्रचारो ॥ गले माल बनमाल सोहावे । पीतांबर पट वारो ॥ ३ ॥ जब जब कष्ट परो हरि जनपर । पलमें पीर नेवारो ॥ पुस्करदास सदा सुख वृजमें । तन मन धन किवो वारो ॥ ४ ॥

हरी हितकारी वूणन नही पाये ॥ टेक ॥ गज औ ग्राह लडे जलभीतर ॥ प्रभू पाव पियादे धाये ॥ १ ॥ इंद्रहि कोप किवो वृजऊपर । जल मूसलधार गिराये॥ ग्वाल बाल वृजराज पुकारे । प्रभू गोवरधन नख छाये ॥ २ ॥ जहाँ जहाँ कष्ट परो भक्तनपर । स्रवन सुनत तहँ आये ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन । सुर नर मुनि जस गाये ॥ ३ ॥

श्रीजगदीस जनकपुर जाये॥ टेक॥ श्रीजगदीस दसो दिस स्वामी ॥ वलि भद्र संघ लाये ॥ १ ॥ रतन जडित रथ वैठे वनठन । भूषन अंग सोहाये॥ बाजत ताल मृदंग तमूरा । चरनकमल जस गाये॥ २ ॥ अतिआनंद नित नई पुरीमें । गृह गृह मंगल छाये ॥ गगन चढे सुर निरखन लागे । पुष्पनकी वरिसाये ॥ ३ ॥ संतसमाज महराज जहँ राजे । लोचन लाहू पाये ॥ पुस्करदास आस चरननकी । प्रभू भक्तनके हित धाये ॥ ४ ॥

रथ चढि सोभित श्रीवृजराज ॥ टेक ॥ कंचनमणिमय बनो सिंघासन ॥ कोटि भान छवि लाज ॥ १ ॥ मोर मुकुटके

लटकी सीसपर। मुरली अधर धुनि बाज॥गले माल कौस्तुभ माणि सोभा। अंग अभूषन छाज ॥ २॥ संख चक्र गदा पदुम विराजे। दुष्टनके मुख गाज ॥ पुस्करदास आस रघुवरके। प्रभु राखो लोककी लाज॥ ३॥

हरीबिन कौन लगावे बेडा पार ॥ टेक ॥ टूटी नैया नीर अगम भरो॥ सूझे वार न पार ॥ १ ॥ बेगुनकी नैया पार न लागे। औघट घाट करार॥ नाम गुन रखा गाडो नाव बिच। वोझा उतारो भौजार ॥ २ ॥ अजहूँ चेत चतुर चित चातुर। वारम वार पुकार॥ पुस्करदास चहो सुख जियाको। ध्यान चरनपर डार ॥ ३ ॥

रिमि झिमि वरसे उमडि घटा कारे ॥ टेक ॥ पियाबिन पावस मोहिं नहीं भावे ॥ चमकत बिजुली उँजारे ॥ १ ॥ झननननन झींगुरवा बोले। दामिन दमके न्यारे॥ पापी पपीहा जियाको जलावे । पिया पिया करत पुकारे ॥ २ ॥तजिके देस विदेस वेलभि रहे। नेक लाज नही आरे॥ पुस्करदास पियाके विछुरे। तन मन धन किवो वारे ॥ ३ ॥

सदा सुख जीवन प्यारी पिया स्याम ॥ टेक ॥ याको रूप छबि भूप भुलाने ॥ लजित भये सुख काम ॥ १ ॥ संत भक्तहितकारी परम हय। पतित पठावत धाम॥ याको जपत सुर सेस ब्रह्मादिक। वेद पढत सुख हाम ॥ २ ॥ ये मन तन धरि हरीहित लागो। नूमल करो यह जाम ॥ पुस्करदास समुझ मन मेरो। तेरो लगे नहीं दाम ॥ ३ ॥

सुमिरो सुख मन सिआ राम अधार ॥ टेक ॥ जेहि सुमिरे सुख होत चहूं दिस ॥ उतरि जाहु भौपार ॥ १ ॥ याको जपत सिउ सेस ब्रह्मादिक । जस गुन वेद पुकार ॥ याको योति अपार जक्तमें । चौदा भुअन अपार ॥ २ ॥ हरो पीर भौभीर भक्तके । करि अनेक औतार ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन । ध्यान चरनपर डार ॥ ३ ॥

विहरत हरी धरे स्याम सरीर ॥ टेक ॥ हरे हरे भुंम लतानन हरे हरे ॥ हरे जमुनाको नीर ॥ १ ॥ हरे हरे मोर मुकुटकी सोभा । हरे जडे नग पन्ना हीर ॥ हरे हरे वासकी बंसी अधर धरे । हरे गोपिन तन पीर ॥२॥ नीलंमर पीतांवर सोहे । मोहे मुनिन मन वीर ॥ संख चक्र गदा पदुम विराजे । राजे राधिका तीर ॥ ३ ॥ उमडि घटा झुकि आये अटापर । रिमिकि झिमिकि झरे नीर॥ पुस्करदास आनंद सदा ब्रज । गावत गुन गंभीर ॥ ४ ॥

रथ चढि सोभित सुंदर सिया राम ॥ टेक ॥ कंचनमणिमय रतन सिंघासन ॥ मोतिन झालर झाम ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजे । राजे जानकी वाम ॥ याको सुरत सुर नर मुनि मोहे । सोहे कोटि मुख काम ॥ २ ॥ पीतांवरकी काछे कछनी । वोढे वसंती जाम ॥ सूहा सारी सिया सँभारी । रतनमणिन बहु दाम ॥ ३ ॥ झुकी घटा अति अटा छटापर सुंदर मूरत स्याम ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन । प्रभू तारे पतितको जाम ॥ ४ ॥

चलो देखो आली झूलत झूला घनस्याम ॥ टेक ॥ कंच-नमनिमय खंभ खडो हय ॥ सोहे अंग राधिका वाम ॥ १ ॥ पटुली पाट ठाठ सखियनकी। गावत जस गुन ग्राम॥ बाजत ताल निहाल गाल हँसि। फाँसि कोटिन मुख काम ॥ २॥ रिमि झिमि वरसत घटा छटापर। विंदावन सुख धाम॥पुस्करदास सदा सुख संतन। प्रभु तारे पतितको जाम॥ ३ ॥

झूलन मल्लार समाप्त.

गजल रेखता—श्रीराम लछिमन जानकी। जय जय बो-लो हनुमानकी ॥ टेक ॥ रामको हय नाम अमृत। पियो हिया भरि पानकी ॥ जानकी हय जक्तमाता । जोति को-टिन भानकी ॥ १ ॥ लक्षिमन लख विधुन टारे। देत जिया सुख आनकी ॥ वीर हनुमत हते दुष्टन। अतुल बल बल-वानकी ॥ २ ॥ याके सुमिरे सेस कंपे । जम डरे बोवान-की ॥ ध्यान संकर लाय ब्रह्मा। वेदधुनि करे गानकी ॥ ३ ॥ याकी महिमा तीन पुरमें । चार युग परमानकी ॥ दास पुस्कर आस चरनन। राखो सरने प्रानकी ॥ ४ ॥

रामको गुन गाय ले । नहिं पाछे तु पछितायगा ॥ टेक ॥ चेत चोला नृमल काया। प्रेम प्याला खायगा ॥ छोड झूँठी जाल जगको । लोग सुरपुर जायगा ॥ १ ॥ ज्ञान होकर भय अज्ञाने । जमको डंडा पायगा ॥ दास पु-स्कर मान कहेना । नाहीं ठोकर खायगा ॥ २ ॥

ननन झींगुरवा बोले। झुकी रयन अँधियारी ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन। चरनकमल बलिहारी ॥ ४ ॥

झूलन दादरा—श्रीराधे स्याम झूले कदमतर झूलन ॥ टेक ॥ कंचन खंभ कसे डोर रेसम ॥नृमलनीर कालिंद्रीके कूलन ॥ १ ॥ हरे लतानन लगे सोहावन ॥ सुंदर पुष्प कदमके फूलन ॥ २ ॥ अतिआनंद करे नंदनंदन ॥ सखियन देत हुलसि हिया हूलन ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा ॥ ध्यान चरनपर मेरो मन भूलन ॥ ४ ॥

सरजूतीर राम सिया झूलन ॥ टेक ॥ गडे हिंडोला अगर चंदनको ॥ रेसम डोर कसे हय थूलन ॥ १ ॥ हरे हरे लता पता झुकी चहुं दिस ॥ वेला गुलाब नेवारी फूलन ॥२॥ झमकि रमकि झुकि झुकि सब सखियन ॥ झोंकत मंद मंद दे हूलन ॥ ३ ॥ पुस्करदास निरखि सिया रघुवर ॥ ध्यान चरनमें तन मन भूलन ॥ ४ ॥

झूलन मल्लार—हिंडोले झुकि झूले नंदकिसोर ॥ टेक ॥ रतन मणिनमय जडित हिंडोला ॥ रेसम कसी हय डोर ॥१॥ झुकि लता अति सघन प्रफुल्लित। कालिंद्रीके कोर ॥ बोलत मोर सोर करे दामिन। उठत सब्द घन घोर ॥ २ ॥ घेरे घटा रिमि झिमि झरि वरसे। पवन चले झकझोर ॥ भरि अनुराग सब सखिन झुलावे। झोंकत करि करि जोर ॥ ३ ॥ सुंदर स्याम सुंदरी राधा। निरखु नयनकी कोर ॥ पुस्करदास सदा सुख व्रजमें। ध्यान चरनकी वोर ॥ ४ ॥

चलो देखो आली झूलत झूला घनस्याम ॥ टेक ॥ कंचनमनिमय खंभ खडो हय ॥ सोहे अंग राधिका वाम ॥ १ ॥ पटुली पाट ठाठ सखियनकी । गावत जस गुन ग्राम॥ बाजत ताल निहाल गाल हँसि । फँसि कोटिन सुख काम ॥ २॥ रिमि झिमि वरसत घटा छटापर। बिंदावन सुख धाम॥पुस्करदास सदा सुख संतन । प्रभु तारे पतितको जाम ॥ ३ ॥

झूलन मल्लार समाप्त.

गजल रेखता—श्रीराम लछिमन जानकी । जय जय बोलो हनुमानकी ॥ टेक ॥ रामको हय नाम अमृत । पियो हिया भरि पानकी ॥ जानकी हय जक्तमाता । जोति कोटिन भानकी ॥ १ ॥ लक्षिमन लख विधुन टारे । देत जिया सुख आनकी ॥ वीर हनुमत हते दुष्टन । अतुल बल बलवानकी ॥ २ ॥ याके सुमिरे सेस कंपे । जम डरे वोवानकी ॥ ध्यान संकर लाय ब्रह्मा । वेदधुनि करे गानकी ॥ ३ ॥ याकी महिमा तीन पुरमें । चार युग परमानकी ॥ दास पुस्कर आस चरनन । राखो सरने प्रानकी ॥ ४ ॥

रामको गुन गाय ले । नहिं पाछे तु पछितायगा ॥ टेक ॥ चेत चोला नृमल काया। प्रेम प्याला खायगा ॥ छोड झूँठी जाल जगको । लोग सुरपुर जायगा ॥ १ ॥ ज्ञान होकर भय अज्ञाने । जमको डंडा पायगा ॥ दास पुस्कर मान कहेना । नाहीं ठोकर खायगा ॥ २ ॥

गजल–कहिये अरज रघुवीरसे । रनधीर हनुमतवीर हो ॥ टेक ॥ चाहों चरन रघुनाथको पद । यादकर भुलो नहीं ॥ यह विन मेरे पीर तनमें । हौं सदा आधीर हो ॥१॥ चहों न दुनियां दौलते । जस मान गुन औ ज्ञान हो ॥ कहे दास पुस्कर आस रघुवर । चरनपद गंभीर हो ॥ २ ॥

गजल रेखता–दसरथके नंदन चारों भैया । झूलते झूलन खणे ॥ टेक ॥ खंभ कंचनके सजे । मानिक जवाहिरसो जणे ॥ डोर पचरंग कसे रेसम । सरजू किनारेपे गणे ॥ १ ॥ उमणि घेरे घटा कारी । चमकते विजुली तणे ॥ लागे फुहारे बुंद बरसन । पवन तो झोंकत झणे ॥ २ ॥ हरे भुंमिका लागे सोहावन । हरे लताननमें खणे॥राग गावत हय मल्लारे । राग रागिन हय अणे ॥ ३ ॥ राम लक्षिमन भरथ सत्रुहन । भूप जगमें वो वणे ॥ दास पुस्कर आस रघुवर । ध्यान चरनोंमें लणे ॥ ४ ॥

ठाढे बन बंसी बजावे । स्याम सुंदर रावरो ॥ टेक ॥ ठाढो हय जमुनाके निकटपे । सीतल कदमकी छावरो ॥ फूकि मारी तान मोहन । लागे तनमें घावरो ॥ १ ॥ सुनिके स्रवन बंसीकी धुनिसे । सिंभु सुरभे बावरो ॥ व्याकुल फिरे बन गोप गोपिन । बयठि जमना नावरो ॥ २ ॥ होय होय देवने पसु वो पंच्छी । क्षीर ना मुख खावरो ॥ दास पुस्कर आस जदुवर । ध्यान चरनन धावरो ॥ ३ ॥

बने क्या अजायब झाँकिये । फूलो मे झाकी स्यामकी टेक ॥ सीसपर सोभा मुकुटकी । नग लगे बहु दामकी ॥ ‍डले कानोंमें झलके । मानो योती भानकी ॥ १ ॥ बीन वंसी ‍रि अधरपे । फूँकि मारी तानकी ॥ माल तो वनमाल राजे । ‍ग केसरिया जामकी ॥ २ ॥ करमें सोहे संख चक्र वो । गदा ‍दुमानकी ॥ कॉछनी सोहे पीतांवर । नूपुर धूँघुर झॉमकी ॥ ३ ॥ स्यॉंवली मूरतकी सोभा । मुख कोटि मोहे कामकी ॥ दास पुस्कर आस चरनन । राखो सरने प्रानकी ॥ ४ ॥

सखी जाहुं जमुनानीरको । खडो तीर हय नंदके लला ॥ ॥ टेक ॥ स्यावली मूरत सोहावन । सूरते लागे भला ॥ नयनकी भृकुटी कमाने । देखते मनको छला ॥ १ ॥ मोरको छवि हय मुकुटकी । कुंडले कानो डला ॥ नसिका वेसरकी सोभा । वनमाल तो गरमे हला ॥२॥ बीन वंसी धरि अधरपे । सोहते सोरो कला ॥ दास पुस्कर सदासुख वृज । नाम कृष्णे वो भला ॥ ३ ॥

स्यामविन मोको न भावे । यै सखी कारी घटा ॥ टेक ॥ नीर वरसे नयनसे । छाये छवीले वो छटा ॥ डरपती बिजुली‑के चंमसे । सेज सूनी हय अटा ॥ १ ॥ स्याम बिछुरन कीन जबसे । सीसपर भारी जटा ॥ दास पुस्कर आस जदुवर । ध्यान चरनोंमें डटा ॥ २ ॥

सखी जाहु जमुनानीरको॥नंदलाल मगमें वो खडा॥टेक॥ हय नही काहूकी वसमें । भूप त्रिभुअनमें वडा ॥ मानत कहे‑

ना न काहू। फोरत सबकी घडा ॥ १ ॥ दान माखन खात गृह गृह। लूटत मगमें अडा॥ढीठ ठोठा नंदको। वो हय वडा दिलको कडा ॥ २ ॥ सीसपर सोभा मुकुटकी। कुंडले नग-सो जडा ॥ बीन वंसी धरि अधर। गले माल मोतिनको पडा ॥ ३ ॥अंगमें धारे अभूषन। पीतपट खटके पडा ॥ दास पुस्कर आस जदुवर। ध्यान चरनोंमें गडा ॥ ४ ॥

क्रीट मुकुटवाले। तेहारे जुलफन कारे बाल॥ टेक ॥ कुं-डले कानोंमें झलके। जडे नग हीरा लाल॥ पुष्पहार हृदे विराजे। मन मोहे मोतीमाल ॥१॥ काँछनी काछे पीतांवर। वोढे जरीको साल॥ धनुस बान करमें सँवारे। फारे वैरीगाल ॥ २ ॥ स्याँवली सूरत सोहावन। मधुर भावन चाल॥ निकट सरजू नीर अँचवत। फिरत दय दय ताल॥ ३ ॥ राम लक्षि-मन भरथ सत्रुहन। कालहूंके काल॥ दास पुस्कर आस रघुवर। चित चरनोंमें निहाल ॥ ४ ॥

वंसी बजाके स्याँवरो। दिलको देवाना वो किया ॥ टेक॥ जात थी जल भरन जमुना। मगमें ठाढो वो पिया ॥ तान मारी वान नयनन। लागते मेरे हिया ॥ १ ॥ स्याँवली मूरत सोहावन। तिलक केसरको दिया॥ दास पुस्कर निरखि मूरत। नयन भरि लाहू लिया॥ २ ॥

गजल रेखता समाप्त.

बेहाग–मूढ मन भजि ले तू हरीनाम ॥ टेक ॥ याको नाम कामपद पूरण ॥ लगे न दमरी दाम ॥ १ ॥ चेतन चोला चेत भोर भय । घरी पल छिन विस्राम ॥ पुस्करदास आस रहो हरीके । नहीं दूजोसे काम ॥ २ ॥

सयनन नींद नयनन भरी ॥ टेक ॥ रचो मंदिर कणि कमणि मय ॥ पलँग पौंढे हरी ॥ १ ॥ याको सुमिरत सेस निस दिन । सहस मुख उच्चरी ॥ ध्यान लाये सदा शंभू । वेद ब्रह्मा करी ॥ २ ॥ रूप येक अनंत माया । भक्तके हित करी ॥ दास पुस्कर आस चरनन । पतित कोटिन तरी ॥ ३ ॥

मंदिर सेज सुंदर कसी ॥ टेक ॥ प्रानप्यारी श्रीरंग राधा ॥ वाम अंगहि वसी ॥ १ ॥ अति विचित्र वहु चित्र लागे । अंग भूषन लसी ॥ दास पुस्कर सयन स्वामी । ध्यान चरनन धसी ॥ २ ॥

सुंदर नीद भरे घनस्याम ॥ टेक ॥ छाय मुखपर काम कोटिन ॥ अंग राधे वाम ॥ १ ॥ जडे मणिमय मंदिरोंमें । सेज सुख आराम ॥ दास पुस्कर आस चरनन । वैकुंठ सोभा धाम ॥ २ ॥

सखी जदुनंदन विना नहीं चयन ॥ टेक ॥ विछुरन किये दिये दुख दारुन ॥ नहिं वोले कोउ वयन ॥ १ ॥ दिन दिन रोग बढे घरी पल छिन । कैसे कटे दिन रयन ॥ विन हरी पीर हरे को तनकी । नहिं जावे कोउ लेन ॥ २ ॥ सुंदर स्याम सलोना सजनी । चितवन वाके नयन ॥ पुस्करदास स्याम विन देखे । नहि भावे मोहि सयन ॥ ३ ॥

हरे भौभीर सबे रघुवीर ॥ टेक ॥ येहि सुमिरे सुख होत चहूं दिस ॥ मिटे सकल तनपीर ॥ १ ॥ निस दिन जपत सेस सिउ ब्रह्मा । नृमल नाम पिये नीर ॥ पुस्करदास प्रभू धाम अवधपुर । विहरत सरजू तीर ॥ २ ॥

वसो मेरे नयनन नंदकिसोर ॥ टेक ॥ निस दिन ध्यान चरन चित राखों ॥ प्रभू विनै करों कर जोर ॥ १ ॥ कोटिन पतित जान प्रभू मोहीं । दया दीनकी वोर ॥ पुस्करदासकी आस तुमारो । प्रभू पतितन तारो निहोर ॥ २ ॥

हर्पि हिया हित करू नंद दुलारे ॥ टेक ॥ राखो सदा चरनोंको चाकर ॥ कोटिन पतित तू तारे ॥ १ ॥ जेहि चरनों सेवत सिउ ब्रह्मा । सेस सहसफन सारे ॥ पुस्करदासको जान पतित प्रभू । अबकी वार उवारे ॥ २ ॥

सखी हरीविन को पीर हरे ॥ टेक ॥ अब तो जाय प्रभू छाय द्वारिका ॥ कुवजा संघ सयन करे ॥ १ ॥ यह दुख दारुन दीन जदुनंदन । भयसे भवन भरे ॥ पुस्करदास विन स्याम नहीं सुख । कैसे को धीर धरे ॥ २ ॥

नींद भरे अवध धाम सिया राम ॥ टेक ॥ अति विचित्र छवि रचो मंदिर ॥ लटकि मोतिन झाम ॥ १ ॥ सेज सुंदर परम सोभा । जडे मणिमय काम ॥ सुमिर सेस महेस ब्रह्मा । वेद सुख करे हाम ॥ २ ॥ सदा सुमिरन करत योगी । जपत युग युग श्राम ॥ दास पुस्कर सेई चरनन । तरत पतितन जाम ॥ ३ ॥

सखी स्यावरो विन परे नहीं चेन ॥ टेक ॥ रात देवस पल छिन सुख नहीं ॥ असुअन झरि लाये नयन ॥ १ ॥ विछुरन करी हरी गये द्वारिका । किवो कुवजा संघ सयन ॥ पुस्करदास प्रभू सुधि ना विसारो । आय सुनावो वयन ॥ २ ॥

वीर अंजनीसुत हनुमत भारी ॥ टेक ॥ सियासुधि लाये ढहाये गढ लंका ॥ बाग बाटिका उजारी ॥ १ ॥ करि अतुलित बल गये पताले । महिरावन वधि डारी ॥ लाये भुजनपर वीर कुअर दोउ । रुधिरन वहत पनारी ॥ २ ॥ सक्तीवान नेवारे लखनके । धवलागीर उपारी ॥ घोंटि सजीवन लखन मुख दीनो । वीर उठे हरखारी ॥ ३ ॥ निसचर मारि कटक संघारे । श्रीरामके अज्ञाकारी ॥ पुस्करदास धंन अंजनीनंदन । प्रभूके चरन चित धारी ॥ ४ ॥

हरिको नाम जपो मन लाई ॥ टेक ॥ जेहि सुमिरे भौसागर उतरो ॥ अगम नीर भरो जाई ॥ १ ॥ सुमिरत सेस सिंभु गणनायक । ब्रह्मा वेद सोहाई ॥ वीन वजावत गावत नारद । सारद पार न पाई ॥ २ ॥ करत योग योगी गिरकंदर । कंद मूल फल खाई ॥ गाये गुन गोविंदको नृभे । चारों पदारथ पाई ॥ ३ ॥ भये भक्त अनेक जक्तमें । कहले कहू समुझाई ॥ पुस्करदास आस करो प्रभुकी । चरनकवल सुखदाई ॥ ४ ॥

जपो मन गुन गोविंदको नाम ॥ टेक ॥ जाहि जपे सुख होत जियामें ॥ पूरन होत सव काम ॥ १ ॥ सदा रहे ना चेतन चोला । पाया मुक्षको जाम ॥ हरिको नाम दाम नहीं लागे ।

इत मुक्तफल धाम ॥ २॥ यो जन जाने ताहि प्रभू माने। यामें नहीं कछु काम ॥ दास पुस्कर सुमिर अवही। ना परे कछु काम ॥ ३ ॥

वेहाग समात.

ध्रुपत–सुमिरो मन विद्याके निधान। ज्ञानगुनसागर आगर गणपती ॥टेक॥ सकल कार्ज सुभ करन। त्रिविध ताप तनकी हरन ॥ सरन जाय लाय हृदे। भूलि ये मन मती॥१॥ लाल वदन मदनमूरत। सोभा सूरत कही न जाय॥ दास पुस्कर चरन अधीन। माता वाकी सती ॥ २ ॥

प्रगटे श्रीरामचंद्र दसरथके कुमार। प्यार कौसलाधीस ईस त्रिभुवनधनी ॥ टेक॥ अवधभुंम परम धाम। संतन सुख सदा विस्राम ॥ नृमल नीर निकट वहे। श्रीसरजू मनी ॥ १ ॥ मुनिन यज्ञ सुफल किवो। गौतम नारि गती दिहो ॥ सिंभु धनुस करमें धार। तीन खंड बनी ॥ २ ॥ पितावचन बन सिधार। रिषिन कष्टको नेवार ॥ दुष्टन दलि मलि विदार। तान बान हनी ॥ ३ ॥ क्रीट मुकुट अति उद। धनुस बान करमें धार॥ पुस्करदास चरन अधीन। दीन दोख ना गनी ॥ ४ ॥

निरखि रूप मन हो निहाल। सुंदर आनंदकंद नंदलाल ॥टेक॥ केसरको तिलक भाल। मानो रवि प्रातकाल॥ अधर धुनि बंसी बजाय। लाय संघ गोपी ग्वाल लाल ॥ १ ॥जाहि सुमिरे सेस ब्रह्मा। सदा संभु बजाय गाल ॥दास पुस्कर चरन अधीन। दीन पतित तारिये लाल ॥ २ ॥

सुनिये स्त्रवनन नंदके किसोर। दारिद्र दुख हरो मोर भो-
र सुनिये ॥ टेक ॥ सूदामा दारिद्र घोर ।चिते भृगुटी कटाक्ष
कोर ॥ ग्रह कंचन दीनो हय जोर। भोर सुनिये ॥ १ ॥ काटे
कष्ट प्रभू महाघोर। दुष्टन दलि मले विदोर ॥ किवो सुख संत
वोर। भोर सुनिये ॥ २ ॥ सेस सिउ ब्रह्मादि सेवे। प्रेमप्याला
पिये घोर ॥ दास पुस्कर चरन अधीन । दीनाहित राखो
निहोर ॥ ३ ॥

संसार सागर नाम नौका। नृगुनगुन गडि उतरि जा
भौपार॥सं०॥टेक॥जाको नाम अधार कीनो। सेस सिउ ब्रह्मा
पुकार ॥ ज्ञान गुन गणपती सुमिरे। हरे तनकी सकल भार
॥सं०॥१॥चतुर चित चेतो लबार। आवन नही बार वार ॥
दास पुस्कर चरन अधीन । सुनिये मन वार बार ॥सं०॥२॥

पुष्प वेवान चढे। श्रीरामचंद्र अवधके प्रान प्यारे। कौसि-
लाधीस मनभावत आवत ॥ टेक ॥ रिपिन कष्टको नेवार ।
असुरन दलि मलि विदार ॥ प्यार करत भक्तन जन। हृदय
हरखि लावत ॥ आवत० ॥ १ ॥ सियासहित अनुजसंघ ।
भूषन सव अंग अंग ॥ दास पुस्कर चरन अधीन ।श्रीहनुमत
वीर चॅवर ढोरत ॥ आवत० ॥ २ ॥

सुनिये स्त्रवनन। सिभु दयाल होयके कृपाल। कर दे नि-
हाल दानी दयाल ॥ टेक ॥ तेरो जटनबीच सोभित श्रीगंग ।
उठत तरंग बहु रंग रंग॥माथे चंद्र भाल। त्रिनेत्र लाल लाल
॥ १ ॥ हसत गाल गले मुंडमाल। कर धरि त्रिसूल दूजे डम-

रू हाल ॥ वोढे सिंघ खाल । सोहे अभूषन काल व्याल ॥२।
केलास परवत रसाल । लिये गौरीसंघ कर गरमें डाल ।
दास पुस्कर चरन अधीन । दीन पतित तारिये कृपाल ॥३।

ध्रुपद समाप्त.

सारीगम ठुमरी–संतो अवध सोहाये सिया राम राम याकी सुरत सुर नर मुनि मोहे । कोटिन मोहे सुख काम काम ॥ टेक ॥ नृमल नीर निकट वहे सरजू ॥ तारे पतितको याम चाम ॥ १ ॥ नृप दसरथके छैला छबीले ॥ जनकसुतावे वाम वाम ॥ २ ॥ सिउ ब्रह्मा याको ध्यान लगावे ॥ वेद पटे सुख हाम हाम ॥ ३ ॥ पुस्करदास सदा सुख संतन ॥ जपत नाम युग ग्राम ग्राम ॥ ४ ॥

संतो भजि ले श्रीरघुवीर धीर । पीर हरो तन मनकी तेरे। सुंदर स्याम सरीर वीर ॥ टेक ॥ अवध भुंम सुखधाम सोहा- वन ॥ सरजू निकट वहे नृमल नीर ॥ १ ॥ भक्तहेत चित चहुँ दिस धावे ॥ असुरन सावे वडे वीर वीर ॥ २ ॥ सिउ ब्रह्मा मुनियन याको सेवे ॥ गुन गावे गंभीर वीर ॥ ३ ॥ पुस्करदास आस मति छाडो ॥ रहो ध्यान चरनमें सदा मीर ॥ ४ ॥

सो आली री निरखि रामको नयन । स्याँवली सूरत मो- हनी मूरत । बोलत कोकिल वयन ॥ टेक ॥ याको सेस सिउ ब्रह्मा सेवे ॥ प्रभू धाम पतितको दयन ॥ १ ॥ बिन देखे जिया कलन परत हय ॥ घरी पल छिन नही चयन॥२॥पुस्करदास सदा सुख सुमिरे ॥ राम सिया अये लेन ॥ ३ ॥

माई वंसीवाला प्रान लोभावे री। गावे सब्द सुरन तान
तननननननन। रहस रसिक मन भावे री॥ टेक॥ मोर मु-
कुटकी लटकि सीसपर॥ मुरली अधर बजावे री॥ १॥गले
माल वनमाल लालके॥ मोतिन लर लटकावे री॥२॥ पीतां-
बरकी काछे कछनी ॥ नूपुर घूँघुर बजावे री॥ ३॥ पुस्कर-
दास स्याम रसिक सिरोमन॥ गोपिन कंठ लगावे री॥ ४॥

माई मदनमोहन मन लीनो री। कीनो जादू जदुनंदन न-
यनन। बंसी बजाय बस कीनो री॥ टेक॥ मय जल जमुना
भरन जात रही॥ मारग मिलो प्रवीनो री॥ १॥ लाख कहूँ
मानत नही मोहन॥ लपटि झपटि पट छीनो री॥ २॥ पु-
स्करदास स्याम व्रजजीवन॥ ध्यान चरनपर दीनो री॥३॥

जदुनंदन नंद दुलारे। प्यारे रहत सुत नंदजसोदाके।
भक्तनके भय टारे॥ टेक॥ गर्भ देवकी प्रगटे नरहरी॥ त्रि-
भुअनके रखवारे॥ १॥ संख चक्र गदा पदुम बिराजे॥ वै-
रिनको सुख फारे॥ २॥ वन वन धावत धेन चरावत॥मुर-
ली अधर सँभारे॥ ३॥ पुस्करदास प्रभू पतितन पावन॥
दोख न येक विचारे॥ ४॥

सुमिर मन गजानंद सुभकारी। संघ नारि रिद्ध सिध
सोहाये। मूँसाकी असवारी॥ टेक॥ प्रथम सुमिरि हरी
जस गुन गावो॥ चार पदारथ सारी॥ १॥ येकदंत याके
मुखकी सोभा॥ चार भुजा अत्रधारी॥ २॥ याहि भजे
सुख होत चहूँ दिस॥ ज्ञान प्रकास उजारी॥ ३॥ पुस्क-
रदास आस चरननकी॥ वार वार बलिहारी॥४॥

षटशास्त्र पुकारे ॥ चारों वेद कियो सार ॥ २ ॥ रकार- कार प्रहलाद पुकारे ॥ कोटि विघुन दियो टार ॥ ३ ॥ रकार मकार भरदूल पुकारे ॥ घंटा तोरि महि डार ॥ ४ ॥ पुस्कर दास रामके सरने ॥ कोटिन पतितन तार ॥ ५ ॥

मन भजि ले पवनकुमार प्यार। अंजनीके लाला अतुलित बलवाला। श्रीरामचरन चित धार प्यार॥ टेक ॥ प्रगट होत रविरथ जाय ग्रासे ॥ देवन करत पुकार प्यार ॥ १ ॥ अतुलित बल करि सियासुधि लाये ॥ सक्ति लखनको, नेवार प्यार ॥ २ ॥ पैठि पताल मारि अहिरावन ॥ लाये भुजन दो- उ कुअर वार ॥ ३ ॥ लाल वदन कर गदा बिराजे ॥ दुष्टनको मुख फार प्यार ॥ ४ ॥ पुस्करदास सदा सुख समिरे ॥ कोटिन विघुन नेवार प्यार ॥ ५ ॥

पुस्करदासकृत
भजनसागर
समाप्त.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
'ल

पाई मन लीनो मेरो नंददुलारो री। प्यारो लगे वाकी
वली सुरतिया। वाकी लटक चाल न्यारो री॥ टेक॥
जल जमुना भरन जात रहीं॥ ढीठ लँगण मग ठाढो
॥ १ ॥ मोर मुकुट मुख मुरली अधर धरे॥ घूंघर वार
को कारो री॥ २ ॥ गरे वयजंती माल विराजे॥ पीतां-
: पट वारो री॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा॥ तन
न धन किवो वारो री॥ ४ ॥

मन वस किवो नंदकुमार प्यार। वो डारि गरे कर पी-
म प्यारे। त्रिभुअनके रखवार प्यार॥ टेक॥ स्यावली मूर-
मनोहर सूरत॥ चितवनमें छबि वार वार॥ १ ॥ अ-
र धरे मनमोहन मुरली॥ कीनो मन मतवार प्यार॥ २ ॥
पुस्करदास स्याम वृजजीवन॥ दुष्टन दलि मलि किवो
ार॥ ३ ॥

आली वनमाली गाली दीनो वरजोरी रे। तोरी वरजोरी
ोरी हार हृदयकी। नरमी कलैया मरोरी रे॥ टेक॥ मय
जमुना भरन जात रही॥ गगरी पटकि झट फोरी
ाख कहूं मानत नहीं येको॥ ऐसे निठुर ठगवो
पुस्करदास प्रभू रसिकसिरोमणि॥ मे ध्यान
॥ ३ ॥

ले रकार मकार। हकार हंकार तजो
भौपार॥ टेक॥ रकार मकार
ो योति अपार॥ १ ॥ रकार मकार

भजो मन हनुमत महाबलकारे। पवनकुमार प्यार र[illegible] वरके। सब विधि काजै सँभारे ॥ टेक ॥ सियासुधि ल[illegible] लंका जराये ॥ वाग वाटिका उजारे ॥ १ ॥ लाये सजीव[illegible] सहित धवलागिर ॥ लक्षिमनप्रान उवारे ॥ २ ॥ पैठि पंत[illegible] ल तोरि यमका दर ॥ लाये भुजन दोउ वारे ॥ ३ ॥ पुस्क[illegible] रदास धंन अंजनीनंदन ॥ रामचरन चित धारे ॥ ४ ॥

मन भजि ले अवधकुमार प्यार। वारंवार नर तन नहीं पैहो। जीती वाजी काहे हारे प्यार ॥ टेक ॥ नृप दसरथ[illegible] के कुअर लाडिले ॥ त्रिभुवनके रखवार प्यार ॥ १ ॥ राम लक्षिमन भरथ सत्रघुन ॥ धनुस बान कर धार प्यार ॥ २ ॥ गौतम नारि तारि त्रिभुअनधनी ॥ विस्वामित्र यज्ञ सुफ[illegible] सार ॥ ३ ॥ कठिन कठोर सिंभु धनु तोरे ॥ सिया जयमा[illegible] गरे डारे प्यार ॥ ४ ॥ पिता बचन वन गौन सिधारे ॥ दससुख मस्तक फारे प्यार ॥ ५ ॥ पुस्करदास सदा सु- ख संतन ॥ भक्तनके हितकार प्यार ॥ ६ ॥

मन वस किवो जुगलकिसोर मोर। याको जपत सि[illegible] सेस ब्रह्मादिक। ध्यान धरत मुनि सकल भोर ॥ टेक मोर मुकुटकी लटकि सीसपर ॥ मस्तक हीरा जडे वडे जोर ॥ १ ॥ गरे मणि मोतिन माल लालके ॥ भृगुटी चितव[illegible] कटाक्षकोर ॥ २ ॥ संख चक्र गदा पदुम विराजे ॥ रा[illegible] राधिका वाम वोर ॥ ३ ॥ पुस्करदास प्रभू मोहनी मूरत वैरिनको सुख याही तोर ॥ ४ ॥

ाई मन लीनो मेरो नंददुलारो री । प्यारो लगे वाकी
ाली सुरतिया । वाकी लटक चाल न्यारो री ॥ टेक ॥
ाल जमुना भरन जात रहीं ॥ ढीठ लँगण मग ठाढो
। १ ॥ मोर मुकुट मुख मुरली अधर धरे ॥ घूंघर वार
ो कारो री ॥ २ ॥ गरे वयजंती माल विराजे ॥ पीतां-
पट वारो री ॥ ३ ॥ पुस्करदास स्यामकी सोभा ॥ तन
धन किवो वारो री ॥ ४ ॥

मन वस किवो नंदकुमार प्यार । वो डारि गरे कर पी-
म प्यारे । त्रिभुअनके रखवार प्यार ॥ टेक ॥ स्यावली मूर-
मनोहर सूरत ॥ चितवनमें छबि वार वार ॥ १ ॥ अ-
र धरे मनमोहन मुरली ॥ कीनो मन मतवार प्यार ॥ २ ॥
ुस्करदास स्याम वृजजीवन ॥ दुष्टन दलि मलि किवो
ार ॥ ३ ॥

आली वनमाली गाली दीनो वरजोरी रे । तोरी वरजोरी
ोरी हार हृदयकी । नरमी कलैया मरोरी रे ॥ टेक ॥ मय
जल जमुना भरन जात रही ॥ गगरी पटकि झट फोरी
रे ॥ १ ॥ लाख कहूं मानत नहीं येको ॥ ऐसे निठुर ठगवो
री रे ॥ २ ॥ पुस्करदास प्रभू रसिकसिरोमणि ॥ मे ध्यान
रन चित वोरी रे ॥ ३ ॥

सो मेरो मन भजि ले रकार मकार । हकार हंकार तजो
तन मनसो । उतरि जाउ भौपार ॥ टेक ॥ रकार मकार
ा त्रिभुअनमें ॥ याको योति अपार ॥ १ ॥ रकार मकार

षटशास्त्र पुकारे ॥ चारों वेद कियो सार ॥ २ ॥ रकारं-म कार प्रहलाद पुकारे ॥ कोटि विघुन दियो टार ॥ ३ ॥ रकार मकार भरदूल पुकारे ॥ घंटा तोरि महि डार ॥ ४ ॥ पुस्कर दास रामके सरने ॥ कोटिन पतितन तार ॥ ५ ॥

मन भजि ले पवनकुमार प्यार । अंजनीके लाला अतुलि त वलवाला । श्रीरामचरन चित धार प्यार ॥ टेक ॥ प्रग होत रविरथ जाय ग्रासे ॥ देवन करत पुकार प्यार ॥ १ अतुलित बल करि सियासुधि लाये ॥ सक्ति लखनको, नेवा प्यार ॥ २ ॥ पैठि पताल मारि अहिरावन ॥ लाये भुजन दं उ कुअर वार ॥ ३ ॥ लाल वदन कर गदा विराजे ॥ दुष्टनक मुख फार प्यार ॥ ४ ॥ पुस्करदास सदा सुख समिरे ॥ कोटिन विघुन नेवार प्यार ॥ ५ ॥

पुस्करदासकृत
भजनसागर
समाप्त.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
'लक्ष्मीवेंकटेश्वर' छापाखाना
कल्याण-मुंबई.